सप्तकाण्ड रामायण ।

खालसा कृत अर्थात् श्रीश्रीईश्वर गुरु नानकजीउ

एवं श्रीश्रीईश्वर गुरुगोविन्द

सिंहजीउके उपासक

श्रीमदनगोपाल सिंह विरचित

और प्रकाशित ।

स्वंप्रकाशक ग्रन्थ ।

द्वितीय संस्करण ।

सन् १९११ ई० ।

कलकत्ता

नं० ४०२ अपर चीतपुर रोड "गोवि.

श्रीसतीश चन्द्र राय

द्वारा मुद्रितम् ।

[मूल्य २) रुपया वी० पी० अलग ।

उक्त ग्रन्थ कलकत्ता नं० ७३।१ तुलावाजार (काटन ष्ट्रीट) का मन्दिर श्रीश्रीईश्वर राधागोविन्दजीउके नाममें रजिष्टरी कराय दिया है। जिसके मनेजर वाबू रामगोपाल सिंह हैं। विना हमारी आज्ञा इस पुस्तका दूसरा कोई न छापे। और जिसको उक्त पुस्तक का जरूरत हो सो उपरोक्त ठिकानामें वाबू रामगोपाल सिंहजीके पास पत्र लिखनेसे मिलेगो मूल्य २) वी० पी० और पार्सलका खर्च अलग लगेगा।

निवेदन।

इसे ग्रन्थमो संख्या एकसे ले उन पञ्चास पर्य्यन्त जिस प्रकारकी है सो नीचे लिखा जाता है जिनके समझमें नहीं आवे सो नीचेके लिखे मुताविक संख्या देखके अर्थ लगायलेयंगे और एक एकके संख्यामें एक एक देवतेका तथा देवके अङ्गका एवं उनके पदार्थका संस्कृतमें जितना जितना नाम है सब उसी संख्यामो लिखा गया है जैसे चन्द्र निशाकर ग्लौ इत्यादि जितने नाम चन्द्रके हैं सो सब एकके सख्यामो लिखा गया है इसी प्रकारसे हर संख्यामो समझ लेना।

अथ संख्या वर्णन।

अथ एकका संख्या॥ चन्द्र भूमि आत्मा श्रीगणेशजीका दन्त सूर्य्यके रथका चक्र शुक्राचार्य्यका नेत्र॥ अथद्विका सख्या॥ हस्त पक्ष॥ अथ तीनका संख्या॥ अग्नि काल नयन शूल ज्वर॥ अथ चारका संख्या॥ ब्रह्माके मुख वेद वर्ण युग आश्रम अथ पाचका संख्या॥ पाण्डव शिवके मुख वाण भूत॥ अथ षष्टका संख्या॥ ऋतु कार्त्तिकके मुख राग॥ अथ सप्तका संख्या॥ लोक द्वीप वार सिन्धु॥ अथ अष्टका संख्या॥ वसु व्याकरण योगके अङ्ग॥ अथ नव वा संख्या॥ रस निधि ग्रह द्वार खण्ड॥ अथ दशका संख्या॥ दोष दिशा अवतार॥ अथ एकादशका संख्या॥ शिव॥ अथ द्वादशका संख्या सूर्य्य वर्ष॥ अथ पञ्चदशका सख्या॥ तिथि॥ अथ षोड़शका संख्या॥ कला॥ अथ सप्तविंशति संख्या॥ नक्षत्र॥ अथ तीशका संख्या मास॥ अथ ऊनपचासका संख्या॥ पवन॥ इति संख्या।

॥ एक ओंकार सत्य गुरुप्रसाद ॥

श्रीवाहिगुरुजीकीफते है ।

अथ सूचिपत्र ।

बालकाण्ड ।

विषय | पत्राङ्क

विषय पत्राङ्क

अयोध्या काण्ड ।

विषय

अरण्य काण्ड ।

किष्किन्धा काण्ड ।

सुन्दरा काण्ड।

लङ्का काण्ड ।

उत्तराकाण्ड ।

श्रीवाहिगुरूजीकी

अथ श्रीबालकाण्डम् लिख्यते ॥

श्लोक ।

सर्व्वव्यापीविश्वरूपी ध्याताध्येयश्चदुर्लभः ॥
गुणत्रय विभक्ताच बाहीगुरोनमोस्तुते ॥ १ ॥ ब्रह्मा
विष्णु सुर श्रेष्ठौ लेखा खिल महेश्वरः ॥
तीर्थंरूपी महादेवः वाही गुरोनमोस्तुते ॥ २ ॥ ग्रहा-
नाञ्च महायोगी देवानामपि दुर्लभ ॥ अव्यक्तो
व्यक्तरूपोच वाही गुरो नमोस्तुते ॥ ३ ॥ दैत्यकालं
देवपालं दीननाथं निरञ्जनं ॥ वेदमध्ये बीजमन्त्रं
वाहीगुरोनमोस्तुते ॥४॥ देवदेवं महादेवं ॥ परमेशं
परन्तपं ॥ चिन्तितं पूजितंदेवं वाही गुरोनमोस्तुते॥५॥
कवित ॥ चक्र और चिह्न नहीं वर्ण और जाति नहीं
वेश रङ्गरूप नहीं ब्रह्मतत्त्व जानिये ॥ तात और मात
नहीं जन्म और पात नहीं ग्राम सङ्ग साथ नहीं सर्व
ठौर ठानिये ॥ नारि और पुंस नहीं क्लीव और त्याग

नहीं नामचन्द्ररूप नहीं विश्वरूप मा ॥ २० ॥ सुर
और कर्म्म नहीं तन्त्र और मन्त्र नहीं भृत्य अर्थ कान्त
नहीं सर्व शक्ति जानिये ॥६॥ अवैयात ॥ एही सर्वमे
रहै गुरु आपयसवसे निआरा है ॥ इन्होंको ध्यानसे
चितमे जगत इन्साफशारा है ॥७॥ इनकोयाद जो
करते नहीं फिर जन्मवे पाते ॥ खितावे मुक्ति कावे
पायकेदर ज्योति मिलजाते ॥ ८ ॥ बना करके सुरा-
सुरको लड़ाया खेतमो भारी ॥ तमाशा आप भी देखा
दिखाया खल्ककोशारी ॥९॥ किशीकोशाह कर देते
किशीका तख्तलि लेते ॥ किशीको नर्कमो खेते
किशीको स्वर्ग देदेते ॥ १० ॥ अैशा जानशाचाशाहवे
करजोड़ी अपना ॥ करता वन्दगीहर दम उनकी
नामको जपना ॥११॥ शायेर सिंहकी विन्ती गुरूजो
कीजिये पूरा ॥ वर्फेजेनाम अपनेके मेरेपापोंकोकर
चूरा ॥१२॥ विद्युनमाला छन्द ॥ बन्दौं मन्त्रं बीजं
आदं ॥ जो तारे प्राणीकोनादं ॥ वन्दोमन्त्रंदाता पायं ॥
जोपापोंको देते ढायं ॥१३॥ वन्दो देवी चण्डी मातं ॥
जो दैत्यों कोकीनापातं ॥ वन्दो स्वामी सोमैशेषं ॥
जोदीना सिंहोंकोवेशं ॥१४॥ विधरमछन्द॥ कहत चरण
धरि ॥ पड़त शरण हरि ॥ रहव रसन परि ॥ रट-
वयशन हरि ॥ १५ ॥ कहवयतन करि ॥ हरव सकल

पठोवैं ॥२७॥ पाटत हरि ॥ मरव चरण धरि ॥१६॥ मत्त गयन्द छन्द ॥ छोड़ विषैरसको मनरे गुरु (नानक शाह भजो अविनाशी ॥ ध्यान लगावत हैं जिसको शिवप्रेम बढ़ाय भये सुखराशी ॥ आसनकंज मुनीसन् का दिक नारद औकमलाजिहँ दाशी ॥ गावत गीत सदा वह धीररच्यो कलमा जिन लिंगविनाशी ॥१७॥ कुण्डलियाछन्द ॥ रूपदिशा गुरुदेवको वन्दौंशीर्ष निवाय ॥ जिनको भज सङ्कट मिटैं अरिदल जाग्रनशाय ॥ अरिदलजायनशाय खालसा पन्थ चलाये ॥ कच्छको शटैखड्ग नाम आकाल जपाये । मार म्लेच्छगण जौन हिन्दुको धर्म्म बचाई । तिनको भज मन मूढ़ कष्ट तेरो कट जाई ॥१८॥ अमृताछन्द ॥ मन छोड़ कुसंग सुसंग धरो गुरु गोविन्दसिंह जपो सुरराई ॥ जिनकी पद कांज मरीचि लिये रवि रोचिस कीनहरे तिमि राई ॥ कटि केहरि सौजिनकी छवि है कछु भूषण श्रोणिधरे सुखदाई ॥ जसराम मनोहररूप शशी तन कोट दिवाकर ज्योतिलखाई ॥१९॥ कर वाम धरे धनुसं अति सुन्दर वाण धरे कर दान सुधारा ॥ चढ़िबाजि उड़ावत आवत धावत देख सखी डरछें दनहारा ॥ किह भातमिलैं ममप्राणपिया नहि प्राणतजौं निज मार कुठारा ॥ तलवार विराजित है

जिनकी कटिबोरमहाकमला जिहदारा ॥ २० ॥ सुर
बेयात् ॥ कहताहै सिंहतेरेजोदाशोंकादासहै ॥ दिवा
निशोप्रभोतेरेचरणोंकिचाशहै ॥ पादपद्म ध्यानसिद्धि-
ल्कोचरामहै ॥ उस कल्पकोहमारीको टन प्रणामहै ॥२१
यवेश लाजराखआपकाजो वकशहै ॥ इस्परहजार
चापतें तेराजो नक्शहै ॥ शरमे सुरीदनाबका वड़ाय
शखतहै ॥ इसको खयाल कीजिये वन्दाभक्तहै ॥२२॥
सोरठा ॥ सुनौशन्तमनलाय रणकोड़ा गुरुदेवको ॥
देवैं चल्पशुनाय हेतु समरकाजोनहै ॥ २३ ॥ पादा
कुलकछन्द ॥ औरंगजेव कहै सवकोई ॥ राजकयो
दिल्लीमोजोई ॥ सुरमुरति जित जौनरहाये ॥ तोड़
तौनमहजीदवनाये ॥२४॥ शन्तनको धरिकैद कराई ॥
धरि धरिहिन्दूयवनवनाई ॥ गोहत्या वहुताकरवाये ॥
तातै देवी देव डराये ॥ २५ ॥ कह्यो विरिञ्चि लोक
मेजाई ॥ शुन व्रह्मा प्रस्थान कराई ॥ पहुचे चीरसिन्धु
तटजाये ॥ जोड़भुजादलहालजनाये ॥ २६ ॥ कुगड-
लियाछन्द ॥ शुनस्रष्टृके वचन को नारायण वतलाय ॥
वर्षसाठपर जायकै देवैं ताहिखपाय ॥ देवैं ताहि
खपाय चभौमारानहिं जाये ॥ धरि गुरु नानकरू
पताहि वरदान चलाये ॥ दौनातुभको राजपुस्तक
सिन्धुकरावैं ॥ धरिदशमा मैं रूप तोहियमलोक-

पठावैं ॥२७॥ पादाकुलकछन्द ॥ तातेराजपाटवहपाई ॥ तिपरलङ्क आ:नामरखाई ॥ पूस्तलोक पूरण होआये ॥ ताते दुष्टमतो होजाये ॥ २८ ॥ वर्ष नयन कोड़ी पर माई ॥ क्यों करिताको देहुं खपाई ॥ शुभवेधस करजोड़ चलाए ॥ तंवते धर्म्मलोप होजाए ॥२९॥ भुजङ्ग प्रयातछन्द ॥ कहा नाथ आकाल मोगातधारैं ॥ करैं खालसापंथताको विदारैं ॥ शुनाचार शीर्षका हा प्रेमनालं ॥ महा आप कृपा करीयातुकालं ॥३०॥ करो पादपूजा विदाहो सिधाये ॥ इहां नाथ वेगात को धारि आये ॥ किया शूरमाखालसापन्थभारी ॥ दिया तेगओ केशओ वेशसारी ॥३१॥ पादाकुलकछन्द ॥ सिंह देख तुरकान घबड़ाये ॥ काजो मुलनाजोन रहाये ॥ शरेमहम्दो गयोभुलाई ॥ शुन्नतकलमा सर्वत जाई ॥३२॥ सिंहयवनदल मध्य सिधावैं ॥ मार कूट शूकर मुख पावैं ॥ तोड़ भांग मसजीद गिराये ॥ तिस मो कोल रक्त छिड़काये ॥३३॥ कुण्डलियाछन्द ॥ तोवा तोबा तुर्कभया कह्यो शाहके पास ॥ मभवचन्द नूतन भयो करो यवनको ग्रास ॥ करो यवनको ग्रास खालसासिंह कहावैं ॥ मार काट हाराम खिलावैं वेदोनकरावैं ॥ शुन औरङ्गा हाल होय वेहाल कहाये ॥ मारो गुरुको जाय जोन यह पन्थ चलाये

…टा कुलकछन्द ॥ पहुंचे तुक …ये ॥
इतसे सिंह खालसा धाये ॥ भयो परस्पर खूब लड़ाई॥
तुरकानको हरि मार खपाई ॥ ३५ ॥ जौन जौन तन
प्राण रहाये ॥ भाग शाहको हाल जनाये ॥ शुनके
शाह वहुत भय पाई ॥ त्राहि त्राहि वोले घवड़ाई
॥३६॥ और वलय पुन दीन पठाये ॥ ताको भी हरि
मारखपाये ॥ वार वार वहुवार पठावैं ॥ सवको शस्त्र
खालसाघावैं ॥३७॥ कह लगि सतगुरु समर लिखाओं ॥
ग्रन्थ वढ़नते अधिक डराओं ॥ ताते मुखको मौन
करावैं ॥ और आत्मा कथा शुनावैं ॥३८॥ दोहरा ॥
पुव सोमताके भयो सत गुरुकी परसाद ॥ हिरण्य
कशिपू भवनमे जन्म लयो प्रह्लाद ॥३९॥ गुरु भक्ति
निशि दिन करै नाम वहादुरशाह ॥ अष्टप्रहर प्रभु
ध्यानमें मग्न रहत मन माह ॥४०॥ सोरठा ॥ सुतवर
को वुलवाय भषैशाह समुझायके ॥ करौ समर झट
जाय फौज वीश यह लक्ष ले ॥४१॥ भषै पुत्र कर
जोड़ जनकवचनको शुनतही ॥ डारैंगे हरि तोड़ गुरु
समान जग कौन है ॥४२॥ दोहरा ॥ शुन आत्मजके
वचनको मनमे उठा रिसाय ॥ अवहीतोको मारिहौं तू
गुरुको यशगाय ॥४३॥ शुनत दुष्टके वचनको काहा
शस्त्रमेजावं ॥ फौज वीश वह लाखलै चौप्रचलायेपाव ॥

॥४४॥ सङ्ग वलय सुत जायकै डेरा किया लहोर ॥
कोटि विनय करिके लिखा सतगुरु चरणो ओर ॥
॥४५॥ वाहि गुरूपद कमल मो मम प्रणाम लखवार ॥
यह गरीबकीनम्नता करिये अङ्गिकार ॥४६॥ पादाकुल
कछन्द ॥ मैहो दाशोके तवदाशा ॥ दीनदयाल करो
दुखनाशा ॥ मै प्रभुके शरणा गत आये ॥ अभय दान
करिये हर आये ॥४७॥ दोहा॥ सेवकके वशनाथ हैं जानत
हैं सवकोय ॥ रीझदयो वरशन्तको मनमेधारा जोय
॥४८॥ सो रठा ॥ तुमको शाह वनावं जनक तुम्हारो
मारके ॥ तवते आप रहाव सुत लहोरहोके विषे
॥४९॥ रहा लहावर वीच प्रभु आज्ञा वह पायके ॥
हन्यो घोर रणवीच इत गुरु पापो पकड़के ॥ ५० ॥
दोहरा ॥ औरङ्गको मारके लीना राज समाज ॥ शाह
वहादुरको वुला दीनाताको राज ॥ ५१ ॥ जैसा
रावण मारके लीना लङ्का साज ॥ राज विभीषणको
दिया दाशजान महराज ॥ ५२ ॥ सकल कथा गुरुदेव
की गुरु विलासवतलाय ॥ भारत सम वह ग्रन्थ है
दर्शन पापनशाय ॥५३॥ मुरवा ॥ तुर्कके किताबमें भी
है कथा गुरु वीरकी ॥ भविष्यतपुराण मेभी है
कथा गुरधीरकी ॥ और भी वहु ग्रन्थमें है यश
प्रभाविअन्तकी ॥ वे अन्तकोक्यों करि भये है ज्ञान

अल्प यह कीटको ॥५४॥ दोहरा । सर्व कथा प्रभु युद्धकी जो मैकरों बखान ॥ भारत सम वढ़ जायगो जानहु सन्तसुजान ॥५५॥ गुरु चरित्र सम सिन्धु है मै कलियुगको कींट ॥ बुन्द तुल्य वर्णन किया जैसे कुञ्जरचोट ॥ ५६ ॥ कवित ॥ म्लेच्छ पक्षिपक्ष जाते हिन्दुर्वा धसक जाते धर्म्म कर्म्म गर्व्व जाते वेदन पुराणको ॥ कलमा रटत जाते गायत्री तजत जाते देहुराढहत जाते मतन कुराणको ॥ कबुरबनत जाते तीरथ सरक जाते सुन्नत करत जाते निन्दित पुराणको ॥ श्रीगुरुगोविन्द सिंह शूरमा पूरण ब्रह्म मूरती न होती जोपै विष्णु भगवानको ॥५७॥ दोहरा ॥ इष्टदेव गुरु ग्रन्थको वन्दो शीर्ष निवाय ॥ जाप्रसाद सङ्कट मिटै यमको दण्ड न आय ॥५८ ॥ इनकी सम प्रभु कौन है या कलि-युगकी माहिं ॥ जो उपासनाको करैं हो निर्वाण सो नाहिं ॥५९॥ पादा कुलक छन्द ॥ स्वाती जल चातकको आशा ॥ तैसा है मुझको तव प्यासा ॥ कृपासिन्धु दर्शन निजदीजे ॥ मनकीआशा पूरण-कीजे ॥ ६० ॥ सोरठा ॥ मनमे किया विचार पूर्व कथातव कहन को ॥ रचि रचि श्लोक अपार मुझको यह वर दीजिये ॥ ६१ ॥ तिष्ठोघटमोआय

राम कथाके कारणे ॥ कीजे ग्रन्थ बनाय क्रीड़ा प्रभुने जो किया ॥ ६२ ॥ कुण्डलिया छन्द ॥ कुलदेवी बन्दन करौं असीजाको नाम ॥ सदा मातरहु दाहिनी सुफल करी मनकाम ॥ सुफल करी मन काम कुलोंका रक्षा कीजे ॥ काम क्रोध संहार मात उत्तममति दीजे ॥ निज भक्ती करि दान अन्त गुरु नाम जपावैं ॥ शमन दमन करि दूर जन्म मृत्यू मम घावैं ॥ ६३ ॥ दोहरा ॥ शङ्कर तन परजो खड़ीं लांबीजीवनिकाल ॥ तिनकी पद वन्दन करौं काली महाकराल ॥ ६४ ॥ पाप निवारण कारणी यमुना शारद गङ्ग ॥ कोट बार बन्दन करौ सर्व-तीर्थके सङ्ग ॥ ६५ ॥ आखू वाहन जौनको लम्बो-दर गण नाथ ॥ तिनके पद बन्दन करौं जोड़ युग्म निजहाथ ॥ ६६ ॥ गिरिजा चरण मनायके वन्दौं गिरिजाकन्त ॥ जाप्रसाद तनका रिपू कामादिक हो अन्त ॥ ६७ ॥ राधाराणी स्मरणके वन्दौं व्रजके नाथ ॥ अवधिपुरी बन्दन करौं जन्म लयो रघुनाथ ॥ ॥ ६८ ॥ रामचन्द्र उरलायके वन्दौं लक्ष्मणलाल ॥ वन्दौं माता जानकी जो रावण की काल ॥ ६९ ॥ हनूमान वन्दन करौं अरू कौशल्या मात ॥ जिनकी रटि सङ्कट मिटैं पातकहोवैं पात ॥ ७० ॥ इन्द्रादिक

सब देवको बन्दौं बारम्बार ॥ अन्त चरण बन्दन करौं और विप्रउधार ॥ ७१ ॥ सोरठा ॥ बन्दौं शीर्ष निवाय जनक प्रसूपदचारको ॥ चरणोंमे शिर नाय पितृव्या पितृव्यको ॥ ७२ ॥ बन्दौंपादमनाय और सकल जो पितृ हैं ॥ होवैं पित सहाय राम कथाकी कारणे ॥ ७३ ॥ भुजङ्ग प्रयात छन्द ॥ दयो दान विद्या मुझे जौन कोई ॥ करौं प्रणिपातं गुरूपाद सोई ॥ हरे अंधकारं दयो ज्ञानकोटं ॥ जिन्होंने तजाये किते कामखोटं ॥७४॥ कुण्डलियाछन्द ॥ दुष्ट क्रूरवाकृतघ्न विश्वासघाति जो होयं ॥ मित्रद्रोहि परनिन्दकां निमकहरामो जोय ॥ निमकहरामोजोय और आरज अपकारो ॥ जोड़ भुजादल भयो सुनोसव विनय हमारो ॥ विघ्ननडालोकोय ग्रन्थ रचनेमो भाई ॥ देहु अभय वर मोहिं तुमनको राम दोहाई ॥ ७५ ॥ दोहरा ॥ बुद्धिमान सज्जन सकल कवि कोविदजो होयं ॥ भूल चूक मम ग्रन्थके क्षमा करैं सबकोय ॥ ७६ ॥ कविताई अति कठिन है मे हौं अतिशय वाल ॥ भूलचूक शोधन करैं कवि कोविद किरपाल ॥ ७७ ॥ कुण्डलिया छन्द ॥ यथाशक्ति स्तुतिकरी प्रेम सहित चितलाय ॥ अब रामायण भणतहौं सुरसवहो-हुसहाय ॥ सुरसवहोहुसहाय ग्रन्थपूरण यह कीजे ॥

वाहि गुरुकी दासजान निर्भय वर दीजे ॥ जोड़पाणि कविसिंह खालसा विनय करावैं ॥ व्यापैजगमो नाम और पुनर्जन्म न पावैं ॥ ७८ ॥

अथ श्रीनारायणजी वैकुण्ठमे चार रूपको धारण करते भये।

॥ दोहरा ॥

श्री श्रेष्ठ गोलोक है सर्वपुरा के माहिं ॥ कमला सहित विराजते नारायणजिसठाहिं ॥७९॥ वृन्द इन्दु-पुरके विषे देवसभा सुखरङ्ग॥ जांमांगोमोदतुहै कल्प-तरू दुखभङ्ग ॥८०॥ निशवासर उतरहत हैं भानू सोम प्रकाश ॥ अतिशय सुन्दर और है मन्दिर पादपपाश ॥ ८१ ॥ रत्नसिंहासन जड़ित है प्रभातुल्य रविबाल ॥ तापर प्रभो विराजते आनन चौराडाल ॥ ८२ ॥ वासर भू मन कोविषे ईश्वर किया विचार ॥ दृष्टिशुक्र तनत्यागकी देहूं धरौं मैचार ॥८३ ॥ कवित ॥ मनमो विचार करि रूपयुगधार हरि तिष्ठ सिंहासन पर भूषण सजाये हैं ॥ मुकुट किरीट शीश पोहर जगतईश धरिशरचापदृढ़ आनन्दपाये हैं ॥ सिन्धु

आविर्हर्ष करिजानकी स्वरूप धरि कन्तकी उच्छिष्टा-न्नर मुखसी रहाये हैं ॥ लछमण भ्रातपाय खोलआत पतलाय राम नाम गुणगाय मस्तक धराये हैं ॥ ८४ ॥ चमर कनक पाणि जड़ित रतनजान भरत प्रमोदआन शीर्ष पै फिरायो है ॥ रिपुहन प्रीति करि बीजन कनक धरि जानकी राघव पर प्रेम से हकायो है ॥ जोड़त रहत पाणि आल्हाद श्रीहनूमान लोचन उलट ध्यान रामकोलगायो है ॥ मदन गोपाल सिंह पुस्तक रचत भिन्न जानके पुरणब्रह्म शरण मोआयो है ॥ ८५ ॥ मत्त गयन छन्द ॥ वाहि समैकमलासन नारद आयगयेछविदेखहंसाये ॥ आपुसमे मुनिभाषत हैं हरि क्यों युगरूप अनूपधराये ॥ जाकरिकै हम लोनम आज भये यह शङ्करको समुझाये ॥ हाल मिले हरसो हरिका असवोल मुनोविधि ध्यान कराये ॥ ८६ ॥ कुण्डलिया छन्द ॥ श्रीकैलाश पहाड़पैं गये युग्म सुरधाय ॥ देखो अरुपद शूलकर वन्दे मुण्ड निवाय ॥ वन्दे मुण्ड निवाय देखशम्भू हरषावैं ॥ देआसन ततकाक तमोगुण विहस अलावैं ॥ क्या कारण मुनिराज आज दर्शन निजदीना ॥ तव विरिञ्चि मुनि कलह हाल वर्णन सवकीना ॥८७॥ अमला छन्द ॥ सुनि हाल भयो कमलासन वा मुनिनारदको गिरिजा

पति गाये ॥ युग रूप धरे प्रभुने यह जो तिनका सब हाल शुनो चितलाये ॥ नरलोक विषे अवतार धरैं युग दूसर मोहरिजू यह जाये ॥ जब रावण यातुधरै तनको सुरको धरि के सब कैद कराये ॥८८॥ दोहरा॥ मनुज आदि गोघातको महापापको होय ॥ राम नामके लेतही मोक्ष होयनरसोय ॥ ८९ ॥ शुनत वचन अस भोमके सुर कर भणे हंसाय ॥ ऐसा पापी कौन है लोक चक्षु मो भाय ॥ ९० ॥ सोरठा ॥ त्र्यम्बक कहै वुझाय शुनखष्टके वचनको ॥ पापी भूमि रहाय मृत्यु लोककी मध्यमे ॥ ९१ ॥ रत्नाकर है नाम च्यवन मुनिको पुत्र है ॥ वन भीतर अघ काम नित पर धन जीवन हरै ॥ ९२ ॥ राम नाम जपवाय ताको सुर वरजायके ॥ दीजे ताण कराय महामन्त्रको दान करि ॥ ९३ ॥ दोहरा ॥ शुन धुर्जटिके वचनको शन्त वेशको धार ॥ गिरि कैलाश सिचले मृत्यू लोकमभार ॥ ९४ ॥ मृत्युलोक मो आयके कानन कौन पयान ॥ रत्नाकरकी ग्राममो पहुंचे मुनिवर आन ॥ ९५ ॥ सोरठा ॥ देखा सुरपख जाय रत्नाकरको वृक्षपर ॥ चारो ओर तकाय परधन पर वध कारणे ॥ ९६ ॥ पादाकुलक छन्द ॥ पद्मासन नारदकी पाई ॥ उतरा मूशल पाणि भराई ॥ ब्रह्मा

नारदकी धमकावैं ॥ मारधस्तरीले जावैं ॥ ९७ ॥ बीणपाणि विधि बोलन लागी ॥ मुझेमारक्यामिलें अभागी ॥ केवल झूटमुझे अपराधू ॥ जाको बोयन मेटैं साधू ॥ ९८ ॥ नराज छन्द ॥ करो अनेक पापजो रिपू हजार मारहो ॥ गणेश दंत धेनुघातके समान मारहो ॥ हजार गोखपाय पापराशि राशि जौनहों ॥ निशापती नशाय नारिके समानतौनहों ॥ ९९ ॥ हजार नारि काट पाप जो पहाड़ होत है ॥ महो भुदेव घात पापके समान खोत है ॥ विप्र हजार मारि जौन पापराशि पावहीं ॥ असंख पाप ताहि जो सन्यास वेश घावहीं ॥ १०० ॥ कहैं सुनौ ब बालको करो विचार आयकै ॥ महा खरावकार है कहा तुझे बुझायकै ॥ सुनाठगेशने जवैं गजाकरोधलायकै ॥ धरा नराज छंद सिंह खालसा बनायकै ॥ १०१ ॥ कुण्डलिया छन्द ॥ सुन ब्रह्माके वचनको ठगवर भयो रिसाय ॥ तव समसाधू कोटको दीना दूतेखपाय ॥ दीना दूतैखपाय सुनत मुनिवर घबड़ाये ॥ पुन पूछैं चुमकार पद्मयोनीसमुझाये ॥ कहो तात असत्य पाप तुमरो जो होई ॥ हैभो भागीदार और तिसका भी कोई ॥ १०२ ॥ दोहरा ॥ बोला रत्नाकर तवे हैं भागी मम नैन ॥ मात पिता

अरुभार्य्या जोन करैं नितचैन ॥ १०३ ॥ सोरठा ।
कहैं विरिञ्चि हसाय शुनत प्रवञ्चक वचनको ॥
पापकरो अघ आय वेसाभोक्यों करि भये ॥ १०४ ॥
दुस्कृतवाको खाय जोकलूषको करत है ॥
पूछोशठवरजाय दाराजननीजनकसे ॥ १०५ ॥ कुण्ड-
लिया छन्द ॥ शुन ब्रह्माके वचनको ठगवर भगो
हसाय ॥ भागनको भल युक्ति करि सहजहि
प्राण छुटाय ॥ सहजहि प्राण छुटाय विधाताकहैं
बुझाई ॥ करों प्रतारक सत्य नहीं मैजावं ठगाई ॥
भगो खालसा सिंह शपथ विधि से करवाये ॥ कीना
धुर्त्तपयान वेग सद्मन निज आये ॥ १०६ ॥

अथ रत्नाकरका राम नामसे पाप नाश।

॥ शारङ्गी छन्द ॥

वापो पासो जाये वोले जे ता पापो मेरो है ॥
ताके साभीहो को नाहीं जो को मेरो कारो है ॥ मारें
कूटैं वाधें लूटैं तोको लाके देते हैं ॥ शांचा शांचा
आखो वावा ताका भागालेते हैं ॥ १०७ ॥ दोहरा ॥
शुन आत्मज के वचन को च्यवन कोप कराय ॥
तर्ज्जं गर्ज्जं सुतको भगो कोटन बात बनाय ॥ १०८ ॥

तोटक छन्द ॥ यसको सुत आय कहातु भको ॥ तिसका
द्रुत नाम वता मुझको ॥ सुतका अघ बांट हितात लहै ॥
यह बात कही शच कौन कहै ॥ १०६ ॥ हम नाहिं
कहा सुत पाप करौ ॥ तुम काहि भला नहिं कार
धरौ ॥ यह बात पिता जवताहि कहा ॥ तवरो अति
मातहु पाद गहा ॥ ११० ॥ दोहरा ॥ प्रभु चरण शिर
नायके क्रन्दन करयो अपार ॥ कलफ तडफ भाषत
भयो मनहि माहि विचार ॥ १११ ॥ भुजङ्ग प्रयात
छन्द ॥ करूं अर्ज माता शुनो आपमेरो ॥ कहौ
आप शांची पड़ै शर्णतेरो ॥ हमेशा करैं कार मे जाय
जोई ॥ लहो भाग माता जगाजौन होई ॥ ११२ ॥
सोरठा ॥ जननी भणै रिशाय भाग लैन बोला जवै ॥
को साधैगा आय जो सेवा मेरी करौ ॥ ११३ ॥
मैं राखा है तोहि मासदिशा निज उदरमा ॥ तौ
साझो हम होहि जौयाको शोधन शको ॥ ११४ ॥
दोहरा ॥ शुन जननी की वचनको रत्नाकर भय
पाय ॥ पत्नीकि गृह जायकी पूछन लगा वुलाय ॥११५॥
कामिनी मोहणा छन्द ॥ प्राणप्यारी सदा मालको
चाभके ॥ मौजकी साथ क्रीड़ा करौ गाजकी ॥ भाग लो
जै जरा कारका मोहनी ॥ रूप है आपका जौनसे
शोहनी ॥ ११६ ॥ दोहरा ॥ शुन स्वामीकी वचन को

नारि भयो कर जोर ॥ नारायण मुझको करौ अर्द्ध अङ्कपति तोर ॥ ११७ ॥ और सर्वदूरिष्ठको मैहौं साझीदार ॥ उदर भरणका दुरितजो वह नहि मुझको भार ॥ ११८ ॥ सोरठा ॥ ठग वर शोच कराय शुन गृहभरवी वचन को ॥ क्यों करि प्राण बचाय दुराचार जो मैं किया ॥ ११९ ॥ दोहरा ॥ मैं दुर्बोध न जानते यह सब मेरो होय ॥ कदाचार ताते किया धर्म्म आपनो खोय ॥ १२० ॥ पादा कुलक छन्द ॥ पाप कठोर कौन मै आई ॥ क्या बोलें यम को अवजाई ॥ अस बिचार मूशल शिर मारा ॥ गिरा अचेतन भूमि मझारा ॥ १२१ ॥ जब चेतन च्यवन सुत पाई ॥ पहुचा काननमो तब धाई ॥ ब्रह्मा को कर जोड़ अलाये ॥ नाथ निराश होय मै आये ॥ १२२ ॥ साझीदार भयो नहि कोई ॥ कह्यो प्रभो देखा मै सोई ॥ धनको सब भागी लखि-पाई ॥ जनक पुत्रदारा क्या माई ॥ १२३ ॥ कुण्ड लिया छन्द ॥ शुन रत्ना करके वचन कहैं स्वयम्भु हसाय ॥ शमन दमन जब होयगो तब क्या करि हो भाय ॥ तब क्या करि हौ भाय त्रास रत्नाकर पाई ॥ गिरा अचेतन होय चरण मो शीर्ष निवाई ॥ कहैं विधाता रीझ ताति जिन प्राण तजावैं ॥ मे करिहौं

निस्तार जीवमज्जन करि पावैं ॥ १२४ ॥ दोहरा ॥
शुन ब्रह्माके बचन को गयो सरोबरतीर ॥ पावत
पावो देखके शुष्क भयो सबनीर ॥ १२५ ॥ सलिल
शुष्कको पद्म के रत्नाकर भय पाय ॥ करि क्रन्दन
विधिको कहा पद मो माथ निवाय ॥ १२६ ॥
पादाकुलक छन्द ॥ शुनत हाल वेधस मुशकाई ॥
जीवन अपनो दान कराई ॥ तातेठगवर स्नान
कराये ॥ दीक्षा ग्रहणकीनपुन पाये ॥ १२७ ॥
राम नाम मन्त्र शुभ पाई ॥ ताते तनका बाधा
कराई ॥ महामन्त्र नहि भाषमकाये ॥ ताते मन्त्र
विलोमजपाये ॥ १२८ ॥ मरा मरा ठग मन्त्र
चलाये ॥ ताते मुक्ति पदारथ पाये ॥ जैसा मेरु
कपासैरहाये ॥ चिनगचन्द्र पावक सब खाये ॥ १२९ ॥
कुण्डलिया छन्द ॥ तेसा प्रभुकी नामसे पाप नाश
होजाय ॥ देख मगन सुर युगल हो बोलैं प्रीति
कराय ॥ बोलैं प्रीति कराय बाक अक्षर का जोई ॥
क्यों करि होय न सत्य परम योगी हैं सोई ॥ भयो
खालसा सिंह मुनी वेधसहरखाये ॥ कीना स्तोत्र
अनेक तमो गुण को शिरनाये ॥ १३० ॥

अथ श्रीब्रह्माजी रत्नाकर को श्रीवाल्मीक मुनी नाम प्रदान किया और श्रीरामायणजी बनानेके वास्ते वर दान दिया।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

श्रीराघव की नाम का महामन्त्र करि दान ॥ स्रष्टृ अरु मुनि नारदा गृहको कीन प्रयान ॥ गृहको कीन प्रयान इहां रत्नाकर जाई ॥ घोर विपिन मांतिह राम का नाम जपाई ॥ चक्र रवैरथल्लाय त्रिस ठग वरताप कीना ॥ अनाहार हो कष्ट बहुत तनको निज दीना ॥ १३१ ॥ पादाकुलक छन्द ॥ जिनकी तन सो था जो मासं ॥ कीट खाय कीना सब नाशं ॥ अस्थी केवल तनमो राहा ॥ तापर भूमि मृत्तिका छाहा ॥ १३२ ॥ अब्द सहस्र सठ तपकीना ॥ मृत्यु लोक मारग विधिलीना ॥ ठग वरको देखन नहिं पाये ॥ खोजें चतुर्दिशा प्रभु आये ॥ १३३ ॥ पिण्ड चन्द्र सन्मुख लखिपाई ॥ राम नाम रवद्योत रहाई ॥ शुन धता सुर काल बुलाये ॥ पिण्डो परवारो वरषाये ॥ १३४ ॥ तिन

मोहगवर की विधि पाई ॥ तनमो बेवल हाड़ रहाई ॥ सेवक गात विकल लखि पाये ॥ धरि चतुरानन चेत कराये ॥ १३५ ॥ अब चेतन रत्नाकर पायो ॥ तब गुरु को प्रणिपात करायो ॥ जोड़ भुजा दृल हर्ष बढ़ाये ॥ राम नामते मै गति पाये ॥ १३६ ॥ राम नाम सम मन्त्र न कोई ॥ जगमो मोच पातको होई ॥ शुन स्रष्ट अतिशय हरषाये ॥ दै करि आशीर्व्वाद बढ़ाये ॥ १३७ ॥ है रत्नाकर नाम तुम्हारा ॥ ताते करयो अधर्म्म अपारा ॥ तिहं कारण वह नाम तजाई ॥ बालमीक मुनि नाम रखाई ॥ १३८ ॥ मुनि ख्याती जिनको भज पाये ॥ ग्रन्य रचो तिनका चितलाये ॥ पाणि जोड़ बोलें मुनि ज्ञानी ॥ क्यों करि रचि हौं राम कहानी ॥ १३९ ॥ कुण्डलिया छन्द ॥ कठिन काम है ग्रन्थ का छन्दा भेद अपार ॥ क्यों करि मेताको रचौं गुरुवर कहो विचार ॥ गुरुवर कहो विचार ट्रुहिण वरदान बढ़ाये ॥ शारद रसना मध्य आपकी बास कराये ॥ भये खालसा सिंह बोल ब्रह्मा गृह जावैं ॥ करं प्रभो वह काज आप जो ग्रन्य बनावैं ॥ १४० ॥

अथ वाल्मीक मुनि श्रीरामायणजी बनाने के वास्ते श्रीनारद मुनि से उपदेश लिया ॥

॥ कवित्त ॥

दिनशुक्लदृष्टिधीर धाय सरोवर तीर तिष्ट तरु तले राम नामको जपतु हैं ॥ वाडिकाल खगकर-गये महीरुह पर ताको पेख व्याधशर प्रेरण करतु है ॥ विहङ्गम बाण खाय लोटत गिरत धाय ताको पख्य वाल्मीक व्याध कोभणातु हैं ॥ जीवघात कीन मूढ़ कछु न विचार क्रूर आपन मरण खल सूझ न पड़तु हैं ॥ १४१ ॥ पादाकुलक छन्द ॥ मनस्ताप असवोल आये ॥ पूर्व कर्म्म निज गयो भुलाये ॥ अन्तन को हैगो यह यादू ॥ ठग होवैं मुनिवर अरु साधू ॥ १४२ ॥ करत खेद मुनि श्लोक बनाये ॥ ताको अर्थ खोज नहिं पाये ॥ ताते विप्र और घबड़ावैं ॥ भरद्वाज मुनि भवन सिधावैं ॥ १४३ ॥ नारद को ब्रह्मा बुल-वाये ॥ हाल सबै बोलैं समुझाये ॥ वाल्मीक मुनिवर घबड़ावैं ॥ तिनको त्वरित जाय बतलावैं ॥ १४४ ॥ कुण्डलिया छन्द ॥ सुनत वचन लोकेशके देव

ऋषि हरषाय ॥ भरद्वाज मुनि भवन मो पहुंचे बीण बजाय ॥ पहुंचे बीण बजाय पश्य मुनि कर उठधाये ॥ पकड़ युगल पद हर्ष आपने शीर्ष लगाये ॥ दे करि आशीर्वाद मुनी आश्रम मो आवैं ॥ तब लैकर निज श्लोक विप्र मुनि को दिखलावैं ॥ १४५ ॥ पादाकुलक छन्द ॥ श्लोक देख नारद हरषाये ॥ करि टीका मुनि को समुझाये ॥ और भयो शिर पाणि लगाई ॥ यह विधि छन्दरची सुखदाई ॥ १४६ ॥ क्रीड़ा जो गोविन्द करावैं ॥ सो मै सुतवर को बतलावैं ॥ प्रथम काण्ड मो जन्म धरीजै ॥ मख रक्षा प्रभु व्याह लिखीजै ॥ १४७ ॥ दूसर मो कानन प्रभु जावैं ॥ सीता तृतीये त्याग करावैं ॥ चतुर्थे सुग्रिव सखा बनाई ॥ काण्ड पञ्चमे सिन्धु बधाई ॥ १४८ ॥ कुण्डलिया छन्द ॥ षष्ठे रावण मार कै लेवें लङ्का साज ॥ कछ भृत्य को दान करि पावैं अपनो राज ॥ पावैं अपनो राज सप्तमो काण्ड बनावैं ॥ तामे कथा विशेष सर्व शुनने सुखपावैं ॥ मासबाण ले गर्भ जानकी को बनवासू ॥ तिन कै होवैं पुत्र जमक लवकुश दुखनाशू ॥ १४९ ॥ पादा कुलक छन्द ॥ अश्वमेध पुननाथ करावैं ॥ सो बाजी सुत छोर रखावैं ॥ तिह कारण योधागण आये ॥ तिन सब

को सुत मारखपाये ॥ १५० ॥ सुन गोलोक चन्त घबड़ावें ॥ चतुज सहित रथ भूमि मिथावें ॥ तिन को भी सुत मारखपाये ॥ प्राणदान तबहि प्रभु पाये ॥ १५१ ॥ पुत्र युग्म तब यन्थ सुनावें ॥ तब भरथो जा नाथ बुलावें ॥ सीता जननी बन्द कराई ॥ चढ़ि गोदी पाताल सिधाई ॥ १५२ ॥ लक्ष्मण को प्रभु त्याग करावें ॥ राज छत्र सुत शीश धरावें ॥ सहस्र रुद्र करि राजू ॥ शौरि होय बैकुण्ठ बिराजू ॥ १५३ ॥ कवित ॥ सुन बालमीक मुनि रचत गोविन्द गुण यन्थ को प्रताप कवि कहां लौं चलावहीं ॥ जाको चन्द्र नाम रट होयो मुनिवर श्रेठ तिन को दृष्टान्त बालमीकको बतावहीं ॥ कवि निज पाणि जोड़ बन्दन करत तोर जान निज दास ग्रन्थ परण करावहीं ॥ तेरो मुनिराजगुण पुस्तक रटत सुन प्रेमनाथ मदन गोपाल सिंहगावहीं ॥ १५४ ॥

अथ चन्द्रवंसोपाख्यान ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शशिको सिन्धु मथनि मो पाये ॥ बुध जाके आतमज कहिलाये ताके पुत्र पुरुरुव नामा ॥

जाते शशावर्त्त सुतनामा ॥ १५५ ॥ ताके नन्दन स्वर्ग कहाये। श्वेत ग्राम जाके सुत जाये ॥ पुत्र निमी नाम ताकर आये ॥ जाको मथ्यो मुनिगण पायं ॥ १५६ ॥ तातें पुत्र भयो मिथि नामा ॥ जौन बसाको मिथिला ग्रामा ॥ दूसरे भी पवसुत जन जाये ॥ वीरध्वज कुशध्वज कहाये ॥ १५७ ॥ इनो गोत्र की कथा अपारा ॥ यथाशक्ति सन्तान उचारा ॥ शुभो भक्त सज्जन मनलाई ॥ भयो खाल सा सिंह डराई ॥ १५८ ॥

अथ राजा मान्धाता उपाख्यान।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अकाल पुरुषके देहसे ब्रह्मा विष्णु महेश ॥
और चन्द्र कन्या भई कन्दिनि नाम सुवेश ॥
कन्दिनि नाम सुवेश पश्य तय गुण हरषावें ॥
अरत काऊ सुत साथ खसा उद्वाह करावें ॥
ताकी कन्या भई नाम भानू रखवाई ॥ जमदग्नी ऋषि साथ सुताका व्याह कराई ॥ १५९ ॥ पादाकुलक छन्द ॥ तिनकी गृह विष्णू अवतारा ॥ खष्ट निकट शुक्र निजडारा ॥ तातें पुत्र मरीच कहाये ॥

जाके कश्यप पुत्र रहाये ॥ १६० ॥ तिनके घर
दिनकर अवतारा ॥ जाके पुत्र मनू तन धारा ॥
ताके पुत्र सुषेण कहाये ॥ जिनके पुत्र प्रसन्न
रहाये ॥ १६१ ॥ यूवनाश्वताको सुत होई ॥ अव-
धिराज कीना है सोई ॥ कन्दक नामक भूप रहावैं ॥
रूपवती कन्या जन्मावैं ॥ १६२ ॥ कालनिमी ख्याती
रखवाई ॥ यूवनाश्वको दान कराई ॥ ले पत्नी भूभृत
गृह आये ॥ राज काज सब दीन सिखाये ॥ १६३ ॥
आप भूप काननमो जाई ॥ घोर तपस्यारम्भ कराई ॥
स्वामी सुख राणी नहिँ पावैं ॥ लज्जा तजि पितु पास
जनावैं ॥ १६४ ॥ शुनत क्रोध कन्दक नृप कीना ॥
शाप जमाता को द्रुत दीना ॥ तप करि अवधि
कन्त जब आये ॥ मुनिगणको सुत हेतु बुलाये
॥ १६५ ॥ शुनत हाल सब विप्र बतावैं ॥ भार्य्या का
नहिं सङ्ग करावैं ॥ क्यों करि पुत्र होय तब भाई ॥
शुन भूभुज बोलैं शरमाई ॥ १६६ ॥ अहं अङ्ग नहिँ
सङ्ग करावैं ॥ मख करि पुत्र श्रेष्ठ जन्मावैं ॥
अश्वमेध तब विप्र करायो ॥ यजन उदकदैकर
समभायो ॥ १६७ ॥ रणीको नृप देहु पिलाई ॥
लैभुनता मनमोहरषाई ॥ विप्रणको प्रणिपातकरावैं ॥
लै अपको सद्मनमो आवैं ॥ १६८ ॥ अर्द्ध निशा जब

गमन कराये ॥ हो हर्षासे नरपति घबड़ाये ॥ मेध वामन लेपान करावें ॥ ताते गर्भवन्त होआवे ॥१६८॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

मासदिशा पूरण भवै भूप गयो घबड़ाय ॥ उदर चीर आत्मज भयो भुनता प्राण तजाय ॥ भुनता प्राण तजाय पश्च आगये विधाता ॥ देवऋषि आशीर्वाद नाम राख्यो मान्धाता ॥ भये खालसासिंह सुनौ सज्जन चितलाए ॥ मन्दकाया शाप भूप ताते जल जाए ॥ १७० ॥

अथ सूर्य्यवंसध्वंस और हरित अयोध्यामो राजा भये।

॥ कवित्त ॥

अवधिमो कीना राज मान्धाता महाराज नाम मुचकुन्द निज सुतको रखायो है ॥ ताको पुत्र जस धाम श्रीपृथुभरत नाम जाकी रथलीक सप्त सागर बनायो है ॥ तिनकी आत्मज होय इक्ष्वाकु रटतजोय नारद वशिष्ट आदि सारथी रहायो है ॥ इक्ष्वाकुनन्दन जान शतावर्त्त शुभनाम जाकी पुत्र आर्य्यावर्त्त विख्यमो कहायो है ॥१७१॥ तिनकी औरस होय भरत अभत-

लोब भारत पुराण आते उद्भव करावहीं ॥ भरत अग्रज आन भूतरधरन नाम ताको सुत होय खगड ख्याती रखवावहीं ॥ खगडको कुमार जौन दगड नाम धारतौन छोर परद्वार नित्य यामिनी कटावहीं ॥ ताते लोग कष्टपाय निकट नरेश जाय दगडकी चरित्र कर जोड़ बतलावहीं ॥ १७२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन नरेन्द्र पति कोप कराये ॥ तत्तकाल आत्मज बुलवाये ॥ तर्जं गर्ज बहु भांत रिसाई ॥ करि परित्याय वनवास कराई ॥ १७३ ॥ पुत्र दुष्ट काननमो आयो ॥ दगडक नामक नगर बसायो ॥ अप्रकरीस्यन्दन बहुलाये ॥ सुखसि वनमो वास कराये ॥ १७४ ॥ पीर आत्मा कथा शुनावे ॥ सूर्य्य-वंश जस ध्वंस करावें ॥ शुक्रमुनी उतवास कराये ॥ तिनके गृह पढ़ने नितजाये ॥ १७५ ॥ दिन काहुं दिवस आत्माधायो ॥ वाहि समय पढ़ने नृप आयो ॥ मुन्य प्रवास पश्च ववराए ॥ मुनि जाको कर जोड़ पठाए ॥ १७६ ॥ शुनी प्राण प्यारी सुखदाई ॥ यौवन सुफल करो निज आई ॥ ऐसा शुभ वासर नहिं पाओ ॥ मिलो शीघ्र नहिं देर कराओ ॥ १७७॥

॥ कवित्त ॥

शुन रसभरी वात भाषत आनन्द गात तात शिष्य सम्बन्ध सो भ्रात वतलावहीं ॥ विवाह करण भूप यद्यपि विचार खूव गुरुके निकट यह हालको जनावहीं ॥ शुन लटपटा वाक्य भूभुज भणत हांक आलिङ्गन देहु पाछे उच्छाह करावहीं ॥ अस दण्ड वोल झट चट करि खोल पट शृङ्गार करत दुष्ट काम वशिआवहीं ॥ १७८ ॥ वाहरसे आय मुनि सेवकके ताड़गुण पुत्रीसे पूछत दन्त घातको करायो है ॥ पङ्कजा कहत डरि दण्ड तव शिष्य धरि शून्य गृह पश्य मम धर्म्मको हरायो है ॥ सन्तति वचन शुनि परमहो क्रोध मुनि दण्ड दण्ड कहां दण्ड गर्जके वुलायो है ॥ सेवक द्वितीय एक धावत है कोप पेख दण्डके समीप सव हालको जनायो है ॥ १७९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

गुरुके वचन श्रवण करि आये ॥ करि प्रणाम तिष्ठे शरमाये ॥ पश्य शुक्र बोलैं धमकाई ॥ मै तुझको युत वेद पढ़ाई ॥ १८० ॥ ताका गुरु दक्षिणा भल-दीना ॥ हो प्रसन्न ताको मै लीना ॥ अवथाके फलको ले जायो ॥ गोत सहित मयलोक सिधायो ॥ १८१ ॥ शुनके शाप भस्म होजाये ॥ तिनके जनक अवधिकी

राये ॥ उसने भी तन त्याग करायो ॥ निरख वशिष्ठ मुनी भयपायो ॥ १८२ ॥ तिष्ठे राजसिंहासन जाये ॥ जप तप संयम सबैतजाये ॥ वासर भू मुनिकोन विचारा ॥ विप्र धर्म सब नष्ट हमारा ॥ १८३ ॥ राज्य भोग मो जन्म गवावैं ॥ अन्त गात क्या ज्वाब करावैं ॥ अस विचार निज लोभतजाए ॥ भूप हेतु द्विज ध्यान लगाए ॥ १८४ ॥

॥ कवित्त ॥

देख्यो मुनि ध्यान धर शुक्रकी दुहिता हर ताकि गर्भ दण्ड शुक्र रोपण करायो है ॥ उत्तम धर्मक फल धरत सहस्रदल सम मुनि पद्म अति मनमो लोभायो है ॥ काव्यके निकट जाय प्रबोधन करि राय अब्जा नाम पुत्रिकाको अवधि मो लायो है ॥ सुत परिपक्क जब कविजा कारो प्रसव हरणते ख्याती पुत्र हरित रखायो है ॥ १८५ ॥ सुत मास बाण जब पायस लेमुनि तब कीनाअन्न प्राशन औ ईश्वर मनायके ॥ दिन दिन पुत्र कैसे चन्द्रमा बढ़त जैसे हायन पूरण दिन छवको धरायके ॥ वशिष्ठ आनन्दकीन राज्यको तिलक दीन सिंहासन पर दण्ड अब्जजको लायके ॥ बाबू नन्हासिंह सुत करत गोविन्दनुति श्रीगुरु पूरण ब्रह्म नानक मनायके ॥ १८६ ॥

अथ राजा हरिश्चन्द्रोपाख्यान ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पुत्र हरितके जो भयो हरी बीज या नाम ॥ राज किया वह अवधि मो और महा अपकाम ॥ और महा अपकाम नित्य परदार करावैं ॥ ताको अनुज होय नाम हरिश्चन्द्र रखावैं ॥ हरी बीज प्रस्थान स्वर्गकीना जब भाई ॥ हरिश्चन्द्र नरराज पुत्र सम प्रजा रखाई ॥ १८७ ॥

दोहरा ॥

शीलवन्त धर्मात्मा हरिश्चन्द्रको जान ॥ सुरनर मुनि जाको सदा यशको करैं वखान ॥ १८८ ॥

सोरठा ॥

शुनो साधु मनलाय महाराजकी कथाको ॥ भाखैं श्लोक बनाय जैसी मुझको बुद्धि है ॥ १८९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सोमदत्त भूभूप कहावैं ॥ रूपवती कन्या जन्मावैं ॥ सव्यासताका नाम रखाई ॥ जब वह यह शयन हो आई ॥ १९० ॥ हरिश्चन्द्रको दान कराये ॥ पश्य रूप भूभृत हरषाये ॥ प्रेम साल कछु दिवस कटाई ॥

रूपवन्त अभंग जन्माई ॥ १९१ ॥ पुत्र नाम रुहिदाश रखाये ॥ दान पुण्य बहु भांत कराये ॥ और आतमा कथा शुनावैं ॥ जाते सज्जन प्रीति करावैं ॥ १९२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

वासरभू निजलोक रू। सुरपति सभा कराय ॥ कन्या नूतन अन्द्रयुग नृत्य किया था आय ॥ नृत्य किया था आय ताहको भङ्ग कराई ॥ ताते कीना कोप इन्द्र मनमो खिजलाई ॥ देकरि तिनको शाप कहा यौवन मदमाती ॥ बन्धनमो सबरही दुष्टरहती जसहाती ॥ १९३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनि अभिशाप नारिकुल पावैं ॥ पाणि जोड़ सुरको समुझावैं ॥ अल्प दोषते नाथ रिसाये ॥ कौन गुरु अपराध कराये ॥ १९४ ॥ जान बूझि नहिं दोष कराई ॥ कर्म लिखा पायो सुरराई ॥ छमा मोर अपकार करावैं ॥ दे कछु दण्डवेग बुलवावैं ॥ १९५ ॥ शुन वचो मनमो शरमाए ॥ हो प्रसन्न वरदान अलाए ॥ राजा हरिश्चन्द्रजो पावैं ॥ तिनकै दर्शन शाप नवावैं ॥ १९६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कन्या पांडश आयकी उतरीं कानन माहिं ॥

विश्वामित्रके बागमो फल खाने नित जाहिं ॥ फल खाने नित जाहिं वृक्षको भङ्ग करावैं ॥ पादप खंडन पथ्य तपोधन गर्ज्ज अंतावैं ॥ अब जो तोड़ै वृक्ष धरै ताको जड़ जाई ॥ असदै करि मुनि शाप भवन प्रस्थान कराई ॥ १८७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

नई नई यौवन मदमाती ॥ नृत्त रागकीना बहु भाती ॥ राग रङ्गमोहोश हराये ॥ फल खाने तरु पर सब धाये ॥ १८८ ॥ ज्यों शाखाको भङ्ग कराई ॥ त्यों शीखर कर बांध रखाई ॥ तब कन्या क्रन्दन सब कीना ॥ प्रात होत दर्शन मुनि दीना ॥ १८९ ॥ निरखि सर्व्व युवती भय पाई ॥ तर्ज्ज गर्ज्ज मुनि-राज रिसाई ॥ स्वर कोकिल कोमल तन नारी ॥ करती कोटस्तुती शुन गारी ॥ २०० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तबहु मुनिके चित्त मो दया न उपजो आय ॥ और युग्म गुण डांटके गृहको प्यान कराय ॥ गृहको प्यान कराय परीं रोवै कलपाई ॥ हरिश्चन्द्र हौ कहां बोलि चितकार कराई ॥ हरिण हेतु नरनाथ फिरत कानन मोथाये ॥ शुन करि अपनो नाम निकट पहुंचे द्रुतधाये ॥ २०१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तरुणी रूप निरख हरषाये ॥ पूछैं विहस अवधि के राये ॥ को बन्धन तब पाखि कराई ॥ ताको दया कछू नहिं आई ॥ २०२ ॥ शुन ललना गण अति हरषावैं ॥ तत्तकाल बन्धन खसि जावैं ॥ यीशा सब सुरलोक सिधाई ॥ पश्य चरित्र भूप भय पाई ॥२०३॥ वासपाय सद्मन को धाए ॥ प्रमदा हेतु विप्र तब आए ॥ तिनको मुनि देखन नहि पावैं ॥ ताते अतिशय कोप करावैं ॥ २०४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

ध्यान तपोधन धारिके कीना हाल विचार ॥ हरिश्चंद्र आकरि इहां महिला दीन निकार ॥ महिला दीन निकार बोल आमर्ष कराये ॥ तत्त-काल द्विजराज राजमन्दिरमो आये ॥ देख विप्रको भूप हर्षपद्मो शिरनाई ॥ निज आसनके बीचसिंह मुनिको तिष्ठाई ॥ २०५ ॥ पाखि जोड़ विनती करैं नरपति प्रेम बढ़ाय ॥ धन्य हमारो भाग है तव दर्शन जो पाय ॥ तव दर्शन जो पाय शुनत द्विज कोप कराये ॥ कहा भूपको गर्वमाहि मम चोर

भगाये ॥ सुन ब्राह्मणके वचन नरेन्द्र भयो समझाई ॥
मम दर्शनको फलतमाव बन्धन खुलजाई ॥ २०६ ॥

॥ दोहरा ॥

यह प्रकार भूदेवको सुनता दयो बुझाय ॥ यो जन्मा-
न्तर पापते धनको गर्व कराय ॥ २०७ ॥

॥ रसावल छन्द ॥

बहुता करि मैदान विप्र सन्तुष्ट रखावत ॥ यह
गरीब पर नाथ रोष असकाहि करावत ॥ सुनत वचन
मुनिराज कोपकरिताहि बतावत ॥ दान पुण्य
करिबोल भूप अभिमान दिखावत ॥ २०८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन भूमीश्वरके वचन भूस्वामी भयपाय ॥
तब कौशिक नृपको भयो झूठीबात बनाय ॥ झूठी-
बात बनाय भूप मुनिके हरषाये ॥ मनमो तेगा
राखगाधिसुतोगरसाये ॥ सुन भूरी भूमीन्द्र नाम तेरो
मैसावैं ॥ दे मुझको कछु दान आप सन्तुष्ट करावैं
॥२०९॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुन नरेन्द्र मनमो हरषाये ॥ कहा नाथ लेमी
क्या चाये ॥ तब कौशिक तिनको बतलावैं ॥ जो
वयवाचक भूप करावैं ॥ २१० ॥ तो से कछूं तुझे

समुझाई ॥ शुन भूभुज तब सत्यकराई ॥ जो बोलें सो दान करावें ॥ तब गाधिज नृपको बतलावें ॥२११॥ दान लैनं धरणी मै आये ॥ भूप अबूझ न बूझ शकाये ॥ लैकुश कर सङ्कल्पकराई ॥ तब दखिणा माग्यो मुनिराई ॥ २१२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शीघ्र बुला आमत्यको भणे भूप समुझाय ॥ सप्त भारद्रुत स्वर्णके दीजे मुझको लाय ॥ दीजे मुझको लाय शुनत पारीषदधाये ॥ कञ्चन सागरभार तोल दीनाद्रुतलाये ॥ लै कुशको कर भूप भणे द्विजको हरषाई ॥ पढ़ो शीघ्र सङ्कल्प मुनो दखिणा यहलाई ॥ २१३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत वचन ब्राह्मणमुशकाये ॥ बोलें भूभुजको समुझाये ॥ काको हेमन दान करावें ॥ अपनो ठाटक भूपबतावें ॥ २१४ ॥ तबगाधिज निज फन्द चलायो ॥ जब धरणी नृपदान करायो ॥ वसुधासहित महलमैपाए ॥ तिसमो दौलत औनरहाए ॥ २१५ ॥ यामे क्या अधिकार तुम्हारा ॥ भूमि भवन धनभयो

हमारा ॥ और कहीते चर्व्वुर लाओ ॥ दै दखिणा सन्तुष्ट कराओ ॥ २१६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुनि कठोरमुनि वचनको भूभर्त्ताभयपाय ॥ पथ्य विश्वगाधिज भये मनमो अति हरषाय ॥ मनमो अति हरषाय महीको त्याग करावैं ॥ लैदारा सुत चौप्र छोड़ अवनीकोजावैं ॥ शुनत वचन कर जोड़ विप्रको भूपबलाये ॥ धरा छोड़ यह भृत्य प्रभो बाहर कितजाये ॥ २१७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तव कौशिकमुनि युक्ति करावैं ॥ भूबाहरकाशी बतलावैं ॥ वहां जाय नृप वास कराओ ॥ जातरूप दखिणा दैजाओ ॥ २१८ ॥ शुन धरणी स्वामी कल-पावैं ॥ पाणि जोड़ द्विजको समुझावैं ॥ आज्ञा मुझे धरामरदीजै ॥ वासर स्वर्णसिन्धुमो लीजै ॥ २१९ ॥ भला भला भूदेव बलावैं ॥ लैदारासुत भूपसिधावैं ॥ हरि कौशिकमुनि साथ सिधाये ॥ पहुचे नृप काशीमो आये ॥ २२० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

जब वासर सागरभये तब भुगता घबड़ाय ॥ राणीसे पूछन लगे जोवन नयन भराय ॥ जीवन

मथन, भराय प्रिया मुझको बतलावैं ॥ क्या कोनामे पाप कष्ट जाते यह पावैं ॥ हिरण्य हेतु भूदेव नाथ काशीतकै आये ॥ क्या दे कविको करों तुष्टतिनको मैजाये ॥ २२१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुन राणी कर जोड़ चलावैं ॥ मुझको विक्रय-नाथ करावैं ॥ सोधन लेशोधो निज करजो ॥ जो प्रभु कोहोवै यह मरजो ॥ २२२ ॥ सुन भूरो भुनता हर-षाये ॥ लैभार्य्या गुदड़ोमो आये ॥ भयौ भूपदाशी लेसोई ॥ निरख एकत्र नारिनर होई ॥ २२३ ॥ तिनमो ब्राह्मण भूमि रहाये ॥ सो राणीका मुल्य कराये ॥ कनकभार चुकता युग कीना ॥ देकसुनदाशी वह लीना ॥ २२४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

राणीको लै विप्र जब गृहको करैं पयान ॥ रोवैं आंचल सुतधर पुस्कर मीन समान ॥ पुस्कर मीन समान पश्य भूपति कलपावैं ॥ तब राणी कर जोड़ विप्रको भाष सुनावैं ॥ बिना मुल्य यह भृत्य आप लीजै मुनि राई ॥ तब धरणीश्वर भयो सुनो दासो चितलाई ॥ २२५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सेर अन्न मुझसि नितपावैं ॥ सुतका भक्त कहांसि लावैं ॥ तब राणी बोले सुन ज्ञानी ॥ बाहीमो करिहौं गुजरानी ॥ २२६ ॥ सुनत वचन ब्राह्मण हरषाये ॥ ले राणी सुतको गृह आये ॥ अष्टापद भूभृत लेजावैं ॥ दै कौशिक हरिको शिरनावैं ॥ २२७ ॥ अल्प पश्य मुनि कोप कराये ॥ बोलैं भूभुजको धमकाये ॥ भार लोक तव देन कहायं ॥ अब क्यों वेद भार ले आयं ॥ २२८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन करि भूसुरकी वचन भूस्वामी भयपाय ॥ पुन आयो बाजारमो बोलैं लाजतजाय ॥ बोलैं लाजत-जाय धनी नौकर ले कोई ॥ सुन करि कालू डोम आय लेनेको सोई ॥ पश्य भूपको भणै कहो क्या दाम तुम्हारा ॥ कहा मुल्य नरनाथ कनकत्रय भार हमारा ॥ २२९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मुल्य डोमवर कौन स्विकारा ॥ स्वर्णभार लोचन देडारा ॥ ले तपनीय विप्रको दीना ॥ देख खुशो-गाधिज होलीना ॥ २३० ॥ भर्मांन भार लोकमुनि-

पावै ॥ कीना राज अवधिको जावै ॥ इहां भूप कालू गृह आयं ॥ निरखि डोम पूछें मुसकायं ॥ २३१ ॥ कहो सत्य मुझको समुझाई ॥ कासो पुत्र नाम क्या भाई ॥ भूभर्त्ता तव युक्ति करायो ॥ गुप्त नाम अपनो बतलायो ॥ २३२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

जगमे मेरे जनकका नारायण है नाम ॥ हरी- दास मुझको कहैं कीना बड़ अपकाम ॥ कीना बड़ अपकाम दानका गर्व कराये ॥ ताते यतनो कष्ट मुझे जगदीश दिखाये ॥ सुन कालू तव भयो सुनो सज्जन मनलाई ॥ सुतरको लेजाय नित्य गृहलाव चराई ॥ २३३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

घोर ब्रह्म मेंकारवतावैं ॥ प्रेत भूमिमो वासकरावैं ॥ सव आवैं दाहनको जोई ॥ प्रथमत: रोकोगे सोई ॥ २३४ ॥ कर पहिले तासौं लै लीजे ॥ तव मुरदा दाहनको दीजे ॥ सुन सुनता करजोड़ चलाये ॥ करौं सर्व जो आप बताये ॥ २३५ ॥ दृष्टि समीप भूप तव आवैं ॥ करि क्रन्दन कर जोड़ चलावैं ॥ विष्ठा मुत्र छोड़ जब जागे ॥ बाहर त्याग करो बड़ भागे ॥ २३६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुनत सर्व पोविन भये शुन नरेन्द्र चित-चाय ॥ जोनिदेश मुझको करो सोकरिहौं मैराय ॥ सो करिहौं मैराय चित्तमो धैर्य्यकरावैं ॥ कीना तुझसे सत्य प्राण अवताहिं धरावैं ॥ आजतलक भूदार परख माने सोभाई ॥ जाको नाहिं प्रतीति भवन देखै सो आई ॥ २३७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन महीप अतिशय हरषाये ॥ डोमवेश तन-मध्यधराये ॥ प्रेतभूमिमो भवन बनावैं ॥ डोमकार प्रारम्भ करावैं ॥ २३८ ॥ राणी विप्र सदनमो जाई ॥ होदाशी दाशत्व कराई ॥ सेर अन्न वाड़वसे पावैं ॥ तिसमो चतुपाव सुतखावैं ॥ २३९ ॥ पाव अन्न राणी नितखाई ॥ ताते जीर्ण शरीर कराई ॥ पश्च अग्रजन्मा बतलावैं ॥ भाग पुत्र तेरो नितखावैं २४० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कलते सुतको भेजिये काननमो वह जाय ॥ पुष्प तोड़लावैं भलो अर्चैं देव मनाय ॥ अर्चैं देव मनाय अन्न मुझसे निजपावैं ॥ शुन राणीजी भयो पुत्र कलसे

समझावें ॥ जो शासन जब होय करै धर्मक मुनि राई ॥ सुन भूसुर हरखाय प्रगी सुतसे बतलाई ॥२४१॥

पादा कुलक छन्द ॥

सुमन तोड़ घटवोसि लावें ॥ मुझसे अन्न आपनो पावें ॥ सुनत वचन बालक हरषाये ॥ गहन प्रसून तोड़ने धाये ॥ २४२ ॥ वह भी बाग रहा वह मनिका ॥ राज पाटलौना जो इनका ॥ पुत्र कुसुमजेने नितजावें ॥ शाखादल सब तोड़ गिरावें ॥ २४३ ॥ गाधिज दिवस आतमा धाये ॥ निरख भग्नद्रुम कोप कराये ॥ कहा घनीकह कौन खपाई ॥ ताड़ा मुनिवरध्यान लगाई ॥ २४४ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

अवधिकन्त सुत धायकी विटवीदयो खपाय ॥ क्रोधहोय गाधिज भनै सुतको शापघलाय ॥ सुतको शापघलाय अहर्मुख जो पुनधावैं ॥ क्यों तोड़ै सुत अगम घहीताक्रोधरिखावैं ॥ प्रगेहोत युवराज फूल तोड़ै क्यों आए ॥ त्यों आकारिषी डस्यो सर्प ताको करधाए ॥ २४५ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

प्राण त्याग युवराज करायो ॥ प्रहर पाछि वेला चढ़ि आयो ॥ तब द्विज मनसोग्रवढ़ाये ॥ कारण

बावन पुत्र नहिं पाथी ॥ २४६ ॥ राणीसे पूछें बुलवाई ॥ क्या कारण सुत देर कराई ॥ तब राणी द्विजको बतलावें ॥ जो निदेश मुनिसे मैं पावें ॥ २४७ ॥ आकरिके वन खोजकराऊं ॥ लैगातजमुनिवरद्रुत आऊं ॥ शुनत अयजाती बतलावें ॥ वेग खोज अङ्गजको लावें ॥ २४८ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

शुनत वचन भूअमरके राणी प्यान कराय ॥ पन्थ सबको पछ्यते पहुंचीं घटवो आय ॥ पहुंचीं घटवो आय मृतक अङ्गजको पाई ॥ लैकरि गोदी भवै मुण्ड भूमी पट काई ॥ धर्म करत जगदीश कष्ट यतनो दिख आये ॥ भस्म करौं निजगात यदा सुत साथ जलाये ॥ २४९ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

ऐसे भणरोवें कलपाई ॥ तिनका शोक लिखा नहिं जाई ॥ धर्म हेतु यतनो दुखपावें ॥ स्वामी गातज त्याग करावें ॥ २५० ॥ रोरो के शव गोद उठाई ॥ लैसुतको सम्भनसो आई ॥ पश्च विप्र शवको कलपायो ॥ राणीको परवोधकरायो ॥ २५१ ॥ जन्म लेन ते मरणा होई ॥ मरणे ते जन्मै पुन सोई ॥

पित्र गहन सुतको लेजायो ॥ अत्यकार भवका करि आयो ॥ २५७ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

तब राणी ले पुत्रको पित्र भवनमो जाय ॥ करि क्रन्दन लोटैंवहां पश्च कष्टसुरपाय ॥ पश्च कष्टसुर-पाय भूप पहुंचे तब आई ॥ कारमो मूशलधार कहा राणीको भाई ॥ प्रथमतः करदेहु पुत्र दाहन तब कीजे ॥ शुन राणी करजोड़ भणै तुझको क्या दीजे ॥ २५३ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

नारायण कोना है दाणो ॥ कर तेरो कितसों मेलाणो ॥ तब भुनता तिनको वतलाये ॥ मुझको भगवत दाश वनाये ॥ २५४ ॥ कर प्रभुका नहि छोड़ शकावें ॥ और कहीं अवको लेजावें ॥ शुन राणी मनमो भयपाई ॥ धोती अर्द्ध चीरके लाई ॥ २५५ ॥ ताको लेभूमीश्वर आयो ॥ करि विलाप राणी उत-गायो ॥ कान्त कहां परवास करावें ॥ आत्मज निरख आप निजजावें ॥ २५६ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

शुन राणीके वचनको भूस्वामी द्रुतपाय ॥ देप्रबोध तिनको भणै क्यों पलो ललपाय ॥ क्यों

पती कलपाय भये राखी कलपाई ॥ क्या मुझको हरि कौन डोम मुख डांसकराई ॥ शुनि विलाप मुनीन्द्र रोय तिनको समुझावें ॥ सोमदत्त तब जनक नाम सब्या तब गावें ॥ २५७ ॥

पादाकुल छन्द ॥

करि परिचय तुझको मैलाये ॥ पुत्र नाम रुहि-दास रखाये ॥ धर्म करत दुखको मैपाई ॥ गाधि पुत्र कीना छल आई ॥ २५८ ॥ राजपाट मेरो लैलीना ॥ तुझे बेच दक्षिणा देदीना ॥ शुन राखी पति औरतकाई ॥ शीर्ष चिन्ह देखन वह पाई ॥२५९॥ मन मनमो राखी हुलसावें ॥ प्रेम उदक लोचनसे जावें ॥ स्वामीसे पूछें कलपाई ॥ तो मुझको क्यों नाथ सताई ॥ २६० ॥

कुंडलिया छन्द ॥

करकी कारण कान्त मम क्यों मुझको दुख दीन ॥ क्यों करि मेरे घटहि चोरवसनको लीन ॥ चोर-वसनको लीन भूप भावें समुझाये ॥ धर्म हेतु यह कर्म प्रियां कीना मेपाये ॥ स्वामीका कर छोड़ करो अपनो मेकाजा ॥ अन्त बचावे कौन शमन देवें जब साजा ॥ २६१ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

तातें पहिले गुप्त रहाये ॥ जैकरको परिचय बतलाये ॥ शुन कारण राखो हरषाई ॥ कोन प्रणाम चरण मोषाई ॥ २६२ ॥ तब राजा आत्मजको पाये ॥ लेगोदी रोवें कलपाये ॥ कई लग तिनका शोक लिखायो ॥ ग्रन्थ बढ़नतें अधिक डरायो ॥ २६३ ॥ चिता निया कर भूप बनाये ॥ तिह लै भार्य्या सुतजाये ॥ जब देवें पावकको लाई ॥ धर्मराज पहुंचे तब आई ॥ २३४ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

पार्थिवको समुजावही समवर्त्तिन बतलाय ॥ क्यों वैश्वानरमो जरो सुतमें देहु जिलाय ॥ सुतमें देहुं जिलाय पश्चिको भूप सुताये ॥ सुतको मस्तक पाणि प्रसन्न दे मन्त्र पढाये ॥ प्राणदान वह पाय धर्मको माथ निवाई ॥ शुन कालू यह हाल भयो भुनलाको आई ॥ २६५ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

मै निर्व्वोध न ताडुमकाए ॥ कुल करिकै सेवक गृह आए ॥ क्षमाकरो अपराध हमारे ॥ मै शरणागत नाथ तुम्हारे ॥ २६६ ॥ शुन नरेन्द्र तिनको समुझावें ॥

भूख नाम नहिं मेटसकावैं ॥ तुम स्वामी मैं दास तुम्हारे ॥ हांस करो चसकाहि हमारे ॥ २६७ ॥ अब कौतनमो प्राण धराऊं ॥ तब लौ सुयश प्रभो तव गाऊं ॥ क्यों सेवक भय मोहिंलजावे ॥ चस कहि कोटकोट समुझावें ॥ २६८ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

सुन धरणीश्वरकी वचन डोम भये करजोर ॥ हाटकका दावा नहीं कछो नजर मैं तोर ॥ करो नजर मैं तोर नहीं भुज मोअकरावें ॥ सब है तव घरवार जौन चाहे खरचावें ॥ सुनत मेदिनी कन्त-नुती कौमा पुन भाई ॥ तत्तकाल द्विजराजतीन पहुंचे उत चाई ॥ २६९ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

मोल जौन राणीको लीना ॥ सो निदेश सव्याको दीना ॥ कन्त सङ्ग प्रस्थान करावैं ॥ सुन भुमीन्द्र करजोड़ चलावैं ॥ २७० ॥ विप्र पंश जो ग्रहण करायं ॥ चन्त कष्ट भूरी सोपायं ॥ सुन ब्राह्मण बोलैं हरषाए ॥ राणीका कङ्कणखोलाए ॥ २७१ ॥ तव राजा मनमो हरषावैं ॥ देवकुंवर राणीकी लावैं ॥ सेवक विश्वामित्र पठाई ॥ ताते दास सर्वं मुनि पाई ॥२७२॥

कुण्डलिया छन्द ॥

शुनत आगमन धर्मको गाधिपुत्र हरषाय ॥ लेसिबकाणा साथमो प्रेत भूमिमो आय ॥ प्रेत भूमिमो आय भूपको भयो बुझाए ॥ दीना तुझको राज राज कौने गृह जाए ॥ शुन भुनता अति हर्ष विप्रको शीर्ष निवाई ॥ करयो अवधि प्रस्थान प्रजागण नजर कराई ॥ २७५ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

राजा राजसूय मख कीना ॥ दान बहुत बाड़-वको दीना ॥ कछु वासर सुखभोग कराये ॥ अङ्गजको गादी वैठाये ॥ २७४ ॥ स्वर्गजानको कीन तयारी ॥ पत्नी सहित सखागण सारी ॥ सारमेय आखू भुक साथं ॥ चले सर्व लेकरि नर नाथं ॥ २७५ ॥ स्वर्ग निकट पहुंचे जब जाए ॥ तब केशव नारद बुल-वाए ॥ भयो प्रभो मुनिको समुझाई ॥ सत्ववचय भूरी नृपलाई ॥ २७६ ॥

कुंडलिया छन्द ॥

जो ताके गृहमोंहि खानपीतु अरुमूस ॥ सो सब लेआवत इहां कछु न विचारयो हूस ॥ कछु न विचारयो हूस नाकको भ्रष्ट करावें ॥ ऐसोकोजेयुक्ति

भूप जाते नहिं पावैं ॥ सुनत वचन करजोड़ विप्र प्रस्थान कराये ॥ रूपको दर्शन दीन भूप पदमो शिर-नाये ॥ २७७ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

मुनिवर आशीर्व्वाद करायं ॥ भूभुजसी पूछैं सुख-कायं ॥ कहो पुण्य अस कौन कराये ॥ जाते गात सहित इत आये ॥ २७० ॥ भूप छन्द नहिं ताङ्-बतावैं ॥ पुण्य पापको हर्ष बतावैं ॥ ज्यों सुखते बोलि पुण्य राजं ॥ त्यों स्यन्दन नीचेको भाजं ॥२७९॥ तब मुनिका छल भूप बखायो ॥ सुखको अपने वन्द-करायो ॥ तीन स्थान तिष्ठा रथ आई ॥ जौन स्थान सुख भोग कराई ॥ २८० ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

गयो महीक्षरदिव महीं मृत्युलोक नहिं पाय ॥ मृत्यु स्वर्गके मध्यमो डेरादयो लगाय ॥ डेरादयो लगाय ॥ निरख निर्जरकलपावैं ॥ फौज सर्व क्या खाय अन्न विन प्राणतजावैं ॥ भयो खालसा सिंह प्रभो सुरको वतहाये ॥ जगमो जो हैं कृपण वित्त तिनका बलखायें ॥ २८१ ॥

अथ राजा सगरवंशोपाख्यान ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

सगरवंश अब भणतहौं शुनौ शन्त मनलाय ॥ जाको पढ़ि सङ्कटकटै यमको दण्ड नशाय ॥ यमको दण्ड नशाय मात गङ्गाको लावै ॥ निज पित्र नको तार और बयलोकतरावैं ॥ धन्य गोत्र जगमाहिं सगरको देखन पाये ॥ पौड़ो पापी हेतु विदिवको जौन बनाये ॥ २८२ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

अवधि राज कहिंदाश करावैं ॥ रूपवन्त अर्भक जन्मावैं ॥ सगर नाम तिनका रखवायो ॥ जब वह धर्मकर्म मो आयो ॥ २८३ ॥ तिनको राजतख्त तिष्ठाये ॥ आप भूप सुरलोक सिधाये ॥ सगर इन्द्र समराज करावैं ॥ पुत्र हेतु मनमो कलपावैं ॥ २४ ॥ तप करणे काननमो आये ॥ विधिपूर्वक प्रारम्भ कराये ॥ महादेवका ध्यान लगावैं ॥ वरदैनैत्रय लोचन आवैं ॥ २८५ ॥ हर्ष भूपकी भोम चलाये ॥ वर मागी मरजो जो आये ॥ पाणि जोड़ भूपत वतलावैं ॥ पुत्र बहुतके जनक कहावैं ॥ २८६ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

शुनि नरेशकी वचनको भर्ग्ग भुतेश हंसाय ॥ सहस्र साठ सुतहोय तब शुन भुनता हरषायं ॥ शुन भुनता हरषाय भवन प्रस्थान कराये ॥ भेटैं पतिको पथ्य युग्मराणी हरषाये ॥ बहु वासरकी वाद पास भर्त्ताको पाई ॥ कीनारोपण बीज भूपधरिधरिकी भाई ॥ २८७ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

मास दिशा पूरण हो आए ॥ पुत्रकेशिनी प्रसव कराए ॥ कामदेव समरूपलखाई ॥ नाम पुत्र असमञ्जरखाई ॥ २८८ ॥ सुमति नाम जो नारिरहावैं ॥ तौन अलाबू प्रसवकरावैं ॥ तूंवा निरखिनरेन्द्र अलाए ॥ क्या भङ्गड़ दोनावर आए ॥ २८९ ॥ क्रोध होय तोड़ा जव लाऊ ॥ चौठौ सम अर्भक बहु पाऊ ॥ चन्द्रहीन थे साठ हजारा ॥ रूपवन्त दुर्बलतनधारा ॥ २९० ॥ पथ्य सगर तब युक्तिकराये ॥ तैल तुलापर पुत्र सुताये ॥ वहां महेश्वर कोप कराई ॥ भूस्वामीको शापअलाई ॥ २९१ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

दुष्टमुखे भङ्गड़ कहा धनको गर्वकराय ॥ पुत्रशोक तुझको पड़े जव यौवन सुतपाय ॥ जब यौवन

सुतपाव पुवका व्याह करावैं ॥ इन्दु सङ्ग सब भस्म पश्च मस्तकपटकावैं ॥ असन्तपको देशापतपस्यारम्भकराये ॥ ले अङ्गज सब भूपमनैमनहर्ष वढ़ाये ॥२९२

पादा कुलक छन्द ॥

वर्ष प्रभाकर सुत हो आवैं ॥ सगर सर्वका व्याह कराव ॥ बहुसहस्र साठ लै आये ॥ पश्च भूप अतिशय हरषाये ॥ २९३ ॥ ज्येष्ठ पुत्र असमञ्ज रखावे ॥ चन्द्र तीन वालकजनमावैं ॥ अंशुमान शुभनाम रखाये ॥ जब वह अष्टवाण हो आये ॥ २९४ ॥ तब चितमो असमञ्ज विचारा ॥ हैगा यह संसार असारा ॥ क्यों करि इनसे प्राण वचावैं ॥ शोच शोच यह युक्ति करावैं ॥ २९५ ॥ लूटैं नित्य प्रजाको जाई ॥ लै धन को गृह अग्निलगाई ॥ ताते सगरभूप घवड़ाए ॥ तर्ज्जं मर्ज्जं सुतको वतलाए ॥ २९६ ॥

कुंडलिया छन्द ॥

बहुतवार तुझको कहा तूं समुझै नहिं पूत ॥ अब निदेश बनवासका होय रहो अवधूत ॥ होय रहो अवधूत शुनतसाधू हरषाये ॥ मात पिताको चरण आपनो शीष लगाये ॥ भयो खालसा सिंह हर्ष अङ्गलमों आई ॥ कीना तपस कठोर निरखिमङ्गल सुरगाई ॥ २९७ ॥

अथ राजा सगरका अश्वमेध और चन्द्रहीन साठसहस्र पुत्रका मृत्यु।

कुण्डलिया छन्द ॥

पश्च सगर सब पुतको महावीर बलवन्त ॥ मनमो किया विचारसो सुरपतिका करि अन्त ॥ सुरपतिका करि अन्त स्वर्गमो राजकरावैं ॥ प्रथमत: करिमेध मृत्युमो नाम रखावैं ॥ असविचार नरनाथ अश्व सुन्दरमगवाये ॥ विधिपूर्वक करि यज्ञ सर्व सुतको समुझाये ॥ २९८ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

लै तुरङ्ग प्रस्थान कराओ ॥ जीतरिपूगणको लै आओ ॥ शुनत सर्व अङ्गज हरषाये ॥ लै अर्वन प्रस्थान कराये ॥ २९९ ॥ नगर नगरमो शोरमचाई ॥ ब्रामप्राय भुनता सब आई ॥ यथाशक्ति सन्मान करावैं ॥ दीयन घोटक बामणकावैं ॥ ३०० ॥ तब सुरकन्त बास पतिपायो ॥ स्पष्टूपी यह हालजनायो ॥ शुन पद्मासन युक्ति बताये ॥ अश्वमेधको लाव चुराये ॥ ३०१ ॥ शुन पुरुहुत मनमो हरषाई ॥ भाड़-

वारी प्रारम्भ कराई ॥ अश्वकाल सब छूटि कराये ॥ तब वञ्चित पहुंचे द्रुत पाये ॥ २०२ ॥ पाइ अश्वकी लीन चुराई ॥ बांध्यो कपिल मुनी एकजाई ॥ जब जलमुच जब त्यागकराये ॥ तब खोजें वाजिनसुत पाये ॥ २०३ ॥ खोज सर्व भूको यम भाई ॥ खोदैं धरणी कोप कराई ॥ युगपलमो यह सिन्धुबनाये ॥ पहुंचे अधोभूमिमो जाये ॥ २०४ ॥ सप्ति सहित मुनिकी सुतपायो ॥ भ्रात परस्पर गर्व्व बढायो ॥ तस्कर सहित तुरग यह पाये ॥ द्विजको चरण प्रहार कराये ॥ २०५ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

मुनिका चरण प्रहारते ध्यान भङ्ग होजाय ॥ देखैं बालक सर्वको मनसो कोप कराय ॥ मनसो कोप कराय भस्म अर्भक होजावैं ॥ ध्यान धार सब हाल विप्र तिनका पुनपावैं ॥ भयौ खालसा सिंह बहुतजाकी मदभाई ॥ सौगारह होजाय सगर सुतकी समझाई ॥ २०६ ॥

अथ राजा सगर अपाने पुत्रनकी खोजनेके वास्ते निज पौत्र अंशुमानको भेजा ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

अब्दरदन गणपति भयो तब भूभृत घबड़ाय ॥ सोंच करैं मनकी विषे क्यों अङ्गज नहिं आय ॥ क्यों अङ्गज नहिं आय कहां पर रहि भुलाये ॥ अंशुमान को भयो सगरभूरी कलपाये ॥ जाय करो भूखोज पौत्र प्रस्थान कराई ॥ उदय अस्त लौं महीतत्त्व कौना भलजाई ॥ २०७ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

अंशुमान कत हूं नहिं पाये ॥ तब सुरङ्गकी मध्यसिधाये ॥ पूर्व दिशा पहुंचे जब आई ॥ कुञ्जर नीलवर्ण लखपाई ॥ २०८ ॥ रसादन्तसेयामरखाये ॥ पश्च पुत्र द्रुत शीर्ष निवाये ॥ पाणि जोड़ पूछैं हरषाई ॥ नाथ विलोक सगर सुतपाई ॥ २०९ ॥ गजविहर्ष तिनको बतलाये ॥ वह मारग प्रस्थान कराये ॥ सुनि करि अंशुमान हरषावैं ॥ तौन मार्ग

उत्तर दिश आवैं ॥३१०॥ वारणश्वेत पश्च उत पाये ॥ भूमिरदन परथामरखाये ॥ ताको भी पद्मो शिर नाई ॥ पूछैं जोड़ भुजादलभाई ॥ ३११ ॥ सगरवंश-देखन प्रभुपाये ॥ शुन प्रश्निन तिनको बतलाये ॥ वह पथ दे देखामैंजाते ॥ शुनत पता सुतबर हर-षाते ॥३१२॥ सोरस्ते पश्चिम दिशजावैं ॥ द्विरदरक्तावर्ण उतपावैं ॥ मही दशन से थामरखाई ॥ निरख पुन तिनको शिरनाई ॥ ३१३ ॥ जोड़ प्रवेष्ट भणे पुन आये ॥ सगरगोत्र देखन प्रभुपाये ॥ कहा अनेकप ताहि बुझाई ॥ पूरब दक्षिण मध्यसिधाई ॥३१४॥ शुन सुत उत प्रस्थान करावैं ॥ जब दन्तिन यह मुण्ड हिलावैं ॥ भूमि कम्पताको बतलायं ॥ पूरब दक्षिणकी दिश आयं ॥३१५॥ वहां कपिलमुनिको सुत-पाये ॥ और अश्व निज निरख डराये ॥ करि क्रन्दन मुनिको शिरनायो ॥ द्विज वह आशीर्वाद करायो ॥ ३१६ ॥ शन्त स्वभाव निरख हरषाये ॥ पूछैंताहि निकट बैठाये ॥ कारणकवन इहां सुत आयो ॥ अंशुमान कर जोड़ बतायो ॥ ३१७ ॥ सगर जनक खोजन प्रभुआये ॥ शुन मुनिवर तिनको बतलाये ॥ मै सुतको सब भस्म कराई ॥ ताते प्रेतयोनि वह पाई ॥ ३१८ ॥ शुनिके अंशुमान कलपावैं ॥ तब

मुनिवर तिनको समुझावैं ॥ शन्त मरे तासु दुख माहीं ॥ मरे अशन्त पाप कटिजाई ॥ ३१९ ॥

कुंडलिया छन्द ॥

सुन साधूके बचनको सुत पूछैं शिरनाय ॥ क्यों करि मम पितृव्यका प्रेतयोनि वह जाय ॥ प्रेतयोनि वह जाय मुनी तिनको बतलावैं ॥ मृत्यु लोक है पुत्र इहां गङ्गा जो लावैं ॥ भये खालसा सिंह शन्तजगकी हितकारी ॥ कहा पित्र तब तरैं पाय गङ्गाको वारी ॥ ३२० ॥

अथ श्रीमती गङ्गादेवीका जन्म और महाराज सगर लै तीन पुरत श्रीगङ्गामाताके लानेको गमन और पतन तथा श्रीभगीरथ का जन्म ॥

कुण्डलिया छन्द ।

कपिल मुनीकी वचन सुनि अंशुमान करजोर ॥ पुन पुछैं वह शन्तसे गङ्गाका प्रभु तीर ॥ गङ्गाका प्रभु

तोर कहां पावैं मै भाई ॥ काको गङ्गा कहै और कितसे वह आई ॥ भनै हर्षमुनिराज शुनो सज्जन चितलाये ॥ एक समय भगवान खूब आनन्द मचाये ॥ १ ॥३२१॥

पादाकुलक छन्द ॥

शुनत चन्द्रशेखर चलिआवैं ॥ मग्नहोयकरिनृत्य करावैं ॥ हरिहरिहरिडमरूमोंबाजे ॥ सिंहारामनाम भणिगाजे ॥ ३२२ ॥ उग्रवाणमुख तेगुण गाये ॥ कमलाकान्त निरखहरषाये ॥ ताते द्रव्यमईहोजावैं ॥ तीन तरलगङ्गाकहैलावैं ॥ ३२३ ॥ द्रुहिणकमण्डलमेंभरभाई ॥ राखोत्रह्मलोकमोजाई ॥ तिनको जो सुतवरलैआवैं ॥ स्वर्ग सगर अभिजनतोजावैं॥३२४

कुण्डलिया छन्द ॥

तयपथगाकाजन्म शुन अंशुमानकरजोर ॥ वरमा ग्योमुनिराजसे स्वर्णनदीकोमोर ॥ स्वर्णनदीकोमोर वंशजाकरिवेलावैं ॥ बोलेविप्रतथास्तुमहीपजअौषं निवावैं ॥ लेअश्वन ततकाल आपनेगेह सिधाये ॥ अन्वशक्कासवहालपितामहको वतलाये॥ ३२५ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

कहासगरतवहीमैजाना ॥ इश्वाविधुन्तुदमोजन्मांना ॥ असकहिहाहाकार कराई ॥ क्रन्दनसगरकरत कालपाई ॥ ३२६ ॥ कहंलगतिनका मोकलिखावैं ॥

राजपाट गृहनारितजावै ॥ अंशुमानकोतिलककराये ॥ आपघोरवनभूपसिधाये ॥ ३२७ ॥ अमरनिम्नगाकारण जाई ॥ तपकठोरप्रारम्भकराई ॥ तपकरिभीष्मप्रसून हिपाये ॥ गातछोड़सुरलोकसिधाये ॥ ३२८ ॥

कुंडलिया छन्द ॥

अंशुमानयुतअवधिमो निजउछाहकराय ॥ तातै सुतवरखीभयो नामदिलीपधराय ॥ नामदिलीपधराय पुत्रजबहीयसम्हाला ॥ तबताकोदैराजगयोवनमोभूपाला ॥ कीनातपसकठोरपश्यसुमनसहरषाये ॥ अद्ध्य-युतवितजायभूपगङ्गानहिंपाये ॥ ३२९ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

शोकपायतनत्यागकराई ॥ पहुंचेद्रुहिणलोकमो जाई ॥ ताकेगुरुदिलीपरहाये ॥ तबनयुगलनिजव्याह कराये ॥३३०॥ कछुकदिवससुखभोगकराई ॥ कन्या-पुत्रकछुजनहिंपाई ॥ राणीकोगहीबैठाये ॥ तपकरणेका-ननमोपाये ॥३३१॥ अद्धयुतराजातपकीना ॥ अना-हारतनकोदुखदीना ॥ तौभीसुरनदिकोनहिंपाये ॥ लोकविदग्धतनत्यागसिधाये ॥ ३३२ ॥

कुंडलिया छन्द ॥

विबुधलोकबीचमोसुरगणकरैंविचार ॥ अब जिनकेआवासमेधरैरामअवतार ॥ धरैरामअवतार

विधातायुक्ति कराई ॥ शंभू के गृहआयभये तिनकी सनु-
भाई ॥ करी कोप्रश्नपदेशपुत्ररानीकेहोवैं ॥ भोगकरैं
पक्षसोतंकन्तकान्ताजससोवैं ॥ २२३ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

शुनशङ्करप्रस्थानकराये ॥ पहुंचेरानीकेगृहपाये ॥
दोजेभिक्षागऊं चलावैं ॥ लैतंडुलरानीपगपावैं ॥२२४॥
निरखनीललोहित बतलाये ॥ भिक्षाद्युतदेनेकोआये ॥
वरमांगी मरजोजोमाई ॥ शुनरानी बोलींशिरनाई ॥
२२५ ॥ वरदेनेको नाथपठाये ॥ दोजेतपमरजोजो-
आये ॥ शुनत उग्रवरदानपठाई ॥ पुत्रवतीहोवो-
गोमाई ॥ २२६ ॥

कुंडलिया छन्द ॥

शुनत्र्यम्बककीवचनकोरानी आनन्दनवीन ॥ नारा
यण विधनाकरीक्यामुझकोवरदीन ॥ क्यामुझको
वरदीनसव शुनके बतलावैं ॥ रतीकरीपक्षसोत
पुत्रतातेजन्मावैं ॥ शुनरानी यहबात भगीं मनमोघर-
माइं ॥ लैभिक्षा निजभवनगमंप्रस्थानकराइं ॥ २२७॥

पादाकुलक छन्द ॥

पुष्पवतीरानीजबहोवैं ॥ संगसोतलैकरितवशोवैं ॥
कैलपरस्परकरचालनाई ॥ तातेगर्भवतीहोजाई ॥२२८॥
मासदीकपूरणहोपाये ॥ अंगजसुन्दरप्रसवकराये ॥

अस्थीतनमोनाहिंरहाई ॥तातेगातजदीनबहाई ॥३३९॥ लेटाश्रीपोकानसुतजावें ॥ पश्यवशिष्टमुनीवरपावें ॥ ध्यानयोगतेकौनविचारा ॥ अर्भकपरमपुरुषअवतारा ॥ ३४० ॥

कुंडलिया छन्द ॥

लैश्रावककोगोदमो मुनिवरदियाशुताय ॥ तत्त कालआयेमुनी अष्टावक्रकहाय ॥ अष्टावक्रकहायपश्य बालकचरणावें ॥ कृपादृष्टिकरिविप्रवक्रबाणीवतलावें ॥ जोकीनाममश्वांगगाततवजाय नशाये ॥ यद्यपिमें-सहिरूपकष्टअवहोतबजाये ॥ ३४१ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

अपोगंडमुरगातधराये ॥ निरखतपोश्वरध्यानल-गाये ॥ ध्यानयोगतेकौनविचारा ॥ शिशुवरमहापुरुष अवतारा ॥ ३४२ ॥ होप्रसन्नद्विजगोदउठाये ॥ दीना-राणीकोगृहलाये ॥ आत्मजरूपनिरखहरषाई ॥ दान पुण्यबहुभांतकराई ॥ ३४३ ॥ खबरपाय बाड़व गण आये ॥ लैकञ्चन आशीसकराये ॥ नामकरण काकीज विचारा ॥ भगभगतेअर्भकअवतारा ॥ ३४४ ॥

कुंडलिया छन्द ॥

ताते ख्यातीविप्रगण भाष्योभागीरथ्थ ॥ महापुरु-षयहलोकमोहोवैगासमरथ्थ ॥ होवैगासमरथ्थ स्वर्ग-

का राहबनावैं ॥ निजपितरनको तारघोर बयलोक तरावैं ॥ भयेखालसासिंहयुगलरायोहरमाइ ॥ अमरावतिविमध्य अमरमंगल सबगाइ ॥ ३४५ ॥

अथश्रीभागीरथ छन्दशिव एवंश्री नारायणजी का आराधनाकरिके ब्रह्मलोकसेश्रीगङ्गादेवीकी प्राप्तहोयप्रस्थानकरतेभये ॥

कुंडलिया छन्द ॥

भउद्रवाचाअंगजभयो तबरायोहरमाय ॥ बासर उत्तम शोधके अध्यापनकरवाय ॥ अध्यापनकरवाय बशिष्ट मुनीबुलवाये ॥ वर्षभूमिके मध्यसर्व्वविद्या सुत पाये ॥ तातेहोयोमत्तगर्व्व नहिरोकथकाइ ॥ पाठशालकेमध्य अर्भसेकीनलड़ाइ ॥ ३४६ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

अपोगंड सोकोपकराये ॥ बालजकहिकरिगालि बलाये ॥ भागीरथ लज्जातबपाइ ॥ जननीके पूछें गृह आइ ॥ ३४७ ॥ क्योंकहिमै निजगातधराये ॥ जनक

नामकथाजातिरहाये ॥ सत्यवचनबोलीगीमाइ ॥ मरी असत्यगुनत विषखाइ ॥ ३४८ ॥ नवराखी अतिशय शरमावै ॥ कथापुरातन ताहिशुनावै ॥ भयोरवीकुल जन्मतुह्मारा ॥ जिनकी जननसगर अवतारा ॥ ३४९ ॥

कुंडलिया छन्द ॥

अयुतरागतिनकीभये पुत्रमहाबलवन्त ॥ कपिल मुनीकीकोपतेहोयोसबकाअन्त ॥ होयोसबका अन्त प्रेतहोनीकीपाये ॥ तिनकीतारण हेतुसगर तपचोरकराये ॥ पुत्रनयमतकपायकष्ट वैकुण्ठ सिधायो ॥ गङ्गा कोतव पितकोय नहिं लायसकायो ॥ ३५० ॥

पादाकुलक छन्द ॥

ख्यातीकान्त दिलीपरहावैं ॥ जबवह स्वर्गलोकमो जावैं ॥ खण्डपरशुसे सेवरपाइ ॥ घरसौतिनकोनाप खपाइ ॥ ३५१ ॥ तातेसुतवरगातधराये ॥ भागीरथ ख्यातीशुभपाये ॥ मुनिसाखिजअतिशय हरषायो ॥ जननीको आरोड़पलायो ॥ ३५२ ॥ पितवदोनिज तारणकावैं ॥ तोभागीरथ सत्यकहावैं ॥ मुनराखी मनमोभयपाई ॥ करिकन्दनसुतकी समुझाई ॥३५३॥

कुण्डलिया छन्द ॥

राजकाटी सुतपबधमो तपकारणमतिजाव ॥ अन्द भूसतव वयसहै क्योंकरिसुरनदिलाव ॥ क्योंकरि

सुरनदिलाव पित्र आमोनछिपाये ॥ सुनतवचनयुव-राजजोड़करइमि वताये ॥ तवप्रसाद मैं आयमाल गङ्गा कीलावैं ॥ नवभूवनकीतार विष्णुमो नाम रखावैं ॥ ३५४ ॥

पादाकुलक छन्द ।

शुनभूरीराणीघवड़ायं ॥ विप्रभवन युवराजसिधायं ॥ मुनिवशिष्टकोहालजनाये ॥ लेदिखा तिनसेंग्टह आये ॥ ३५५ ॥ युग्मप्रसूपदमों शिरनाई ॥ चरणधोयचरणोदकखाई ॥ पाणिजोड़ वोलैंवालपाये ॥ करौं पितकारजमैंजाये ॥ ३५६ ॥ होप्रफुल्लदोजेंवरमाई ॥ भेंटैंमोलपितकरिआई ॥ शुनराणी सुतकोवतलावैं ॥ चौप्रपुरन्द्राकोलैंआवैं ॥ ३५७ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

ससभणराणी रोयकैआशीर्वादफलाय ॥ दुष्टमंत्र कीजापकरि ग्टहकोत्यागकराय ॥ गृहकोत्याग कराय भूपकाननमोजाई ॥ कीनातपसकठोरद्रुन्द्रका ध्यानलगाई ॥ हायनलोक सहस्रकष्टभूरीजवपाये ॥ तवआखण्डल रीझनिकटदेनेवरआये ॥ ३५८ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

भयो मैघवाहन वरलीजैं ॥ कहैं भूपवरदीन

सटोजे ॥ तुरापाह बोलैं समुझाई ॥ इसयोमम अधिकारनभाई ॥२५८॥ उमाकान्तका ध्यान लगायो ॥ तिनसि सुरापमाकोपायो ॥ शुनत दण्डदाता हरषाये ॥ गिरिकेलाश विषेपुन आये ॥२६०॥ व्योमकेशका ध्यान लगायो ॥ अनाहारभुरी दुख पायो ॥ वीतेअब्दअयुत जब आई ॥ प्रमथाधिप देने वरआई ॥ २६१ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

वामदेव नृपको भयो मनमो प्रीति कराय ॥ जो चाहो सो लेहुवर तव भुनता वतलाय ॥ तब भुनता वतलाय प्रभोव्रजपथगादीजै ॥ भयो भौम शुन पुव तबन ईश्वरसे लीजे ॥ शुनत वचन ततकाल भूप गोलोक सिधाये । कीना तपस कठोर विष्णुका ध्यान लगाये ॥ २६२ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

कोटनाममनित जाप करायं॥नारायणको लोनरिझायं ॥ अब्दतियौतिथिदीकवितायें ॥ वरदेनेकमलापतिआये ॥ २६३ ॥ हर्षप्रभोनृपकोवतलायं ॥ वरमागोचितमोजो-आयं ॥ भूमीस्वरकरजोड़बतावैं ॥ सुरेस्वरीप्रभुहमै-पावैं ॥ २६४ ॥ चक्रपाणिवोलैंमुशकाई ॥ दीनागङ्गा-होयसहाई ॥ ब्रह्मलोक प्रस्थान करायो ॥ उतसे सुर धुनिको लेआयो ॥ २६५ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

असभग नृपको साथलै ईश्वर करैं पयान ॥ पद्मासनकी भवन मो जा पहुंचे भगवान ॥ जा पहुंचे भगवान पद्म ब्रह्मा हरषावें ॥ दैकरिआसन चौप्र मात गङ्गाको लावें ॥ पादपद्मको धोय प्रभोका नमस्याकीना ॥ विष्णुपदोधरि नाम नाथ नृपको दैदीना ॥ ३६६ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

भणेप्रभो गङ्गालेजाओ ॥ पाप विश्वका भस्म कराओ ॥ पतित पावनी गङ्गामाई ॥ ब्रह्मघात गोघात-नशाई ॥ ३६७ ॥ शुनत वचन भूभुज हरषाये ॥ नारायणको शीर्षनिवाये ॥ अमर सिन्धुकोनाथ वताई ॥ करौ निवास त्रिभूवन जाई ॥३६८॥ तब गङ्गा अतिशय घबडायं ॥ भणै मतोगुणको समुझायं ॥ जगमोपापी पाप करावैं ॥ करिमज्जन मुझको दैजावैं ॥ ३६९ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

वह सब मेरे पापका क्यों करि तापनशाय ॥ तब तिन को ईश्वर भणै शुनौ अमरकी माय ॥ शुनौ अमरकी माय शन्त अवगाहन आवैं ॥ तिनके दर्शन कष्ट मात तेरो कट जावैं ॥ तब गङ्गा अति हर्षवाक मञ्जूर कराई ॥ दे महीपको शङ्ख प्रभो बोलें समुझाई ॥ ३७० ॥

पादा कुलक छन्द ॥

शंख शब्दकरि चपसिधावें ॥ पश्चतुभ्के जगदम्बा आवें ॥ शुन महीप तब शीर्ष निवाई ॥ शंख शब्द की मा गर्ज्जाई ॥ ३७१ ॥ दुहिता चरित्र निरख घबड़ाये ॥ भागीरथको हर्ष चलाये ॥ तवप्रसाद त्रियभूवन भाई ॥ वाषद्दीय दर्शन करि माई ॥ ३७२ ॥ क्या भेंटी देवैं मै लाए ॥ चक्रिन पश्च छेहु मम चाए ॥ जगमो चपनो नाम रखायो ॥ धन्यख्याति भागीरथ पायो ॥ ३७३ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

शुन ब्रह्माकी बजनको भूस्वामी हरषाय ॥ पाणि जोड़ विनती करें चतिशय प्रेम बढ़ाय ॥ चतिशय प्रेम बढ़ाय तिष्टस्यन्दन परभाई ॥ दौना चश्व हंकाय शंखको खूब बजाई ॥ भयो खालसा सिंहलोक गङ्गाधरि धावैं ॥ मन्दाकिनि निजनाम स्वर्ग मो मात रखावैं ॥ ३७४ ॥

अथ श्रीगङ्गा माताका सुमेरु पर्व्वतसे चारधारा होकरि तीन धारा तीन समुद्रमों मिली और चौथा धारा पाताल एवं पृथ्वीपर आई तथा ऐरावत हस्तीका अहङ्कारभञ्जन ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

पद्मासनकी भवनसे गङ्गा किया पयान ॥ गिरि सुमेरुकी मध्यमो पहुंचो माता आन ॥ पहुंचीमाता आन निरख निर्ज्जर हरषावैं ॥ करिकरि मज्जन अमर सर्व्व आनन्द करावैं ॥ गिरि सहस्रहै साठ शीर्ष धरणीसे ऊंचा ॥ गोड़ा ताको अहै और योजन षखनीचा ॥ ३७५ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

लक्षचौन असुयोजन जानौ ॥ तामे गङ्गा आयं समानो ॥ शब्द प्रभाकर वासकराई ॥ तब भुनता मनमो घबड़ाई ॥३७६॥ पाणिजोड़ पदमो शिरनाये ॥

करि क्रन्दन बोलैं कलपाये ॥ हेमाद्रो मैं वास करावैं ॥ क्योंकरि मोचपिव मम पावैं ॥ ३७७ ॥ तब गङ्गा बोलैं समुझाई ॥ जानेको मारग नहिं पाई ॥ लिखषर्भकी निकट सिधावैं ॥ तिनसे ऐरावण लै आवैं ॥ ३७८ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

मेरूको वह नागसे सुतवर लेहु चिराय ॥ तब वह पन्था दै चलो पिव वाण तव पाय ॥ पिव वाण तव पाय शुनत भागीरथ धाये ॥ अमरावतिकी मध्य अमर पतिको समुझाये ॥ सुनासोर शुनहाल भयौ अति प्रोति कराई ॥ प्रात जाय मैं देहु रत्नसानू चिरवाई ॥ ३७९ ॥

पादाकुलका छन्द ॥

शुन भुनतामन मो हरषाये । प्रग होत वासव ले आये ॥ ऐरावण तब गर्व्व कराई ॥ भूभुजको भाषै ववराई ॥ ३८० ॥ जो गङ्गा ममनिकट रहावैं ॥ तो मैं चोर शैलको आवैं ॥ शुनकी अवधि कान्त घबड़ाए ॥ सुरापगाकी निकट सिधाए ॥ ३८१ ॥ भला बुरा कछु नाहि बताई ॥ करि क्रन्दन निज होसहराई ॥ निरखि त्रिपथगाताहि बतावैं ॥ क्यों क्रन्दन युवराज करावैं ॥ ३८२ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

शुनि गङ्गाकी वचनको भयो भूप कलपाय ॥ पुत्र होय क्यों करि कहै जोपापो बतलाय ॥ जोपापो बतजाय शुनत माता बतलाई ॥ मै जाना वह बात कहो पामरको जाई ॥ जोमेरो पखढेउ मुण्डकी मध्य सहावैं ॥ तौताकी मैपास दिवसत्रयबास करावैं ॥३८३॥

पादाकुलक छन्द ॥

शुन महीप मनमोदुख पाई ॥ भयो दुष्ट बारणको जाई ॥ शुनपापो दन्तिन ववराये ॥ धरि यावन युग टूक कराये ॥ ३८४ ॥ ताते वेद धारहो माई ॥ वर्णं ओर जा वास कराई ॥ वसू नाम भूधार कहावैं ॥ सोपूरब सागरमोजावैं ॥ ३८५ ॥ भद्रापख संज्ञा कहि लाई ॥ सो उत्तर निधिमो चलि आई ॥ खग्रातो श्वेता नेत्र धरायं ॥ सो अर्णव पश्चिम मो जायं ॥३८६॥ अलकानन्दा वेद कहांवैं ॥ सो वसुधा ऊपरठै आवैं ॥ अङ्गं ढेव तब मात चलाई ॥ लगा दुष्ट पांशन को आई ॥ ३८७ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

लोट पोट कुञ्जरभयो प्राणगयो घवडाय ॥ तब माता पुन औरभो दोना अङ्गं चलाय ॥ दोना अङ्गं चलाय अनेकपदेख डराये ॥ माफ करोजग

मात बोल अरबामत आये ॥ भये खालसा सिंह हृष्ट गुरुदेव मनाई ॥ पायो महकाल भाग आपनो प्राश बधाई ॥ ३८८ ॥

अथ श्रीगङ्गा देवीका कैलाश व पाताल व श्रीमहादेवजीके मस्तक व बसुन्धरा मो भ्रमण एवं श्रीकाशी जीका जन्म और श्रीजह्नु मुनिके जंघासे पुनर्जन्म ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

गिरि सुमेरकी मध्यसे गङ्गा कीन पयान ॥ कैलाश क्ष्माभृत् की विषे पहुंचो माता आन ॥ पहुंची माता आन मही ऊपर जब आवैं ॥ थर थर कारती भूमि वेग नहि सहन शकावैं ॥ अलकानन्दा हर्ष भयो भूवन को धाई ॥ करि क्रन्दन करजोड़ भूप बोलैं तब भाई ॥ ३८९ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

मातबली सह्मनको आवैं ॥ क्यों करि मुक्ति

पित्र मम पावैं ॥ तब गङ्गा तिनको बतलाई ॥ धारि धरा नहिं वेग सवाई ॥ ३९० ॥ जो मन्धू शिवहार धरावैं ॥ तो उर्व्वी ऊपर ह्वै आवैं ॥ शुन प्रणाम मह-राज कराये ॥ गिरिजा पतिका ध्यान लगाये ॥ ३९१ ॥ छायनतपसघोर भूकीना ॥ दर्शन पाय शूल कर ह्वैना ॥ भये भीम सुत पुन क्यों आये ॥ करि प्रणाम तब भूप चलाये ॥ ३९२ ॥ विष्णुपदी विष्णुसे पाई॥ वसुमती नहिं वेग सहाई ॥ जो गङ्गाधर नाम रखावैं ॥ तो जननी धरणी पर आवैं ॥ ३९३ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

शुनत उग्र पति प्रीति करि वैठे जटा पसार ॥ पतितपावनी भीष्मसू पहुंची शीर्ष मझार ॥ पहुंची शीर्ष मझार प्रभाकर वर्ष वितायो ॥ पुन भागीरथ पाणि जोड़ तिनसे बतलायो ॥ कहो मात अब सत्य पित्र कैसे गति पावैं ॥ तब त्रयस्रोतस भये कौन मारग ह्वै आवैं ॥ ३९४ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

शुन भुर्व्वी पति युक्ति कराये ॥ मुखते भोला नाथ चलाये ॥ स्थाणू ध्यान भङ्ग होजावैं ॥ शीर्ष चमका पति निहुरावैं ॥ ३९५ ॥ शर्व्व वृषध्वज ताहि बताये ॥ वर मागो मनजो जो भाये ॥ जोड़भुजाद्वय भूप चलाई ॥

दीजे गङ्गा होय सहाई ॥ ३९६ ॥ कपर्द्द कपर्द्दी कर मोलोका ॥ चोर कुन्ट भीष्मसूदीना ॥ तव चपला पति शङ्ख वजावैं ॥ हरिद्वारमें गंगा आवैं ॥ ३९७ ॥ अवगाहन जो वहां कराये ॥ चतुर्वर्ग फलको सो पाये ॥ धाराओ पाताल सिधाई ॥ भगवति तिनका नाम रखाई ॥ ३९८ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

भीष्म प्रसू हरिद्वारसे जवकोनाप्रस्थान ॥ तीर्थ राजमें मध्यमो पहुंचो माता आन ॥ पहुंचो माता आन निरख निर्ज्जर हरषावैं ॥ यमुना शारदमाहि मात गंगा मिलि जावैं ॥ त्रयवेणो धरि नाम स्वर्गका बाट वनाई ॥ अवगाहन करि मकर अघो अपवर्ग लहाई ॥ ३९९ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

उतसे पुन काशीमो आवैं ॥ तिन की जन्म कथा कछु गावैं ॥ चन्द्र समय शिवकोपकराये ॥ द्विज का मस्तक काटि गिराये ॥ ४०० ॥ ब्रह्म हत्या प्रभु को लागे ॥ रो पति उमाभयो वड भागे ॥ क्यों हत्या स्वामी असकोना ॥ हर्ष उय उत्तर तव दीना ॥ ४०१ ॥ ब्रह्महत्या क्या करण प्रकाई ॥ पतित पावनो गंगा पाई ॥ असभण गंगा वन छिड़काये ॥

व्यासपाय हत्या भगजाये ॥ ४०२ ॥ वामदेव तवकौन विचारा ॥ श्रेष्ठ भूमियहभयो हमारा ॥ रेवाकोशभूतमो कौना ॥ ख्यातौ वराणसीरखदीना ॥ ४०३ ॥

कुंडलिया छन्द ॥

वराणसी भवलोकते गङ्गा किया पयान ॥ जह्नु मुनिकी भवनमो पहुंचौ माता आन ॥ पहुंचौ माता आन कुटीको दीन बहाई ॥ ताते करिकै कोप विप्रमनमो अति भाई ॥ धरि गण्डूषकी मध्य मातको पान कराये ॥ गङ्गाको नहि पश्चभयो भागीरथ आये ॥ ४०४ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

कहो नाथ गङ्गाको लीना ॥ शुन वाड़व उत्तर वह दीना ॥ और कोय मारग नहि पायो ॥ ममसन्मनते गङ्गा लायो ॥ ४०५ ॥ भोष्म प्रसूममगेह वहाई ॥ ताते मै तिनको धरिखाई ॥ शुनत वचनभूसृत घवडाये ॥ करि क्रन्दन मुनिकोरिझवाये ॥ ४०६ ॥ हो प्रफुल्ल द्विजकौन विचारा ॥ जौ मुखते देवैं मै धारा ॥ उच्छिष्ट होय निष्फल होजाई ॥ ताते जङ्घा चीरवहाई ॥ ४०७ ॥ जह्नुकी जङ्घाते पावैं ॥ ताते जाह्नवी नाम रखावैं ॥ भागीरथ गङ्गा पुन पाये ॥ पश्च शन्त सज्जन हरषाये ॥ ४०८ ॥

कुंडलिया छन्द ॥

यहप्रकार बहुकष्टते लाये भागीरथ ॥ क्या तिनका कीर्त्तन करैं मो मे नहीं समरथ ॥ मो मे नहीं समरथ्थ बोल मुख मौन कराये ॥ जोहैं समरथ अन्तयश: इनका बहु गाये ॥ भणै खालसा सिंह भक्त गङ्गासो पावैं ॥ लै भागीरथ नाम प्रातकीर्त्तन जो गावैं ॥ ४०८ ॥

अथ श्रीकाण्डार मुनिका अस्थी श्रीगङ्गाजीमो पतन होनेसे वैकुण्ठ प्राप्त भये ।

कुंडलिया छन्द ॥

मृत्युलोकके मध्यमो पापी भूमि रहाय ॥ काण्डार मुनि नामथे खैरिणि सेवकराय ॥ खैरिणि सेव कराय विप्र वह जन्म बितायो ॥ कछुकदिवसके बाद काल तिनका जब आयो ॥ ताके वशिमो होय काष्ठ लैने वनजावैं ॥ तबताको धरि व्याघ्रगातको नष्ट करावैं ॥ ४१० ॥

पादाकुलक छन्द ॥

पहुंचे शमन दूत द्रुत आये ॥ द्विजको पकड़ बांधिले जाये ॥ इतकेहरि पर्व्वद पल कीना ॥ अस्यो सब वर्ज्जन करि दीना ॥ ४११ ॥ ताका चन्द्र छाडले कागा ॥ गंङ्गाके ऊपरहै भागा ॥ चित्त विलोक झपट ग्लौआये ॥ आत्मघोषसे युद्धकराये ॥ ४१२ ॥ अस्योसकृतप्रजतजिदीना ॥ विष्णुपदी-स्पर्शनमोकीना ॥ पश्य चौप्रविष्णुचर आये ॥ यम किङ्करको मार भगाये ॥ ४१३ ॥ पुष्पकपर द्विजको बैठायो ॥ विष्णुलोक प्रस्थान करायो ॥ प्रेतराज चरकोपकराये ॥ श्राद्धदेवको हाल जनाये ॥ ४१४ ॥ शुनि कृतान्त आमर्ष कराई ॥ पहुंचे विष्णुलोकमो आई ॥ नारायणको शीर्ष निवाये ॥ करि क्रन्दन वोलैं कलपाये ॥४१५॥ क्यो मुझकोयमराजवनायो ॥ तव किङ्करपापीले आयो ॥ शुन ईश्वर तिनको समु-झावैं ॥ क्यों असत्य राजन वतलावैं ॥ ४१६ ॥

कुंडलिया छन्द ॥

त्रयभूवनके मध्यमो गङ्गा पहुंचो जाय ॥ अवं पापी जगमोकहां मुझको देहु वताय ॥ मुझको देहु वताय जौन गङ्गाजल खावैं सर्व्वपापको नाशनौन

निर्ज्झरतन पावैं ॥ भणोखालसासिंह प्रभो ऐसेसमुझाए ॥ तव अन्तकशरमाय आपने भवनसिधाए ॥ ४१७ ॥

अथ सगर वंशोद्धार तथा सागर सङ्गम।

कुण्डलिया छन्द ॥

काण्डार मुनि स्वर्ग टे गङ्गा किया पयान ॥ गौड़ वङ्गला देशमो पहुंचौ माता आन ॥ पहुंचौ माता आन पद्मनामक मुनि आए ॥ भागीरथका वेश धार करि शङ्ख वजाए ॥ गौड़ देशको छोड़ पूर्व्व गङ्गा-लैजावैं ॥ कछुकदेरकी वाट टेर भागीरथ पावैं ॥४१८॥

पादाकुलक छन्द ॥

पाणिजोड़ भुर्णिपति आए ॥ सुरेश्वरीको हाल जनाए ॥ शुन सुरतटिनी कोप कराई ॥ तर्ज्ज गर्ज्ज नृपको वतलाई ॥४१९॥ पद्ममुनी छल करि ले आवैं ॥ तातें पद्मवती कहिलावैं ॥ इसमो मोक्षलोग नहीं पाई ॥ तुच्छ सरित समवास कराई ॥४२०॥ शापअमर टुदिनोअसटीना ॥ तवनरेशमारग निज लीना ॥ गौड़देश माता पुन आई ॥ तातें भागीरथी कहाई ॥ ४२१ ॥ निर्झ्झर स्रोतस्वतीकछु आवै ॥ तव

मज्जन सुरभूप करावैं ॥ इन्द्रेश्वर बड़ ग्रामकहायो ॥ पश्चशम्त सज्जन हरषायो ॥ ४२२ ॥ विबुधबरबक्तो प्यान कराई ॥ पहुंचो मेड़तलामो पाई ॥ विप्रएक मेढ़ाचढ़ि आवैं ॥ तातेमेड़तलाकहिलावैं ॥ ४२३ ॥

कुंडलिया छन्द ॥

मैडतलाके ग्रामसे गङ्गाकौन पयान ॥ तीर्थ नदिया के विषपहुंचो माताआन ॥ पहुंचो माता थान शम्त सज्जन हरषावैं ॥ विष्णुपदो पुन हर्ष सप्तग्राममेंआवैं ॥ तीर्थराज समतीर्थ सप्तसोग्राम बनाई ॥ वोहरोदके घाट मात पहुंचो पुन आई ॥ ४२४ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

घाट छोड गङ्गा जब धाये ॥ भूभुजसे पूछे हरषाये ॥ कहोपुत्रमुझको समुझाई ॥ कहां पित्र तब गात तजाई ॥ ४२५ ॥ सुन महीप मनमोहरषाये ॥ ओड भुजादलको बतलाए ॥ पूरब दक्षिण मध्यसिधावैं ॥ कपिल मुनीजिततपस करावे ॥४२६॥ वहां पित्र मम प्राण तजाये ॥ दीनाजननीमोहिं बताये ॥ सुन सुर-शैवलिनी हरषाई ॥ खोजैं सतीमुखो हो भाई ॥ ४२७ ॥ कारत तत्व पाताल सिधाई ॥ तहां सगर सुत त्राण कराई ॥ चढ़ि पुष्पक गोलोक सिधाये ॥ पश्चपित्रन्तपमार्थनिवाये ॥ ४२८ ॥ गङ्गाकी चपचिति

पुनकीना ॥ हो प्रसन्न माता वरदीना ॥ इन्द्रतुल्य सुतराज कराचो॥ विदाहोय भुनता गृह जाचो ॥४२९॥

कुंडलिया छन्द ॥

भीष्मप्रसूतव हर्षकै मिलीसिन्धुकी वीच ॥ गङ्गाकापावन पायकै गयो सरित्पति सींच ॥ गयो सरित्पति सींचपथ्य सुरसवहरषाये ॥ गङ्गासागर बोल तीर्थका नाम धराये ॥ भणै खालसा सिंह वहांजोस्नान कराई ॥ सर्व पापको नाश स्वर्ग मानवसोजाई ॥ ४३० ॥

अथ श्रीगङ्गाजीका स्तोत्र ।

नराज छन्द ॥

नमो नमो सुरेश्वरी नमो पतीतपावनी ॥ नमो नमो अम्बुतनो नमो गिरीनिवाशिनी ॥ नमो त्रिलोक स्वामिनी नमो महेशवाहिनी ॥ नमो समंउद्धारिणी नमो कलूषनाशिनी ॥ ४३१ ॥

शङ्खनारी छन्द ।

विष्णुपादमाई ॥ जनूश्रेष्ठ पाई ॥ धरोरूपनिरं ॥ महापाप चोरं ॥ ४३२ ॥ अब्जयोनिधाये ॥ कुण्डमो रखाये ॥ महालोभ आई ॥ धरोमेंह जाई ॥ ४३३ ॥ महाराजधाये ॥ निजंसाथ लाये ॥ बड़ोकाजकीना ॥ विश्वतारदीना ॥ ४३४ ॥

नराज छन्द ॥

अघो अपार तीन लोक बीच नाच पावहीं ॥ महेश औं दिनेश मातनामतौर गावहीं ॥ यश: अपार देख लेखमौनशीरढावहीं ॥ भये प्रतापसिंह व्यालघूमतो धरावहीं ॥ ३२५ ॥

अथ श्रीगङ्गाजल स्पर्शन करनेसे राजा सौदास एवं वरदत्त ब्राह्मण ब्रह्म राक्षस योनीसे मोक्ष होकरि स्वर्ग प्राप्त भये ॥

मत्तगयन्द छन्द ॥

आठहजारवितीय समानरदेवपुरो निज प्यान कराये ॥ श्रीभमातृनये शुनश्रीद्रुत भेटनको जननीं पखधाये ॥ भूभुजपेर पडे करि रोदन मातलयेनिज कंठ लगाये ॥ आयत शोधभलो जननी भुनता सुतको करि राज करायें ॥ ४३६ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

अवनीश्वर हो राज सम्हालैं ॥ प्रजा सर्व अङ्गज समपालैं ॥ प्रसूपुवका व्याह कराई ॥ ताते

चौवछन्दु वह पाई ॥ ४३७ ॥ ख्याती शुभसौदाश रखावैं ॥ जब वह धर्म्म कर्म्ममो आवैं ॥ तब नरेश तिनको करि राजा ॥ आप भीष्मसुतीर विराजा ॥४३८॥ कछुबासरतपघोर कराये ॥ भव सागरका नाघ बनाये ॥ बहि तापर गोलोक सिधावैं ॥ पश्य अमर मङ्गल सब गावैं ॥ ४३९ ॥ सुत सौदास खबरको पाई ॥ पितुका पिण्डा श्राद्धकराई ॥ और कलानिधि कथा शुनावैं ॥ जाको शुन सज्जन सुखपावैं ॥ ४४० ॥ अहनिशापति भूप विचारा ॥ अद्यरामका करौं सिकारा ॥ रामहितुकाननमो आये ॥ रोहित खोजथके नहीं पाये ॥ ४४१ ॥ यातु बिलोक सोममुशकावैं ॥ ले भार्य्या करथेछल आवैं ॥ निजतनको शठ गुप्त करायो ॥ शार्दूलका रूप धरायो ॥ ४४२ ॥

मत्तगयन्द छन्द ॥

द्वीपिन गात धरैंनरमादिनकेलि करैं निज मौज अपारा ॥ वाहि समैनरको नरदेव विलोकत वाण चला करि मारा ॥ वाधिनि आय भणै शुन मूरख तूमनमों कछुनाहि विचारा ॥ मैथुनको करतेपति को शठमारदयो दुख होत अपारा ॥ ४४३ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

असभण अभिसम्पात करावैं ॥ ब्रह्मशाप तुम्हपर

हो जावें ॥ पुन सोदास भूपभव पाये ॥ गुरुवर के सङ्गमी आये ॥ ४४४ ॥ माथि जोड सब हाल जनाई ॥ पुन वशिष्ट तिनको बतलाई ॥ अश्व मेध भूपाल करावैं ॥ ताते शाप नाशहो जावैं ॥ ४४५ ॥ भूपत वास कूट तब आए ॥ मख पव्वैन आरम्भ कराए ॥ बाह्यक्रतु पूरण जिह काला ॥ रीवत नार निशाचर वाला ॥ ४४६ ॥ अभिसम्पात व्यथं ममजाये । अस विचार पुन युक्ति कराये ॥ निजशरीर को गुप्त कराई ॥ गुरुवशिष्ठ का वेश धराई ॥ ४४७ ॥ पहुंची राज भवनमा आये ॥ भूप जान गुरुशिष निवाये ॥ बहु रूपी आसीस कराई ॥ भाषे भूसुत को सुस काई ॥ ४४८ ॥ मम कारण पक्व त्यार करावै ॥ तव ही मे मज्जन करि आवें ॥ अस भण कोपप नारि सिधाई ॥ सूपकारको रूप धराई ॥ ४४९ ॥

मत्तगयन्द छन्द ॥

पाचक भूर बुलाय जवें पुन आमर को वह नारि भयो है ॥ देव नरेश भणे तिनको पखरोहिष औन शिकार कयोहै ॥ वेग तयार करो तिनको गुरु प्राशन को गृह आय कह्योहै ॥ जोड़ भुजादक नारि भणे मुनिको बुलवावतयार धरयाहै ॥ ४५० ॥

पादाकुलक छन्द ॥

अस कहि अवपको वह नारी ॥ कीना क्रव्य मनुज का त्यारी ॥ गुरुवरको भूकन्त बुलावैं ॥ लैतिन का रध्यन गृह आवैं ॥ ४५१ ॥ तब यादूकरि कव्युर नारी ॥ पुर भरको बसमा करि डारी ॥ दै आसन मुनिको तिष्ठायो ॥ लेव्यञ्जन सन्मुख रख आयो ॥४५२॥ वास पाय निज भवन सिधाई ॥ भोजनको वाडव कर पाई ॥ मनुज मुण्ड लखि कोप करायो ॥ भूर्णि कान्तको गर्ज्ज चलायो ॥ ४५३ ॥ काकुक्ष वास चितमो नहिं लायो ॥ गुरुसे पामर हास्य करायो ॥ कौन दुष्ट तुम्हको शिखलाई ॥ मनुज मांस खाने बुल वाई ॥ ४५४ ॥ अस भण मुनिवर शाप चलाये ॥ ब्रह्म असुर योनी धरि जाये ॥ शुन भूमीश्वर कोप करावैं ॥ लेजीवन गुरुको धमकावैं ॥ ४५५ ॥ बिन अपराध मुझै दुख दीजे ॥ ताको उचित दण्ड गुरु लीजै ॥ दमयन्ती रानी द्रुत आई ॥ भर्त्ताको कर जोड़ बताई ॥ ४५६ ॥

मत्तगयन्द छन्द ॥

रोय भषो वह भूपति नारि अमर्ष सम्हाल शुनी अस बानी ॥ शाप सतो गुरु कोपति देहु महा अपराध

मुनीश बखानो ॥ बाध करैं तुमको गुरुदेव पड़ो शरणागत मैं तजि मानो ॥ क्रोध सम्हाल नरेश भयो शुनप्राण कहां यह राखहुं पानो ॥ ४५७ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

स्वर्ग मध्यजो देहुं रखाये ॥ तौदिविषद दुख को सब पाये ॥ नाग लोकमो देहु वहाई ॥ मरैं सर्प सर्पिनि तड़ फाई ॥४५८॥ जो गोलापर देहुं गिराये ॥ अन्न हीन अचला होजाये ॥ कहो प्रिया क्या उदक करावैं ॥ शुनराणो तब मौन रहावैं ॥ ४५६ ॥ क्लिष्ट पथ्य पदमो निज डाला ॥ भस्म चरण होयो तत काला ॥ मुनि वशिष्ट तब ध्यान लगाये ॥ ताते हाल सर्व्व वह पाये ॥ ४६० ॥ क्रव्याद लिया आकरि छल कोना ॥ मैनाहक नृपको दुख दोना ॥ मनस्ताप अस बोल करावैं ॥ पदमो नरपति माथ निवावैं ॥४६१॥ करिक्रन्दन भाषे कलपाई ॥ कब अघनाश होय मुनि राई ॥ भयो वशिष्टमुनीं शरमाये ॥ विन अपराध असुष्टि कराये ॥४६२॥ वाक हमारो पगाडन होई ॥ भोगी अब्द महेश्वर सोई ॥ पुन गङ्गा भुवनको पाओ ॥ मोच होयगोलोक सिधाओ ॥ ४६३ ॥

मत्तगयन्द छन्द ॥

द्रोह कटान बताकरिके मुनिराजतबैं निज गेह सिधाये ॥ भूपति बेग सुपूत बुलानिज राजदयो तिनको समुझाये ॥ नाम सुदाशरथ्यो तिनको वह राजकरयो जस नीति बताये ॥ त्याग शरीर महीप करयो सुनके गुरुदेव महादुख पाये ॥ ४६४ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

गात त्याग जब भूप करावैं ॥ ब्रह्मनैऋत योनिको पावैं ॥ देश देशमो भ्रमण कराये ॥ धरि धरि ब्राह्मण उदर भराये ॥ ४६५ ॥ बीत्यो समा उग्रजब भाई ॥ भोजन अहन नयन नहिं पाई ॥ क्षुधा पाय नर कान्तरिसाये ॥ तिष्ठ अवज शालपर जाये ॥ ४६६ ॥ ब्रह्म दनुजका पादप सोई ॥ आयो निरख असुर वह रोई ॥ उर्व्वीश्वरको गर्ज्ज भलाये ॥ क्यों स्यान कीना ममआये ॥ ४६७ ॥ सुनत दण्डदालबतलाई ॥ पश्य भलो कुटिलोन रिझाई ॥ सुनि दानव तब कीन बिचारा ॥ नहिं देवै यह अगम हमारा ॥४६८॥ उमाडो नृपको धमकाये ॥ सुनत रसापति रोष कराये ॥ कीन परस्पर घोर लड़ाई ॥ बीते मास राग जब भाई ॥ ४६९ ॥ बीर युग्म मिलता कराये ॥

तिहँ महीरुह परजाये ॥ क्लेश परस्पर भाव सुनावैं ॥ जौन भांति योनि जो पावैं ॥ ४४० ॥

मत्तमयन्द छन्द ॥

ब्याधनको जब हाल सुन्यो तब यातु सबै निज हाल जनाये ॥ नामसुनो हमगो नरदेव बरादत बाड्व जाति रहाये ॥ वेदपढ़े हमने गुरुसे कछु मागन को तिनलोम पठाये ॥ हांस करो तिमको हमने तिह कारन ईत शरीर धराये ॥ ४७१ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

सुनमिलक विद्रूप कहाई ॥ ब्रह्मदैतको वी सठजाई ॥ सुनअमर्ष शरणा गत लीना ॥ तब गुरुदेव रीझवरदीना ॥ ४७२ ॥ विष्णुपदीवारी जब पाओ ॥ धरिसुरगात स्वर्ग तब जाओ ॥ सुन कुकान्त बोलें हरषाई ॥ तत्त्व कहो गङ्गावन भाई ॥ ४७३ ॥ वीरयुग्म तव दर्श सिधाए ॥ सन्मुख मुनि भार्गव कोपाए ॥ सुरापगा मज्जनको आवैं ॥ अवगाहन करि स्वर्गमजावैं ॥ ४७४ ॥ पंचादनुज पुण्यजन जाये ॥ कोड भुजादल नामसुनाये ॥ तयस्त्रीतमपुष्करदे जावै ॥ सुनवज्जलतिनकोबतलावैं ॥ ४७५ ॥ कमल सर्व अर्थम लेजाऊं ॥ क्यों करितुमकोदानकराऊं ॥

शुनत सुवजनर नाथ सलावें ॥ भान्तिविपथमातीय आगावें ॥ ४७६ ॥ वुन्दकलानिधि अपदेंजाओ ॥ कर्मदोष मम नाथ खपाओ ॥ शुनत वचन मुनिध्यान लगाये ॥ ताते ज्ञानसर्व वह पाये ॥ ४७७ ॥

मत्तगयन्द छन्द ॥

पाणिविषे मुनिधारिकुशा वन पावनिकोछिड़काय दयो है ॥ पाथम गात लग्यो जब आय भुजा युग वाडव भूपधस्यो है ॥ होकरियान शशार भलो सुरलोक तबैपरव वीर गयो है ॥ सिंह भणो यह भांत नहीं सुर कोटनको सुर लोक दयो है ॥४७८ ॥

अथ राजा रघुका वीरत्व देखके श्रीब्रह्माजो रघुवंश ख्याती सूर्य्यवंशको दिया ।

मत्तगयन्द छन्द ॥

कौनतरे रघुवंश भयो सवशन्त शुनो मम प्रीति कराये ॥ भूपभयो युवराज सुदाश भलोकरि राजमहा यश पाये ॥ पुतदिलोप भयोतिनको परजा जिनकी गुणकोनित गाये ॥ वोर महासुत होय तिन्है तिनको शुभनाम रघू रखवाये ॥ ४७९ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

दायन बाणरोत हो आये ॥ धनुर्वेद पढ़ने बेठाये ॥ यह पूरण वत्सरजिहंआला ॥ विद्या-भोग्वल्यार भेवाला ॥ ४८० ॥ बड़े बडे बीरणको मारें ॥ रणआरि भूतप्रेत गणहारें ॥ शाहूल मद काल धरि भारी ॥ चींटा सम मर्द्दन करिडारी ॥ ४८१ ॥ पश्च दिमीप पुत्र हरषाये ॥ मखवाजो प्रारम्भ कराये ॥ दैभर्वन सुतको बतलावें ॥ रिपूजीव हय कोलैआवें ॥ ४८२ ॥ तब छाना ययुको लेलोना ॥ गमन सर्व प्रसन मोकोबा ॥ निरखजिष्णु मन मोभय पाये ॥ पद्म योनिको खबर जनाये ॥ ४८३ ॥ शुनि कमला सन युक्ति बतावें ॥ गन्धर्व मेत्र को जाय चुरावें ॥ तब मघवत पुष्कर बरषाये ॥ अन्धकार सब सृष्टि कराये ॥ ४८४ ॥ तस्कर के सम सुरपति आई ॥ मखसैन्धवको लोन चुराई ॥ अमर लोकमो जाय रखाये ॥ दान पुण्य बहु भांति कराये ॥ ४८५ ॥

अमला छन्द ॥

भाड़ जीवन नाशभयो जवहीतव शावक चोटक खोज कराई ॥ हय कोनहिं देखन पायरघू मनमो करि कोप भये गरजाई ॥ बिनवासव पीतिन कौन धरे चित्तमो कछु त्रास नहीं वह लाई ॥ अस बोल

तबै युवराज विड़ौजसको पुरमो द्रुत कीन चढ़ाई ॥ ४८६ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

पहुंचे इन्द्रलोकमो जाये ॥ सुत्रामनको गालि चलाये ॥ सुनासीर सुन कोप कराई ॥ अर्भक को भाषे धम काई ॥ ४८७ ॥ अपोगरुड़ही गालि चलाये॥ कछुक त्रास मनमो नहिं लाये ॥ सुन रघुराज भवै मर्ज्जाई ॥ मति धार अहङ्कार सुरराई ॥ ४८८ ॥ बला-राति सुन राग कराये ॥ रण कारण बालकसे आये ॥ दोड़ शाचवल्लभ बाण चलाई ॥ लगी मेघवाहनउर जाई ॥ ४८९ ॥ जब तनमो चेतनको पाये ॥ त्रिखरर्भदश बाण चलाये ॥ तिनको शावक दोन खपाई ॥ पुन वज्रिन शर और चलाई ॥ ४९० ॥ ताको भीरघुराज खपायो ॥ पश्यपाकशासन भय पायो ॥ कीन समर भारी सुरराई ॥ पाशुपती का बाण चलाई ॥ ४९१ ॥ ताते शतमन्यु घबड़ाए ॥ ऐरावण भागाले आए ॥ धरा पीत पुरुहुतकी जाई ॥ निर्जरनिरख सर्वं भय पाई ॥ ४९२ ॥

मत्तगयन्द छन्द ॥

जीतभयो रण घोरजबैं निज बाहु विड़ौजसकी धरिलाए ॥ पीतिनिपाय दिलीप कुशीरथ श्रात रघु

सब भाष शुनाए ॥ घोटक काटकस्यो मख पूरण देवकरषो सब देख भलाए ॥ भागवड़ो तुमरो अचला धवजीत रिपू धरमोमुसलाए ॥ ४६३ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

शुन नरेन्द्र भूरी हरषाये ॥ दान पुण्य सुतसे करवाये ॥ आखण्डलको कैदकराई ॥ वीते अहन सिन्धु जवभाई ॥ ४६४ ॥ स्रष्टृसर्व्वलेखलै आए ॥ पण्यप्रणाम दिलोप कराए ॥ सुरगण आशीर्वाद कराई ॥ भणौ महोश्वरको समुझाई ॥ ४६५ ॥ ऐसा समरकोन शिशुजाये ॥ सुमनस सर्व बिलोक रिझाये ॥ क्या राजन सुतको वरदोजै ॥ प्रसिद्ध रघूकुलको अवकीजै ॥ ४६६ ॥ शुन दिलोप अतिशय हरिषाये ॥ जोड़ भुजादल शीर्ष निवाये ॥ करि आशीसदिवोकसगाई ॥ दोदेभूप भूप सुरलाई ॥ ४६७ ॥ तब महोप संक्रन्दन लाए ॥ दैदिविषदको शीर्ष निवाए ॥ अवलोकन रघुराज कराई ॥ तुराषाहको हर्ष भलाई ॥ ४६८ ॥ रखो पुरन्दरयाद कराये ॥ अनावृष्टि होने नहि पाये ॥ शुन हरिहय तिनको वतलावैं ॥ भुवनमोभुवन शुभ पावैं ॥ ४६६ ॥

अमला छन्द ॥

शुन वाकसुधा युवराज तवै मनमो अपनी बहुता

हरषाये ॥ निजलोक गये तब लेखसवै मनमो सुरभूप महाशरमाये ॥ तिनको उपदेश करैं सब देव शची धवतो निज लाज तजाये ॥ कबिसिंह बुझाय भवै सबको रघुके सुतसे रघुवंश कहाये ॥ ५०० ॥

अथ राजा रघुका यशःकीर्त्तन ।

मत्तगयन्द छन्द ॥

राजकरयो दिशहायन भूप दिलीप हजार यशा सुख पाये ॥ गातजको निजदैकरिराज गयो सुर लोक शरीर तजाये ॥ भूपरघू पितु काजकरयो तिनका यश लोचन लोक समाये ॥ वाहि गुरू पद सारस बीवल गाय कथा कछु भाष शुनाये ॥५०१ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

और मभो न्रपकायश गावैं ॥ जाको शुन सज्जन सुख पावैं ॥ क्रपण लोग शुन करिके भाई ॥ मूर्च्छा-गतह्वो प्राण तजाई ॥५०२॥ बिप्रनाम वरदत्त रहावैं ॥ तिनको कश्यप वेद पढ़ावैं ॥ चतुर्वेद पूरण होयाये ॥ बिद्याहीन काकौन उपाये ॥ ५०३ ॥ भयो मुनीपदमो थिरनाई ॥ क्यादेवै दक्षिणा गुरु लाई ॥ स्वर्णमुखज तिनको बतलाये ॥ दीजै भार चतुर्द्दशलाये ॥५०४॥

शुन पाठक कर जोड़ चलाई ॥ देव सदन सिन्धु मोलाई ॥ शुन कश्यप मञ्जूर कराये ॥ चाद्वस्ति कर्त्ता अवधि सिधाये ॥ ५०५ भूभुजका शुन बीयग्र भाई ॥ पहुंचे राज भवन मोजाई ॥ पश्य दिलोपज शीर्षनिवाये॥ वक्रज आशीर्वाद कराये ॥ ५०६ ॥ देवाशन भुनता वैठाई ॥ पश्य कष्ट द्विज अर्थ लुकाई ॥ चौरवात करि भवन सिधावें ॥ भूप पकड़ करको तिष्ठावें ॥ ५०७ ॥

कवित्त ॥

नरेन्द्र आनन्द धर भोजन कराय कर ताम्बूल लगाय तर तिन को खिलायो है ॥ दक्षिणा रजत धर कहत चरण पर कारण वसुधा मरकवन रहायो है ॥ शुनत विहर्ष कर भगात वाड़व वर राजन विलोक घर स्वारथ लुकायो है ॥ शुनत अवनीश्वर रुदन करत डर निरख अचला मर नृपको बतायो है ॥ ५०८ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

शुनो नरेन्द्र जहाल हमारा ॥ दान लैन कछु कीन विचारा ॥ तातेमै भूनता गृह आवें ॥ निरख दशा तव पति भय पावें ॥ ५०९ ॥ पाव मृत्तिकामो अप-खाई ॥ तिह कारण निज स्वार्थ लुकाई ॥ शुन महीप मनमे हरषाये ॥ जोड़ भुजादल भाष शुनाये ॥ ५१० ॥ कहो प्रभूलैने क्या आये ॥ हर्ष अग्रजाती बतलाये ॥

हेमनभार चतुर्दश दीजै ॥ भयो भूप आगत कललीजै ॥५११॥ शुनत वचन तुगडज हरषावैं ॥ नरपति बोल महा घबड़ावैं ॥ भक्त हेतु केशव दुख पाये ॥ देवऋषी को दीन पठाये ॥५१२॥ भयो दगडधरको मुनि आई ॥ क्या भूमीश्वर शोच कराई ॥ कष्टदगडदाह बतलायो॥ द्विजको हाटक दैन कहायो ॥ ५१३ ॥

अमला छन्द ॥

मुनि नारद भाषत हैं शुन राजन कौन महा यह काज बतावैं ॥ हमरो उपदेश धरो मनमोतपनीय अभी हम जाय पठावैं ॥ तुमशोर करो रणसाज बजा नरवाहन कोकल लूट करावैं ॥ शुनकी यह हाल धनाधिप वेग अभी गृह हेमनको पठवावैं ॥ ५१४ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

असदै मुनि उपदेश सिधाए ॥ इत धरणी श्वर शोर मचाए ॥ एक पिङ्गको लूट करावैं ॥ और बांध तिनको गृहलावैं ॥५१५॥ असभणके रणध्वजा उड़ाई ॥ निरख कुबेर दूत भय पाई ॥ किन्नरेशको हाल जनाये ॥ वाहि समय नारदमुनि आये ॥५१६॥ यक्ष राजको भाष शुनाई ॥ शुन पौलस्त्य भयो घबड़ाई ॥ क्या कारण लूटनको आवैं ॥ तब मुनिवर तिनको बतलावैं ॥ ५ १७ ॥ महारजतलैने द्विज आये ॥ तिह

कारण यह ढोंग रचाये ॥ चामीकर जौदेहु पठाई ॥ तौ नरदेव न समर कराई ॥ ५१८ ॥ शुनत यच्च कर, जोड़ अलावैं ॥ कहो नाथ कितनो पठवावैं ॥ तब नारद तिनको बतलायं ॥ अर्म्मन भारदोक युग जायं ॥ ५१९ ॥ शात कुम्भ शुन श्रोदतुलाये ॥ दौना अवधि पुरी पठवाये ॥ प्रातहोत अष्टापद पाई ॥ दौना भूप विप्र बोलाई ॥ ५२० ॥

अमला छन्द ॥

द्विज हाटक पाय पयानकस्यो गुरुको द्रुतआय दयो शिरनाई ॥ तपनीयतपीवर देख भयो सुत कौन तुम्है यह दान कराई ॥ तब सेवक जोड़ भुजादल को सब हालकह्यो गुरुको समझाई ॥ शुन वाक सुधा शिषको मुनिराज भलोविधि आशिरबाद कराई ॥ ५२१ ॥

पादाकुल छन्द ॥

पुन मुनिवर वहकौन विचारा ॥ काननमो है बास हमारा ॥ तस्कर आय मार लेजावैं ॥ रुक्म हेतु मम प्राण हतावैं ॥ ५२२ ॥ बास पाय शिषको समुझाये ॥ कुतसे जात रूप लैजाये ॥ बेग पुन्दरको देआओ ॥ और हाल सुतको समझाओ ॥ ५२३ ॥ अध्वर समय जैसा मैपावैं ॥ शुनत शिष्य लेप्यान करावैं ॥ इन्द्रलोक मो पहुंचे जाई ॥ सपुद कपिस्वर

बिप्र कराई ॥ ५२४ ॥ पञ्च बानक सुरपति हरषाये ॥ बहनज सेपूछे मुगकाये ॥ कबुर जनक कहांसे पायो ॥ शुन बास्य सब हाल जनायो ॥ ५२५ ॥ शिष्यक दक्षिणा रुक्म चलाये ॥ जाम्बुनद रघुसे मैलाये ॥ अपहर्त्ता हरकै लैजावैं ॥ तिह कारण गुरुदेव पठावैं ॥ ५२६ ॥ शुनत बचन बज्रिन घबड़ायो ॥ वर्ण ज्येष्ठ को भाष शुनायो ॥ कहो जनकको भात बुझाई ॥ हिरण्य हेतु रघुप्राण हताई ॥ ५२७ ॥ और कहो गाङ्गेय रखावैं ॥ दूतसे शीघ्र भात लैजावैं ॥ शुन बाड़व प्रस्थान कराई ॥ भाषे गुरुवरको गृह आई ॥ ५२८ ॥

अमला छन्द ॥

शुन भाषत हैं शिषको गुरुदेव धरी नरवाहनकी गृह जाये ॥ पुन ध्यानकरयो सुत हाटकलैं पहुंचे धन नाथ पुरी द्रुत आये ॥ निज हैमन देखहसैं धनपाल खुशी अति हो तपनीय रखाये ॥ गुरु नानकशाह सहायभये कविसिंह तबैयह श्लोक बनाये ॥ ५२९ ॥

अथ राजा अजका विवाह और बहुतसे राजोंका मृत्यु एवं महाराज दशरथका जन्म ।

भूलना छन्द ॥

सदा ऐशसे राजकीना रघूमै कहां लौबखानो कथाकोबढ़ाये ॥ जिन्हाकै लिये नामकापै तुराबाह वानै सुतंसोम श्रोवान जाये ॥ हियाराजताकोखुशो भूपहोगातको त्यागकै देवता लोक धाये ॥ सुतंप्रेत कार्य्यकस्यो खूबभारौ दयोदान भूदेवको प्रेमलाये ॥ ५३० ॥

पादाकुलक छन्द ॥

रघूपुत्र अज नाम कहावैं ॥ करिपितु कारज राज करावैं ॥ पुत्रतुल्य परजा कौपालैं ॥ दुष्ट न कोअन्तक पुरघालैं ॥ ५३१ ॥ पुनिनिज नृप उद्वाह कराये ॥ ताकी कथा कछु व.छु गाये ॥ माथर नामक भूप कहावैं ॥ रूपवती कन्या जनमावैं ॥ ५३२ ॥ इन्दु मती शुभनाम रखाई ॥ उपयाम योग पुत्री हो आई ॥ स्वयम्बरामख भूप रचाये ॥ देशन देश निमन्त्र पठाये ॥ ५३३ ॥ पहुंचे देशेश्वर सब आई ॥ तिष्ठे यज्ञशाल

सोजाई ॥ रघुपुर पहुंचे बन जाए ॥ पश्च सर्व्व भुनता भय पाए ॥ ५३४ ॥

द्रुमल छन्द ॥

अज आय निकेतन माथरके सबजाय मही भुजला वत हैं ॥ तिनके मखमो सब भूप मनोहर रूप निहार लजावतहैं ॥ गृहमो नृप माथर आय भयंतनया अवगाह करावत हैं ॥ जननी चुन भूषण बास भले तनजा तन मो पहिरावत हैं ॥ ५३५ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

बन्दी बेनाशिर सोपाई ॥ कज्जल कञ्ज नयन सोलाई ॥ कर्ण फूल कानन पहिरावैं ॥ पत्ताबाली सोन सजावैं ॥५३६॥ गलमो गुलो बन्द झमकायो ॥ तापर मोती दाम सुहायो ॥ भुजामध्य हीरेका बाजू ॥ औसन औतोड़ेको साजू ॥ ५३७ ॥ पोर पोर अंगू ठोपाई ॥ पद करमेहंदो अरुण सुहाई ॥ कङ्कन कड़ा छन्द पहिराये ॥ गोंट श्रीशाहाटक सोपाये ॥ ५३८ ॥ पदमो कड़ा शांकड़ा लाई ॥ पोर पोर छल्ला झम-काई ॥ जरदोजीलहिंगा पहिरायो ॥ और ओढ़नी श्रेष्ठ उढ़ायो ॥ ५३९ ॥ चुन चुन बीछीना बहुदाशी ॥ झम झम करिके चरण निकाशी ॥ मृदुल गमन गज चालि सुहाई ॥ पहुंचो सप्त तन्तु गृह आई ॥ ५४० ॥

पश्य भूप सब शीहरषाये ॥ चिप्र तुल्य निज बुद्धि कराये ॥ जिसका जिसका सन्मुख चल आवैं ॥ उनका उनका निज रूप दिखावैं ॥ ५४१ ॥

किरीट छन्द ॥

मालनिये करमो वह लाल महीपतिकी सब ओर तकावत ॥ देखनरेश कुवेश सबै अजको मुख देखत रीझरहावत ॥ हारहसांय दयो गलमो तब भूप सबै निज आश तजावत ॥ माथर भूप लयो तिनको सब ओर धराधवध्यान करावत ॥ ५४२ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

लज्जा दुष्ट भूप गणपाये ॥ परामर्श बन मध्य कराये ॥ छोरी अजकी मार लुगाई ॥ अस भण कानन वास कराई ॥ ५४३ ॥ दूत पाणो पौड़ण नृपकीना ॥ लैभार्य्या मारग निजलीना ॥ अटवीमो पहुंचे जब आई ॥ तब भुनता घेरा सब धाई ॥ ५४४ ॥ निद्रामो भूमिन्द्र रहाये ॥ ताते इन्दुमती भयपाये ॥ करिक्रन्दन नृप नारि जलावैं ॥ क्यों करि मैंसम्बेश हटावैं ॥५४५॥ स्वापनाश शुन भूप करायं ॥ देषीगण सम्मुख लखि पायं ॥ ताते नरपति नाहिं डराये ॥ पत्नी कष्ट निरख घबड़ाये ॥ ५४६ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

दृतहाराको गोदलै उरमोलिया लगाय ॥ करि चुम्बन भूभृत भयो क्यों प्रिय रोय डराय ॥ क्यों प्रिय रोय डराय सुनत रायो बतलाई ॥ हिंसिच्छुक गण आय कन्तताते भयपाई ॥ सुनत बचन नर नाथ भयो तिनकोसमुझाये ॥ करो इष्ट गुरु स्मरण प्रिया मैंदेहुंखपाये ॥ ५४७ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

असभण तिन्है प्रबोध करावैं ॥ लेपुन चाप भूप गरजावैं ॥ भयोपरस्पर घोरलड़ाई ॥ कोयन काको मार शकाई ॥ ५४८ ॥ भूपएकव होय सब आवैं ॥ अजअशङ्क हो मार हटावैं ॥ ताको छवि कविने लखि पाई ॥ शिवा कोट जस सिंह भगाई ॥ ५४९ ॥ अज खगेन्द्र सम समर करावैं ॥ भूप अहो सम प्राण लुकावैं ॥ नृप गन्धर्व नाम शरजोड़ा ॥ मन्त्र सहित द्वेषण पर छोड़ा ॥ ५५० ॥ तातें यमपुर अरि दल धाये ॥ बास कूट भूभृत चलिआये ॥ सुख बासर कछुभोग कराई ॥ गर्भवतीराणी होआई ॥ ५५१ ॥ मासदिशा पूरणजिह काला ॥ प्रसव कीन सुन्दर तब बाला ॥ दशरथ तिनका नाम रखायो ॥ रती कन्त लखि रूप लजायो ॥ ५५२ ॥

अमला छन्द ॥

अज औरसका गुण कौन भवै जिनकी जहसो जगनाथ पयेंगे ॥ सब देवनका दुखरोग हरैं पद कौषप कारल मार दयेंगे ॥ निज नाम महाशुभ रामजपा करि सेवक की गण पार करैंगे ॥ कविसिंह कछू गुण गाय अवै भवसागरसी तब जाय तरैंगे ॥५५३ ॥

अथ राजा अज और इन्दुमती राणीका स्वर्गबास एवं राजा दशरथजीका राज्याभिषेक ।

मत्तगयन्द छन्द ॥

शावकहायन मोमभयो तब लै निजनार नरेश सिधाए ॥ काननमो वह आय जवै सुख भोग करैं अति प्रमकढ़ाये ॥ मारग व्योम दिये मुनिनारद ध्यान कयो पहुंचे उतआये ॥ हाररह्योतिनकी कर मोखस भूमिगिरयो नरनाथ डराये ॥ ५५४ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

छुटक हाम राणी पर आयो ॥ ताते राणी प्राण तजायो ॥ पश्च भूप आये घबड़ाये ॥ लैमाला उर

चोट कराये ॥ ५५५ ॥ ताते नृप निज प्राण हतावैं ॥ जो भार्य्या सुरलोक सिधावैं ॥ शुनत बशिष्ट मुनी तब आये ॥ दशरथका मातम करवाये ॥ ५५६ ॥ समा बाल शिशु बरषो आवैं ॥ वेदपुराण बशिष्ट पढ़ावैं ॥ अस्त्र शस्त्र द्विजराम शिखाये ॥ पत्रिनभेदी शब्द बताये ॥ ५५७ ॥ पश्च बशिष्ट मुनी हरषायो ॥ राज सिंहासन पर बैठायो ॥ दान पुण्य बहु भांत करायो ॥ मुनिवर अपनो धर्म्म बचाये ॥५५८

मत्तगयन्द छन्द ॥

मौजकरैं सुखसे धरणी धब देख सबै परजा हरषाए ॥ बासबकी समराज करैं जगमो नर देव महा यशपाए ॥ देखधरा पतिको परताप त्रिभूवनमो नृप त्रास धराए ॥ वाहिगुरू पदसारसमो कबिसिंह झुकानिज माथ भजाए ॥ ५५९ ॥

अथ महाराज दशरथजीका प्रथम विवाह श्रीमती कौशल्या देवीसे ।

कुण्डलिया छन्द ॥

श्रीदशरथजी अवधिमो सुखसे करते राज ॥ अब्द अनक शतकेभये तब नृपका शुभकाज ॥ तब नृपका

शुभकाज शुनो सज्जन मनलाई ॥ जिनकी चहुजहोय प्रभो अस्रप दलघाई ॥ कोशल नामक नगर भूप कोशल कहिलावैं ॥ तिनके तनया होय नाम कौशल्या पावैं ॥ ५६० ॥

पाद्ाकुलक छन्द ॥

समाखराड पुवो जिह काला ॥ बरखोजन लागे भूपाला ॥ पवो देश देशते आई ॥ गणना दशरथकी मिलिआई ॥ ५६१ ॥ लग्न शोधिकरि तिलकचढ़ाये ॥ पश्चय शन्त सज्जन हरषाये ॥ बरयात्राकी भई तयारी ॥ गावैं नारि मनोहर गारी ॥ ५६२ ॥ बाजा सर्व्वं बाजने लागे ॥ अश्वकरी गर्ज्जैं बड़भागे ॥ लै बरबर यात्रीगण धाये ॥ पहुंचे कोशल के गृह आये ॥ ५६३ ॥ बरपरछन राणी तबआई ॥ सङ्गनारिमङ्गल सबगाई ॥ करि कुलिरीति लाय जनवासे ॥ नाचरङ्ग बहुकौन तमाशे ॥ ५६४ ॥ जब शुभ लग्न समयको पायो ॥ तब कोशल बरको बुलवायो ॥ विधिपूर्व्वक करसमट करवाये ॥ लैकुश कन्या दान कराये ॥ ५६५ ॥ कहु लग तिनका दान लिखावौं ॥ ग्रन्थ बढ़नते अधिक डरावौं ॥ नाना रत्न दयो भूपाला ॥ चहुँराज अपनो देडाला ॥ ५६६ ॥

अमला छन्द ॥

यह भात लयो बहुदान जबै मनमों नरदेव महा हरषाये ॥ दिनपावक बासकरयो तिइंपास महीपति तौनिज हाल जनाये ॥ शुनकोशल भूपवरीय सुता अपनों द्रुत औध दयो पठवाये ॥ कवि सिंहभयो जगमो असकों जिनशै सुतसेयम फांसनशाये ॥५६७॥

अथ महाराज दशरथजीका द्वितीय विवाह श्रीमतीकेकयीदेवीसे ।

किरीट छन्द ॥

कीकय भूपव नामकहैं गिरिराज मनोहर देश कहावत ॥ राजकरैं सुखसे उत ज्यापति औ परजा सुखमाहिं बसावत ॥ नामलिये जिनकी जगमो नरदेव सबैमन वास धरावत ॥ होवत रूपवती तिनशै तनया जिनकी छवि सोमलजावत ॥ ५६८ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

कीकयि तिनका नाम रखावैं ॥ जबवह अब्दखगड हो आवैं ॥ स्वयम्बराका कीन तयारी ॥ गजवाजी अरु बाग अटारी ॥ ५६९ ॥ आमन्त्रण सबदेशकराये ॥ धराकान्त पहुंचे सब आये ॥ आवैं अवधि पती हर

थाई ॥ तिहे सभा मध्य मोजाई ॥ ५७० ॥ तब भूभुज केकय वह आये ॥ जोड़ भुजा हग भाव भुकाये ॥ तनयां दान योगहो आई ॥ होनिदेश लाजं तबजाई ॥५७१ ॥ भला भला सब भूप अलाप ॥ ग्रुन भुवता आगारसिधाए ॥ निज जा को मज्जन करवायो ॥ बस्त्र आभरणको पहिरायो ॥ ५७२ ॥ सङ्गसखीलै राज कुमारी ॥ अईची सभामध्य सुकुमारी ॥ भूभुजके सब ओर लखायो ॥ हार अजज गलमो पहिरायो ॥५७३॥ पश्चभूप गण भवन सिधाये ॥ केकय अवधि कन्तको लाये ॥ विधि पूर्वक करमट करवाई ॥ तनया दान कौन हरषाई ॥ ५७४ ॥ और कलानिधि कथा सुनावैं ॥ जाकरि निर्ज्जर गण सुख पावैं ॥ दासी मंथो होत हरषाई ॥ ताका रूपकहूं कछुगाई ॥५७५॥ कुब्जपृष्ठ विषधर समकारी ॥ नाम मन्थरा दुष्ट करारी ॥ भ्रष्ट जानकीकय दैदीना ॥ पार्थिवपश्च खुशा होलीना ॥ ५७६ ॥

किरीट छन्द ॥

दानलयो यह भांत जवैं मनमो नरदेव महाहर षावत ॥ प्राणहते तिनका यह कूबड़िसो भुनता मन मोनहिं लावत ॥ कूबड़ि औवतनी अवनीपति साथ

लिखी निज गेह सिधावत ॥ सिंह विचार भयो सबको हरिको घटवो यह मारि पठावत ॥ ५७७ ॥

अथ महाराज दशरथजीका तृतीय विवाह श्रीमती सुमित्रादेवीसे एवं इनसिवाय और सातसैछियालिश पुत्री राजोंकी विवाह किया और रती क्रीडा मोरतहोनेसे राज्य विषै श्रनी देवताका दृष्टि भयातिह कारणश्रनी देवसे युद्धकरणेको महाराज दशरथजीकागमन और जटायुपक्षीशेमित्रता ।

मतगयन्द छन्द ॥

सिंहलनामक देशमनोहर देशक नाम सुमीत कहावैं ॥ साधनको नितसेवकरैं अरुहिंसकको धरिमार खपावैं ॥ बासवसी समराजकरैं सुखसे परजा सब बासकरावैं ॥ होत भई तनया तिनकी रति और शची लखि रूप लजावैं ॥ ५७८ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

नामसुमित्रा भूपरखाई ॥ जब वह उग्र अब्द होआई ॥ सिंहल ज्याधव घटक वुलाये ॥ तिनको अवधि निगम पठवाये ॥ ५७९ ॥ योजक अवधि कन्या गृहजाई ॥ सिंहल का सवहालजनाई ॥ शुनभूभुज भूरोहरषाये ॥ कोशल औकय जा गृहआये ॥ ५८० ॥ हर्षयुग्म राणी लखिआई ॥ कपट धार नर नाथ अलाई ॥ वन मृगया कारणमै जावैं ॥ घस्रनयन उत वासकरावैं ॥ ५८१ ॥ तिहकारण पूछन मै आये॥ दीजे आज्ञा मोहि रिझाये ॥ शुनराणी करजोड़ अलाई ॥ तव दाशीमै नाथ कहाई ॥ ५८२ ॥ मै निदेश व्याकरण शकावैं ॥ कन्त जहां तव चित उत जावैं ॥ शुनत नरेन्द्र शुवेश धराये ॥ लग्नशोध प्रस्थान कराये ५८३ ॥ पहुंचे नगर मध्य जब जाई ॥ तब शहरा आदिक मंगवाई ॥ करि कुल रीति वरात सजाये ॥ पत्तन घुरिशशुरालय आये ॥ ५८४ ॥ पश्य सुमित्र नारि हरषाई ॥ लैथाली परछनवर आई ॥ करि कुल रीति लाय जनवासे ॥ नृत्य राग बहु कौन तमाशे ॥ ५८५ ॥ तादिन दशरथ वास करावैं ॥ परदिन पाणी ग्रहण करावैं ॥ तातेवासी व्याह कहायो ॥ अग्रकरीभूरीधन पायो ॥ ५८६ ॥ कछलगि

तिनआदान सुनावैं ॥ ग्रन्थ बढनते अधिकाडरावैं ॥ भार्य्याको नृप विदा कराये ॥ तिहचक्रिन पर हरषाये ॥५८७ ॥

मत्तगयन्द छन्द ॥

यान शवार महीप भयो पतनी मुख देखतहोस हराई ॥ कानन मों वहआय जवे धरि नारि भलो विधि भोग लगाई ॥ दोष भयो तिह कारण काल निशाबलवान महादुखदाई ॥ भागहटायअभाग कयोपतनी जिनकी करकाम बिकाई ॥ ५८८ ॥

पादा कुलक छन्द ॥

जोदिनवासोव्याहकरावैं ॥ ताके परवासरजो आवैं ॥ कालरात्रि सोघस्रकहाये ॥ तादिनजो रतनारि कराये ॥ ५८९ ॥ सोदुर्भगा नारि होजाये ॥ ज्योतिष शास्त्रभणै असगाये ॥ लैदारा सद्मन नृप आयो ॥ दान पुण्यबहुभांत करायो ॥ ५९० ॥ कोशल कैकय जालखियाई ॥ सोतिनरूप पय्य भय पाई ॥ आपुसमोमन्त्रणाकरावैं ॥ भर्त्ताहृप बिलोक भुलावैं ॥ ५९१ ॥ ताते ताका करो उपाये ॥ जाते कान्त न देख रिझाये ॥ अस भणि राणी युक्ति कराई ॥ पूजैं शङ्कर गिरिजामाई ॥ ५९२ ॥ कालदोष राणी जो पावैं ॥ ताते हीन भाग्य हो

आवैं ॥ स्वामी तिनसे स्नेह हटायो ॥ और बहुत नृप व्याह करायो ॥ ५८३ ॥ कह लग तिनका व्याह लिखावैं ॥ भणत भारती भी थकि जावैं ॥ निधि शत युग तिथि मास करायो ॥ तिनमे सुख्य चन्नु मे गायो ॥ ५८४ ॥ कहं लग नयका सुयश लिखावैं ॥ ईश्वर जिनकि पुत्र कहावैं ॥ केलि रहसमो भूप भुलाये ॥ पश्च शनैश्चर गमन कराये ॥ ५८५ ॥ वृषराशिभ रोहिणी मो आयो ॥ ताते बरषा बन्द करायो ॥ भूभर्त्ता कछु हाल न जानै ॥ आप खुशी तैसा जग मानै ॥ ५८६ ॥ अन्नहीन अचला होजाये ॥ ताते कष्ट प्रजागण पाये ॥ पशु पच्छी सब प्राण तजावैं ॥ त्राहि त्राहि सब सृष्टि करावैं ॥ ५८७ ॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

नारदआय भणो धमकाय नरेशगयो भलराज भुलाये ॥ प्राणतजैं परजा जलकेविन आपनहीं कछु हाल मगाये ॥ बासवकी बन जीव जिते जलमो थलमो सब प्राण धराये ॥ बीत गये युग दोकसमा अपनाहिं शचीधवने बरषाये ॥ ५८८ ॥

॥ पादा कुलक छन्द ॥

नरक मध्य तिष्ठोगेजाई ॥ जीयाका नहि करी

चपाई ॥ अस भय मुनि प्रस्थान कराये ॥ तब नरेन्द्र मनमो भय पाये ॥ ५९९ ॥ नगर ग्राम देखन को जावैं ॥ नदि नाला जीवन बिन पावैं ॥ दिन कर पश्चिमओर सिधाये ॥ रजनी कर निज रूप दिखाये ॥ ६०० ॥ महीभुज मही रूह तलजाई ॥ तिष्ठ शोच करते घबराई ॥ निशा शेष होयो जब आये ॥ उठत सारसी कन्त उठाये ॥ ६०१ ॥ जोड पल्लशाखा बतलाई ॥ बहुत शरद दूत बास कराई ॥ ऐशा क्लेश कभी नहिं पाये ॥ जैसा समा-चतुर्दश पाये ॥ ६०२ ॥ कन्दमूल बारी बिन खाई ॥ औरशकैं नहि काष्ट सहाई ॥ भूमीश्वर कछु खबर न लेवैं ॥ निशि बासर बनितनको सेवैं ॥ ६०३ ॥ नारिप्रीतमो राज भुलाने ॥ आप सुखी तैसे जग जाने ॥ और राजमो भवन बनावैं ॥ शुनत पुष्कराह्व समुझावैं ॥ ६०४ ॥ लच्छ पुत्रसे बाम कराऊं ॥ क्यों करिमैं यह राज तजाऊं ॥ शुनत लच्छमणा पुनः बलाई ॥ पापी राज त्याग द्विजराई ॥ ६०५ ॥ शुनत बचन लच्छमणा धमकाये ॥ नृप निन्दा खगि होय कराये ॥ शुन्यो भूप तूजो बतलाई ॥ सूर्य्यपुत्र गृह तोहि पठाई ॥ ६०६ ॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

॥ बाकशुन्यो खगको खगनी जबके शिशुको तब

प्यान करायै ॥ त्रास भयो चितमो पतिमें लखि वौ नर नाथ भयो समुझायै ॥ सारमि शोच करो जिन आप महा तुमसे हमने गुण पायै ॥ वास करौ गृहमो द्रुत आकरि माफ करौ हम दोष करायै ॥ ६०७ ॥

॥ पादा कुलक छन्द ॥

शुन खगनो पहुंची वह आयै ॥ नरपति निज आगार सिधायै ॥ लैमन्त्री नर नाथ विचारा ॥ कुन्द कौन अपमान हमारा ॥ ६०८ ॥ शिखपर्भको मार खपावैं ॥ तो मैं दशरथ नाम रखावैं ॥ असभण द्रुत स्यन्दन मगवायै ॥ चढ़ि स्वाराज लोकमें आयै ॥ ॥ ६०६ ॥ सूत्रामनको गर्ज्ज चलाई ॥ दीजै समर वेग नृप आई ॥ शुनत बिड़ौजसकोप करायै ॥ अमर सर्व को गर्ज्ज शुनाए ॥ ६१० ॥ मनुज जीय सूतनोऽहङ्कारा ॥ शुन चुप चुप सब त्रिदश उचारा ॥ भूप शव्द भेदी शरजानै ॥ शुनत निनद तुझको वह हानै ॥ ६११ ॥ भूभुजको सन्मान करायो ॥ दे आसन तिनको समुझायो ॥ तब वज्रिन दशरथ पै आये ॥ करि भूरी मर्य्याद चलाये ॥ ६१२ ॥ कारण कवन महीश्वर आवैं ॥ तब धरणी धव विहस बतावैं ॥ मृत्युलोक वन दीन करायै ॥ तातै जीव

अस्तु दुख पाये ॥ ६१३ ॥ शुनत मेघवाहन समुझावैं ॥ यह सागर यह द्वीप करावैं ॥ वृषराशिभ रोहणी मो आयो ॥ तावै जीवनवन्द करायो ॥ ॥ ६१४ ॥ शौरि दृष्टिको त्याग करायो ॥ तब भूवन भूवन मो पायो ॥ शुन नरेन्द्र प्रस्थान कराये ॥ पहुचे शनीलोक मो आये ॥ ६१५ ॥ समर देहु भगा शोर मचाई ॥ सप्तम ग्रह देखो तब आई ॥ दृष्टि पड़ी स्यन्दन पर आये ॥ बन्धन तासे भस्म कराये ॥ ६१६ ॥ गिरे भूप चक्रिन लुड़काई ॥ पहुंचे पक्ष्य जटायू आई ॥ डैने पर नृपको बैठाये ॥ प्राणदान अवनीश्वरपाये ॥ ६१७ ॥ जोड पक्षशाखा भूपाला ॥ भणौ कौनतुम भ्रात कृपाला ॥ शुन द्विजबर करजोड अलावै ॥ केशव वाहन पुत्र कहावैं ॥ ६१८ ॥ सम्पाती अग्रज मम जानो । नाम जटायू मोर बखानौ ॥ भवन हमारो गिरि कैलाशं ॥ पक्ष्य भूपतिसे दुखरासं । ६१९ ॥ तिष्ठायेडैना पर भाई ॥ शुन भूधव कर जोड़ अलाई । तव समान मैं मित न पावैं ॥ सङ्कट ते मम प्राण बचावैं ॥ ६२० ॥

॥ मत्त गयन्द छन्द ॥

पावक बाल नरेश तबै द्विजते ततकाल कशो

सिवताई ।। प्रेम बढ़ाकरि जौन शुनै तिनको यम-को नहिं दूत सताई ।। राघवकी पुरवास करै हरि-नाम जपै सब पाप नशाई ।। बेद पुराण कुराणं सबै कबि सिंह वहो प्रभुकी गुण गाई ।। ६२१ ।।

अथ राजादशरथजोकापुनरपिए श नोलोके गमनं ।। एवं श्रीगणेश जीके जन्म की कथा श्रवण कराय करि शनी देवने राजा दशरथ कोशुभ बरदान दिया ।।

।। मत्त महन्द छन्द ।।

ध्यान करो पुन बेम रसापति लिख शनीबर लोक भयो है ।। व्यापन लोचन देव किये बसुधा धिप को समुझाय दियो है ।। नेत्र शरासनको तजि के मम शाच कहो किह काज भयो है ।। साहस देखमहीभुज तोर तुझे हम जीवन दांन दयो है ।। ।। २२ ।।

।। पादा कुलक छन्द ।।

नारायण अवतार धरावैं ।। ताते तुमरो प्राण

बधावैं ॥ मैं अपनी गुण भूप बतावौं ॥ शुभचन्द्र
जिह ओर तकावौं ॥ ६२३ ॥
शमन भवन बह गवन करावैं ॥ कोप दृष्टि गुण
कवन कहावैं ॥ पूर्व निशाकर कथा शुनाऊं ॥
ताते मैं तव भ्रान्ति भगाऊं ॥ ६२४ ॥ जब गौरी
गणपति सुतजाई । न्योते सर्व त्रिदश हरषाई ॥
ले ले तिलक दिवौकसधाये । निजागार मे बास
कराये ॥ ६२५ ॥ निर्ज्जर सब चुगली मिलखाई ॥
ताते देवी दूत पठाई ॥ तत्समय पहुंचे मे जाये ॥
सुतके मस्तक ओर तकाये ॥ ६२६ ॥ पश्यग्रीवको
भस्म कराई ॥ देख उमा गर्ज्जि धमकाई ॥ लै
सुजको बधने असि आवैं ॥ तब गिर्व्वाण सर्व्व
घबड़ावैं ॥ ६२७ ॥ पाणि जोड़ पद्मासन आये ॥
स्तुति करि देवीको समुझाये ॥ तब आत्मज मैं देहु
जिलाई ॥ तब सर्व्वाणी कोप तजाई ॥ ६२८ ॥

॥ मत्त गयन्द छन्द ॥

बेधस मारुतको समुझाय भणौ त्रयभूवन खोज्ञ कराओ
॥ माथकिये दिशलोचनमो जिनको तुम सो-
वत देखन पाओ ॥ काटि अभी उसके शिरको
यण भूमि विषै सुझको दिखलाओ ॥ आशु पयान
करो ततकाल भणौ सब देव न देर कराओ ॥ ६२९ ॥

॥ पादा कुलक छन्द ॥

जगत प्राण प्रस्थान कराये ॥ मृत्युलोक पाताल सिधाये ॥ उत्तर शीर्ष बिलोक न पाई ॥ पहुंचे इन्द्रलोक मो जाई ॥ ६३० ॥ ऐरावण को पश्य हसाये ॥ मुण्ड उदीचो ओर रहाये ॥ ले कुठार काटें हरषाई ॥ दीना परमेष्ठिन कोलाई ॥ ६३१ ॥ ले अर्भक धड़ जोड़ लगाये ॥ नाम गजानन बिहस धलाये ॥ शुनत अम्बिका कोप करावैं ॥ गजमुख मम अङ्गज कहिलावैं ॥ ६३२ ॥ पाणि जोड़ सृष्टि बतलाए ॥ सब अमर्त्यके भूप बनाए ॥ अग्रे गे इनको सब आगे ॥ सुरनरमुनि आदिक बड भागी ॥ ॥ ६३३ ॥ तब षण्डो मन मोहरषावें ॥ कलप कलप सुर कन्त अलावें ॥ मम मदकलको मार खपाये ॥ शुनत द्रुहिणपुन बात बुलाये ॥ ६३४ ॥ भयो विधाता तिन्हैं बुझाई ॥ जा शिर पाव प्रतीचो भाई ॥ ताको काट शीघ्र ले आवैं ॥ शुनत प्रभञ्जन गमन करावैं ॥ ६३५ ॥ मृत्युलोकमो तत्त्व कराई ॥ सुन्दर शुक्ल करी लखि पाई । ककुभा पश्चिम शीर्ष रहाये ॥ ताको काट अनिल ले आये ॥ ६३६ ॥ के खदभ्र ऐरावण जोरा ॥ ऐसो दृष्टि शचीपति ओरा ॥

तुम भूभुज कछु नाहिं डराये ॥ बर मांगो मरजो जो आये ॥ ६३७ ॥

॥ मत्त गयन्द छन्द ॥

जोड़ भुजा दलको अवनीपति मांगत हैं बर देहु रिझाये ॥ जीवनदान करो मुझको जिसमो सब जीवन जीव धराये ॥ रीझ भयो शुन हाल शनीसुर जाव तुझे बन दान कराये ॥ वाहि गुरू पद सारस मो कविसिंह झुका निज माथ चलाये ॥ ६३८ ॥

अथ महाराज दशरथजी के येक कन्याभई तिसको लोमपादराजा ने मंगवाय लिया और अन्धक मुनिके पुत्र सिन्धुनामकमुनि को मृगजानके महाराज दशरथने बाण मारा ॥

॥ झूलना छन्द ॥

शुने वाक्य भूपालने सौरिकी हो खुशी आपने गेहमो लौट आये ॥ वहां बाड़कैकेतुराआहने धूम योनो

भुला बेग दोना पठाये ॥ कहूं बेद वै मेवधी नाम को जीन जीमूतने बेग बारी गिराये ॥ जिसे पायकी जीवने ∙जीव पाये यश:भी महाराजका लोक गाये ॥ ६३८ ॥

॥ पादा कुलक छन्द ॥

बारिद ग्लौ चावर्त्ति कहावैं ॥ अभ्र युगल पुष्कार बतलावैं ॥ जलधर लोचन द्रोण कहाये ॥ जल मुच युग सम्वर्त्त रहाये ॥ ६४० ॥ यह चारी धारा धर धाई ॥ अप दिन सरित कान्त बरषाई ॥ सब भयो परजा सुख पावैं ॥ सुखसे भू भुज राज करावैं ॥ ॥ ६४१ ॥ खगड सहस्र चन्द्र हो आये । तब भू भृत कन्या भू जाये ॥ कौन व्याह निश्चि शत उल्लासा ॥ तामे भार्गव जा दुखनाशा ॥ ६४२ ॥ सोराणी पुत्री भूजाई ॥ हेमलता शुभ नाम रखाई ॥ और अवज मे कथा शुनावैं । ... सज्जन प्रीति करावैं ॥ ६४३ ॥ अङ्ग नाम जो देश कहाये ॥ लोमपाद भू कान्त रहाये ॥ दशरथकी सो सखा कहावैं ॥ तिनसे भुनता सख करावैं ॥ ६४४ ॥ प्रथम पुत्र मेरे जो होई ॥ दान करौं तुमको मै सोई ॥ पहिलेसे यस कौल रहाये ॥ लोमपाद शुनमे यह पाये ॥ ६४५ ॥

अवधि मध्य निज दूत पठाई ॥ लीना दुहिताको मगवाई ॥ दै तनया दशरथ फलपावै ॥ शोकपाय बन गमन करावै ॥ ६४६ ॥

॥ झूलना छन्द ॥

गये भूप आगारको त्यागके वामलोकेशको ध्यानलीना कराये ॥ गये अंधके पूतसिन्धू मुनीराजकोलालके बीच गाड़ू डुबाये ॥ भयो भ्रांति भारी शुन्यो शोर-भारो कहा भूपने बारिको एणखाये ॥ लयोबाण थोथाणिमे चापको हो खुशीटानके भूपहीना चलाये ॥ ६४७ ॥

॥ पादा कुलक छन्द ॥

लग्यो शब्दभेदीशरजाई ॥ लोटैं विप्रपुत्र तड़फाई ॥ भूपरखु लेनेको आये ॥ पश्य मुनीसुतको वह-आये ॥ ६४८ ॥ व्याकुलदेख विप्र बतलावैं ॥ मैं अपनो कृतको फलपावै ॥ पूर्वजन्मको कथा शुनाऊं ॥ तासै नृप तव भ्रान्ति भगाऊं ॥ ६४९ ॥ हमराजाके पुत्र रहावैं ॥ नित शिकार वन मध्य करावैं ॥ वासर भूषा हाल शुनाऊं ॥ आण्डज युग्म पश्य मै पाऊं ॥ ६५० ॥ नर मादिन शृङ्गार करावैं ॥ वहि समय नरको धरि खावैं ॥ मादिन मुझको शाप चलाई ॥ धरिहौ

अपर जन्म जब जाई ॥ ६५१ ॥ बहु बिधि तनको त्याग कराओ ॥ तिह कारण मुझको नृपघाओ ॥ और शोकमें नाहिं करावें ॥ मम बिन मात तात मर जावें ॥ ६५२ ॥ ताते भूभुज सत्य कराओ ॥ जनक निकट मुझको पहुंचाओ ॥ शुन भुनता मञ्जूर करावैं ॥ बिप्र विष्णुका ध्यान लगावैं ॥ ६५३ ॥ नारायण मुख कीन्हउचारा ॥ तत्समय सुरलोक मझारा ॥ तब नरेन्द्र शवको लैलीना ॥ गमन मुनी कुटियामो कीना ॥ ६५४ ॥

॥ झूलना छन्द ॥

वहां मातको तात भाखें कहो आज काहे महा तात देरी कराये ॥ नचे बामकी ओरकी नेत्र पाणी कहो आज पूतं कहां बोलधाये ॥ यही बीचमो भूप आये वहां जानके आपनो आतमाविचलाये ॥ भणें खालसासिंह पूछें मुनीराज क्यों येतको तात देरी कराये ॥ ६५५ ॥

अथ अन्धकमुनिने महाराज दशरथजीको पुत्र शोकसो मरणोके वास्ते शापदिया एवं वशिष्टमुनी के पुत्रबामदेव चण्डाल योनौ को प्राप्त भये ॥

॥ झूलना छन्द ॥

सुने भूप भूदेवकी बाककी त्रास पाये महा पैर पाछू हटाये ॥ भयो वै मूनी जानकी आतमा जात क्या बापसे आज खेलं मचाये ॥ रह्यो मौनक्या कारणे पूतमोको कहो मैनहीं ताड़ने को शकाये ॥ तबैभीत होके भगे भूमि स्वामी मुनी भीरह्यो ध्यानकोवै लगाये ॥ ६५६ ॥

॥ पादा कुलक बन्द ॥

मुनिवरने जब ध्यान लगायो ॥ कारण सकल जान तब पायो ॥ पुत्रमार भूमीश्वर लाए ॥ भाष मुनी वर कोप कराए ॥ ६५७ ॥ बङ्गजशोक मुझे दिखलावैं ॥ तातेमैं निज प्राण तजावैं ॥ गातज शोक भूप भी पाई ॥ मम सम प्राण तजो तड़फाई ॥ ६५८ ॥ शुनत क्षमा भुक हर्ष बढ़ाये ॥ पाणि जोड़ि शुभ मस्तु भषाये ॥ पुत्र होनकोमैं वर पायो ॥

सुनत वच जाती घबड़ायो ॥ ६५६ ॥ आपहीन वर भूप बतावैं ॥ क्या कारण भण ध्यान लगावैं ॥ ध्यान योगते कीन्ह विचारा ॥ विप्रप्रभो लिवैं अवतारा ॥ ६६० ॥ अस विचार बाड़व हरषाये ॥ दशरथको बरदान कराये ॥ सुनहु क्षमा भुज वचन हमारा ॥ पुत्र वेद होवें करतारा ॥ ६५१ ॥ समा सर्व्व राघव होजावैं ॥ तव नरेश तव प्राण हतावैं ॥ अरुजैवाहक कथा सुनाऊं ॥ जातेअन्धक नाम रखाऊं ॥ ६६२ ॥

॥ भूलना छन्द ॥

मुनी सोम आगारमो आय मेरे रह्यो वैजटा नाम ताको नरेशं ॥ रह्यो पैरके बीचमो गोद भारी कर्यो तात पूजा विधो ज्यों महेशं ॥ कह्यो तात मोको करो पाद सेवा घृणाधार मैं मौन होयो नरेशं ॥ लख्यो बापने डांटके खूब आखैं तबै बासको पायको मैं हरेशं ॥ ६६३ ॥

॥ पादा कुलक छन्द ॥

सुनके जनक वचन घबड़ाये ॥ लेदारा अश्रु नयन आये ॥ नयन मूंदि प्रणि पात कराई ॥ ताते द्विजवर कोप घराई ॥ ६६४ ॥ शार्दूल सम गर्ज्ज अलाए ॥ तुमको लोचन हीन कराये ॥ मिष्ट वचन कैसो भूपाला ॥ कबहु न पद्धे होत ततकाला ॥ ६६५ ॥

अब शृङ्गको बेहु बुलाई ॥ कीजे वाजि मेध सुखदाई ॥ नारिकेल यह फल लै जाओ ॥ जाते सुत नारायण पाओ ॥ ६६६ ॥ अस भण बाड़व वर फल दीना ॥ खुशी होय पार्थिव लै लीना ॥ निज सुतको मागो मुनिराई ॥ दीना भूप विप्रको जाई ॥ ६६७ ॥ लै अङ्गज बसुधा मरगावैं ॥ यह फल कवन पाप ते पावैं ॥ स्याय बिस्त इगो क्या भाई ॥ क्या गुरुको दूर्वासा भलाई ॥ ६६८ ॥ असभण द्विज भूरी काल पावैं ॥ नारायणको याद करावैं ॥ मुखते केशव कीन उचारा ॥ तत अवसर गोलोक मझारा ॥ ६६९ ॥

॥ भूलना छन्द ॥

पती मौतको देखके नारिने गातको त्यागके देवता लोक धाई ॥ लयो भूपने लाशको रोय भूरी धरैं जा नदी तीरके बीच भाई ॥ चिता मेलकोना पटीरं मगाये दयो धूप धूना मुनीको सुताई ॥ दयो वौतिहोवं महीपाल ताकौं पुनः हेमभारी चितापे लुटाई ॥ ६७० ॥

॥ पादा कुलक छन्द ।

शवदाहन करि चिता पखाला ॥ रोवत कालप कलप भूपाला ॥ निज दुरुकृत लखिके भय पाये । गुरु वशिष्टके भवन सिधाये ॥ ६७१ ॥ गुरु मन्दिरमो गुरु नहिं पायो ॥ वामदेवको हाल जनायो ॥ सुनत

वशिष्टात्मज बतलावैं ॥ जाते बालमीक गतिपावैं ॥ ६७२ ॥ रामनाम त्रैबार जपाये ॥ ताते भस्म पाप होजाये ॥ हो प्रसन्न न्टप सौध सिधाई ॥ पहुंचे सदन मुनी तब आई ॥६७३॥ बामदेव कर जोड़ बतावैं ॥ द्विज हत्या भुनता करि आवैं ॥ बार नयन मैं राम जपाई ॥ तब हत्या प्रस्थान कराई ॥ ६७४ ॥ शुनत कोप करि विप्र अलाये ॥ चन्द्रवारकि राम जपाये ॥ अनन्त ब्रह्म हत्या कटि जावैं ॥ बारचक्षु तूं राम जपावैं ॥ ६७५ ॥ होय ममात्मज ज्ञान न आयो ॥ राम नामका मूल्य घटायो ॥ भोग योनि चण्डाल सिधाईं ॥ शुनत पुत्र रोवत कलपाईं ॥ ६७६ ॥

॥ भूलना छन्द ॥

कह्यो तातिको वे मुनिराजने नाम जाका शिशू भूपको तू रटाये । धरैं औधिसो रामवे गातको आपकी गेहसो नाथ वे जारहाये ॥ शुना पूतने गातको त्याग भी फेर आयो मही देह दूजा धराये ॥ भयो भूलना खालसा सिंह गाये भलो गूहकांनाम ताका रखाये ॥ ६७७ ॥

अथ सम्बर असुर वध।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अमरलोककी मध्यमें असुर लियो अवतार॥ सम्बर ताका नामहै कीना युद्ध अपार॥ कीना युद्ध अपार इन्द्रको दियो भगाई॥ अमरावतिकी छीन राज कीना हरषाई॥ लिख शर्भ भय पाय भये बंधसको जाये॥ लयो दनुज ममराज भाग मैं प्राण बचाये॥ ६७८॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुनत प्रजापति युक्ति बताई॥ दशरथको नृपलाव बुलाई॥ सम्बरको वह मार खपावैं॥ शुन बज्रिन प्रस्थान करावैं॥ ६७९॥ अवधिपुरी सुवामन आई॥ भयो क्षमाभुककी समुझाई॥ राज्य पुण्य जन लीन छिनाये॥ तिनको भूभृत देहु खपाए॥ ६८०॥ शुनत वचन दशरथ मुशकाई॥ सुरपतिको करजोड़ अलाई॥ अद्य जायमैं देहु खपाये॥ शुन मघवत आसीश कराये॥ ६८१॥ भूप कटक निज लीन बुलाई॥ चढ़ स्यन्दन सुरलोक सिधाई॥ सम्बर असुर पश्य भय पायो॥ रण कारण निज बलय पठायो॥ ६८२॥ भूभुजका रथतोड़ खपाये॥ जर जर शर भर गात कराये॥ बलय सर्ब्ब भागे भय

पाई ॥ समर मचेलि भूप कराई ॥ ६८३ ॥ शर गन्धर्व नाम नृप मारा ॥ ताते सर्व अनीक विदारा ॥ ध्वजिनी पात पश्य भय पायो ॥ हो अदृश्य शर असुर चलायो ॥ ६८४ ॥ ताते नरपति अति भय पाये ॥ काल पाणि सम्बर हो आये ॥ मार मार भण शोर मचाई ॥ रव भेदी शर भूप चलाई ॥ ६८५ ॥ सो कलम्ब सम्बरको घाये ॥ पश्य अस्वप्न सर्व हरषाये ॥ नराधीप आखण्डल लाई । देसुरपुर प्रणिपात कराई॥ ६८६ ॥ भाषैं शची कान्त हरषाये ।। बरमागो मरजी जो आये ॥ शुनत बचन दशरथ हरषावैं ॥ जोड़ प्रवेष्ठ विहर्ष अलावैं ॥ ६८७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

मुझको यह बर दीजिये हो प्रसन्न सुर राज ॥ द्विजहत्या मम भस्म हो और कछू नहीं काज ॥ और कछू नहिं काज हर्ष सुरराज अलाये ॥ राम नामको भाष भूप निज पाप नशाये ॥ भणे खाम्लसा सिंह शुनत दशरथ हरषावैं ॥ निज संशयको नाश वेग आगार सिधावैं ॥ ६८८ ॥

अथ श्रीमती केकयी राणीको महाराज दशरथजी वर देने अङ्गिकार किया ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

इन्द्राणी संहारकी पहुंचे सदन आय ॥ कैकयजा की भवन मो शयन कीन घबड़ाय ॥ शयन कीन घबड़ाय पश्च राणी द्रुत आई ॥ स्वामीकातन देख बहुत मनमो अलपाई ॥ आणजखमकेदहु भूप लोटैं तड़फाये ॥ जैसा जलसे मीन आरे सूखेमो आये ॥६८९॥

पादाकुलक छन्द ।

मन्त्रास्त्र सञ्जीवनि राणी ॥ पढ़ जलकीलीनाम्नि जपाणी ॥ मई न कन्त अङ्गमो कीना ॥ ताते कष्ट सर्व्वहरलीना ॥ ६९० ॥ तुष्ट होय नरनाथ अलाये ॥ तुझसे प्राणदान मै पाये ॥ तब सम मोर प्रिया नहीं कोई ॥ बरमागी मरजी जोहोई ॥ ६९१ ॥ शुनत वचन राणी हरषाई ॥ कुबड़ीसे पूछें मुशकाई ॥ कान्त मुझे बरदेन कहाये ॥ क्या मागूं बरदेहु बताये ॥६९२॥ शुनत मन्थरा दुष्टअलावैं ॥ कोन अद्यवरतोहि बतावैं ॥ कहो कान्तको जाय बुझाई ॥ बर राखो ममचेत कराई ॥ ६९३ ॥ जब कछु मोहि प्रयोजन लागै ॥

तबलिबे बरको बड़भागी ॥ सुनति कुमति राणी हर-षाई ॥ जोड़पाणि पतिको समुझाई ॥ ६८४ ॥ मृत्यु प्रवेष्ट भूप हो पाये ॥ कीना अङ्गीकार हसाये । सुनत दुष्ट कुबड़ो हरषाई ॥ जसदरिद्र भूरी धनपाई ॥६८५॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

स्वर्गलोकके मध्यमो सुरगण करैं विचार ॥ दश रथको यह सत्यसेरावणका संहार ॥ रावणका संहार रामकाननमो जावैं ॥ अन्तनको गणतार अमरको कष्ट कटावैं ॥ भयोखालसा सिंह विश्व स्वारथको भाई ॥ ईश्वरको बनवास लेख मङ्गल सब गाई ॥ ६८६ ॥

अथ श्रीमती कैकयी राणीको महाराज दशरथजी पुनश्च वर देने अङ्गीकार किया ॥

पुन द्वितीय बरदानको सुर सब कीन उपाय ॥ ब्रण व्याधी नखमे भयो भूभुज प्राण तजाय ॥ भूभुज प्राण तजाय भिषक गण पथ्य हराये ॥ कीना औषध कोट. रोग नहिं टार सकाये ॥ पुन धन्वन्तरि आय भूपको भयो बुझाई ॥ आमय भयो कठोर घमा भृत कारी उपाई ॥ ६८७ ॥

॥ पादा कुलक छन्द ॥

पद्माक्षर तिह नाम रहाये ॥ सो नरेन्द्रको अगद बताये ॥ शम्बुक यूष करा नृप खाओ ॥ ताते प्राण दान निज पाओ ॥ ६९८ ॥ भूप भयो जल शुक्ति न खावें ॥ प्राण जाय मंजूर करावें ॥ कहे चिकित्सक पुन समुझाये ॥ व्रणकाछुते लेह चुषाये ॥ ६९९ ॥ ताते रोग दूर तब होई ॥ शुन रानो सोकाय जाईई ॥ स्वामोको कर जोड़ चलावें ॥ मै चूषण करि कष्ट कटावें ॥ ७०० ॥ शुन भुनता भाषे काल पाये ॥ रक्त पूंज मुखमो तब जाये ॥ तब राणी कर जोड़ अलावें ॥ कन्त व्रनामै व्यर्थ कहावें ॥ ७०१ ॥

शुन नरेन्द्र बोलें दुशकाये ॥ करोजौन मरजोतव आये ॥ पाणि पकड़ चूषण व्रणकीना ॥ रुधिर पीप मुखते हरलीना ॥ ७०२ ॥ लैताको अवनीमोडारै ॥ जसयोगो औगुण गणटारैं ॥ करि ईक्षण नरपति हरषाये ॥ असको करै बिश्वमो आये ॥ ७०३ ॥ बिस्फोटकको दूर करावें ॥ प्राणदान अवनीश्वर पावें ॥ राणीको हो तुष्ट अलाये ॥ मन बाञ्छित मागो वर आये ॥ ७०४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन राणी पुन दुष्टको भणै आशु हरषाय ॥

बरभर्त्ता देने कहैं क्यामागूं मैंजाय ॥ क्या मागूं मे जाय कूबडी युक्ति बताई ॥ कहो आन्तको जाय मिले मागूंजब थाई ॥ भयो खालसा सिंह वहीं बिधि जाय जनायो ॥ हो प्रसन्न नरनाथ वाक मञ्जूर करायो ॥ ७०५ ॥

अथ श्रीऋष्यसिंह का जन्म।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुतधी कारण भूपको सोच्य होतबहुताय ॥ द्विजगणको बुलवायके बैठे सभालगाय ॥ बैठ सभाल गाय भूप करजोड़ भलाये ॥ पुत्र हीन यह भत्य कष्ट ताते बहु पाये ॥ पङ्कजते सब नाथ पित्र जीवनको पावैं ॥ औरगयामोपिण्डदहन मुख मध्य लगावैं॥७०६॥

॥ पादा कुलक छन्द ॥

पुत्र शून्य होवे नरजोई ॥ प्रात तुण्ड देखे नहीं कोई ॥ भुनि अम्बक मुझको बतलावैं ॥ ऋष्य-शृङ्ग तेमेधकरावें ॥ ७०७ ॥ ताते तव आत्मज युग होई ॥ नाथ कहा मुनि पुङ्गव सोई ॥ किनके सुत कैसे मुनि राई॥ सुनत बशिष्ठ भयो समुझाई ॥७०८॥ बिभाण्डक मुनि राज कहावैं ॥ घोर तपस्यारम्भ

करावैं ॥ पश्य इन्द्र अतिशय भय पाये ॥ तपस भ्रष्ट काकौन उपाये ॥ ७०६ ॥ पवन भ्रात निज निकट बुलावैं ॥ दै अमृत तिनको समुझावैं ॥ मुनिहरिको द्रुत देहुखिलाई ॥ लै मारुत पहुंचे तब आई ॥७१०॥ बिभाण्डक मुनि भवन सिधावैं ॥ कन्दमूल कुटिया सोपावैं ॥ तिनमोपीयुषदीन लगाई ॥ तिन फल सहित सुधा मुनि खाई ॥ ७११ ॥ ताते विष्टपुष्ट हो जावैं ॥ तप कारण नदिकी तट आवैं ॥ चक्षु उलट ज्यो ध्यान लगाये ॥ त्यों सुरपति पुनयुक्तिकराये ॥ ७१२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

बुलवा करि उर्व्वशीकोभयो जिसुमम् भाय ॥ दैदर्शन निज गातको छलोतपोवरजाय ॥ छलोतपोवर जाय तपस्या भग्न कराओ ॥ जो चाहो सो लेहु काज करिकी जब आओ ॥ सुनत बचन उर्व्वशी खूब शिङ्गार कराई ॥ धरिधांकोद्र,तरूपनिकट मुनि वरकै आई ॥ ७१३ ॥

॥ पादा कुलक छन्द ।

झननन नेपुरकी रबकोना ॥ ध्यान भङ्ग मुनि का करि दीना ॥ नारि बसन निजदीन खसाई ॥ पश्य तपोवर चेतहराई ॥ ७१४ ॥ मन चञ्चल नहिं रोकपकाये ॥ रेतपतनमुनिकाहोजाये ॥ वाहि

समय हरिणी भूखाई ॥ शुक्रचाट प्रस्थान कराई ॥७१५॥ ताते गर्भवती हो जाये ॥ प्रसव समय हरिणीको आये ॥ जल खाने नदिकी तट आई ॥ कमल पान करि प्रसव कराई ॥ ७१६ ॥ सुत विलोक हरिणी भय पावैं ॥ मानवकी समरूपलखावैं ॥ निज सम श्रृङ्ग रूहलखिपाये ॥ त्रास पाय बन गमन कराये ॥ ७१७ ॥ तप करि विभाण्डक गृहजावैं ॥ शावक रूप पश्च-घबड़ावैं ॥ मनुआकार रूप सम हरिणी ॥ फेके कौन लाय करि धरणी ॥ ७१८ ॥ ध्यान योगतेकीन विचारा ॥ अर्भक परम पुरुष अवतारा ॥ मम औरसह रिणीने जाये ॥ असलखि मुनि सुत गोद उठाये ॥ ७१९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कछुक दिवस बीते अबै सुतकी शीर्ष मझार ॥ शृङ्गयुगल उद्भव भये शोभा भई अपार ॥ शोभा भई अपार रूप वर्णन नहि जाये ॥ शृङ्ग होनकी हेतु नाम ऋषि शृङ्ग रखाये ॥ भणै खालसासिंह कहैं मुनिगण समुझाई ॥ पुत्र आपकी होय लावतिनको नृप जाई ॥ ७२० ॥

अथ ऋष्यसिङ्गका विवाह ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

मुनि बशिष्ठका वचन यह जबहोगो अवसान ॥ तब सुमन्त्र भाषत भये भूभुज शुनौ महान ॥ भूभुज शुनौ महान अङ्ग उत्तमजो देशं ॥ लोमपाद भूपाल आपके सखा नरेशं ॥ तिनकी सद्मन मध्य शृङ्गऋषि रहे भुलाये ॥ जाकरिके नृप लाव पतामै सत्य बताये ॥ ७२१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुनत बचन दशरथ हरषावैं ॥ जिज्ञासा पुन ताहि करावैं ॥ कहो सुमन्त्र मुझे समुझाई ॥ कथा कारण अङ्गशमगाई ॥ ७२२ ॥ तब सुमन्त्र पुन भाष सुनाये ॥ बर्षा दिन कर वर्ष न पाये ॥ अन्न विना पर आदुखपाई ॥ तब नरेन्द्र मुनि गण बुलवाई ॥ ७२३ ॥ जोड़ प्रवेष्ट तिन्हैं बतलावैं ॥ कारण कवन कमल नहि पावैं ॥ तब द्विजगण नृपको बतलाये ॥ प्रजा दुष्ट अपराध कराये ॥ ७२४ ॥ पुष्पवती कन्या हो जाई ॥ ताते बारी लोप कराई ॥ ऋष्यशृङ्गको लेहु बुलाये ॥ तिनकी पद अर्चत दुख जाये ॥ ७२५ ॥ शुनत बचन भुनता हरषावैं ॥ नगर घोषणा दीप्रकरावैं ॥ अहँ

राज मेरो वह पाई ॥ देवे ऋष्यशृङ्ग जो लाई ॥७२६॥
सुनत खबर कुटनी भू धावै ॥ पञ्चशाख निज जोड़ बतावै ॥ तरणी भूप त्यार द्रुत कीजे ॥ तापर तरु रोपण करि दीजे ॥ ७२७ ॥ तामें रतन जड़ो बहु भाती ॥ नई नई योवन मद माती ॥ गणिका देह शिंगार कराये ॥ जावें मे मुनि सुत भुलवाये ॥ ७२८॥ शरद चतुर्द्दशकी मुनिबालं ॥ वेश्या लखि भूले भूपालं ॥ सुन महोपमनसो मुशकाये ॥ सामग्री प्रस्तुत करवाये ॥ ७२९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कनक रत्न जड़िकेभली नौका कीन तयार ॥ वैजयन्ती टैकरिसजो शोभा भई अपार ॥ शोभा भई अपार महीरुह दीन लगाई ॥ बहु प्रकार पकवान और मेवा रखवाई ॥ चुन चुन तरुणी बहुत भूप लीना मगवाये ॥ करि सुन्दर शिङ्गार पोत ऊपर तिष्ठाये ॥ ७३० ॥

॥ पादा कुलक छन्द ।

तिनका रूप न वर्णन जाये ॥ जिनको रम्भा पश्य लजाये ॥ नख शिखसे शिङ्गार कराई ॥ पाणि जोड नृपको बतलाई ॥ ७३१ ॥ तपस्वीको छलने पठवावें ॥ कोप करें तब कवन बचावें ॥ सुन सङ्ग-

टिका तिन्है अन्हाई ॥ मैं करि हौं रच्छा तब जाई ॥ ७३२ ॥ जब यौवन ममथो भरपूरी ॥ तब मै ठगे महामुनि भूरी ॥ वृद्ध होनकी हितु लचारू ॥ लै तुमको जावैं मुखचारू ॥७३३॥ नूतन बिपद तुम्है भइ भूरी ॥ मै लाऊं धरिकै जसनूरी ॥ शुन युवतीगण हर्ष सिधाई ॥ नौका को दूती चलवाई ॥ ७३४ ॥ विभा-ण्डक मुनिकी बन आवैं ॥ साजबजा करि राग अलावैं ॥ रागश्राम मुनि सुत शुन पाये ॥ बेद ध्यान को त्याग कराये ॥ ७३५ ॥ आश्रमकी बाहर चलि आवें ॥ नृत्य राग लखि चत हरावैं ॥ नर नारीका भेद न जानै ॥ रूप पश्य सुत अमर बखानै ॥ ७३६ ॥ निकट आय पदमो शिर नावैं ॥ करि ठगनी आशीस अलावैं ॥ कहो तातिकाकै तुम जाये ॥ ऋष्यशृङ्ग परिचय बतलाये ॥ ७३७ ॥ पुन मुनिसुत भाषैं शिर नाई ॥ कुटी मध्य चलियेसुखदाई ॥ तब दूती आश्रममो आवैं ॥ लियां सर्ब युग और रहावैं ॥७३८॥ ताको छबि कबिने लखि पाई ॥ जस तारागण मो शशि आई ॥ दैफलको मुनि सुत बतलावैं ॥ इसको प्राशन नाथ करावैं ॥ ७३९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुतन बचन ठगनी कह्यो ठगताई हरषाय ॥ और मुनी

जैसा करैं तैसो मोहिं बताय ॥ तैसो मोहिं वताय रसाको भयो दुखाई ॥ बिन अर्चे निज इष्ट देव कैसे फल खाई ॥ शुनत बचन कर जोड़ भयो मुनि शिशु समुझाये ॥ कीजे अपचितिनाथ त्वरित निज इष्ट मनाये ॥ ७४० ॥

॥ पाद्दा कुलक छन्द ॥

असभया शिशु आसन रख दीना । तापर कुटनी आसन कीना ॥ पाणि नासिका मध्य लगायो ॥ नयन उलट द्रुत ध्यान करायो ॥ ७४१ ॥ पश्च ध्यान तपस्विजहरषावैं ॥ देर नहीं सुर प्रगट करावैं ॥ अहणा धरि नैवेद्य कराई ॥ कर प्रसाद ले मुनिज बुलाई ॥ ७४२ ॥ कामेश्वर भेषज दै दीना ॥ ताको लै भक्षण शिशु कीना ॥ भोजन करत मत्त होजावैं ॥ तब युवतीगण बसन खसावैं ॥ ७४३ ॥ गोदी बार मुखा भूलीना ॥ और इन्दु चुम्बन मुख कीना ॥ घोषास्तन बिधुस्पर्श कराई ॥ और शशीगलमोलपटाई ॥७४४॥ सोम सुन्दरी पान खिलावैं ॥ और अब्ज मृग मद मुख पावैं ॥ मारो चचुत्राणते कोई ॥ घायो अङ्ग मसखिकरि कोई ॥ ७४५ ॥ विकल सम्भलीपश्च बतावैं ॥ बेद पाठ सुत जाय करावैं ॥ और मृगाङ्क शिष्य गृह जाये ॥ दे दर्शन पहुंचैं पुन आये ॥ ७४६ ॥

शुनत वचन मुनि शिशु घबड़ायो ॥ करि क्रन्दन करजोड़ चलायो ॥ क्या अपराध मोरमुनि राई ॥ जाते सेवक तजन कहाई ॥ ७४७ ॥ भृत्य होय तब साथ सिधावें ॥ जोनिदेश जब होय बजावें ॥ शुनत वाक कुटनी हरषाई ॥ मुनि सुतको भाषै समझाई ॥ ७४८ ॥ अभी और सेवक गृह जावें ॥ सन्ध्याको तब भवन रहावें ॥ असभण द्रुत प्रस्थान कराई ॥ तिष्ठी तरणी मो सब आई ॥ ७४९ ॥ जब दिनकर पश्चिमको धाये ॥ तब बहु ऋष्यशृङ्ग घबड़ाये ॥ मणि बिनु फणि जससिर पटकावें ॥ तसतिनसे बिन शिशुकलपावें ॥ ७५० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

जस आत्मजकी कारणे डकरे गाभी धाय ॥ तस मुनि सुत तड़फत फिरें बन बनमो घबड़ाय ॥ बन बनमो घबड़ाय कहो तिनको नहि पावें ॥ पुन आश्रमको पथ्य त्वरित बनमो पुन जावें ॥ इसी तौर शतबार तस्व करिके घबड़ाये ॥ तिनका गमकछु कहूं छन्दमश्नवीमनाये ॥ ७५१ ॥

॥ मश्नवी ॥

मुनी उस्को गमके वियोगी हुये ॥ चले खोजने उनको रोते हुये ॥ लगे पूछने सबदरख्तोंसिजा ॥

पत्थर भी कङ्कड़ भी रस्तों मिला ॥ ७५२ ॥ दरख़्तों इधरसे कभी टुक नज़र ॥ दिलचोर आलमका दीजे ख़बर ॥ कहो गुलबदन्‌बे कहां गुमभया ॥ कहो गुल्‌ चेहरवे कहां को गया ॥ ७५३ ॥ कहो सङ्ग ऐसङ्ग दिल्‌हैं कहां ॥ किया मुझको घायल जो आकर इहां ॥ कहो कङ्कड़ो माहरूकी ख़बर ॥ कहीं तूने देखाहै जाते इधर ॥ ७५४ ॥ कहो राह माशूक हैं वे कहां ॥ बताहै दुझ वे छपेहो जहां ॥ इसी तौरसे मुनूका रो रो पिसर ॥ लगा देने जङ्गलमें सबको ख़बर ॥ ७५५ ॥ किसीने न उसको दिया टुक्‌ खिरा ॥ दरख़्तोंकी छाया मो जाकर गिरा ॥ इसी अर्समे उसका आया पदर ॥ इक्षेमे देखा नहीं है पिसर ॥ ७५६ ॥ होकर दिवानेसे फिरते मुनी ॥ जङ्गलकी अन्दर मो रोनाशुमो ॥ कलपा रहा वह मुनीका पिसर ॥ जल्‌दीसे उसका गयातब पदर ॥ ७५७ ॥ गोदी उठाकर बिठाया उसे ॥ कलेजेमे अपने लगाया उसे ॥ लगी पूछने उसा चुमकार कर ॥ कहो तुझको लाया है किसने इधर ॥ ७५८ ॥ पिसर तब लगा कहने कुछ खाइये ॥ तब दिल चोरका हाल बतलाइये ॥ इक्षेमे जाये मुनी ले पिसर ॥ फल फूल खाया जो था उनकी घर ॥ ७५९ ॥ लगी पूछने फिर

पिअरको बुला ॥ कहो कौनसा काज आया बला ॥ पिअर तब लगा कहने सुनिये पदर ॥ तपस्याको जब आप जावें उधर ॥ ७६० ॥ वहींसे आये स्वर्गो सब यहीं ॥ जगमें नहीं रूप वैसे कहीं ॥ कोमल सा उनकि था शिरपर जटा ॥ शोभेमें होगोश्रत पिशौसटा ॥ ७६१ ॥ जो उसपर पदर दस्तको लाइये ॥ तो जिन्नतकी आरामको पाइये ॥ हसी वह मुनिजबशुना य खबर ॥ लगी कहने य कुछ न जाने पिअर॥७६२॥ लगे बेटको फिर बुझाने मुनी ॥ कथ्बीको है कौम काफरशुनी ॥ अगर मुझसे जालिम वे डरती नहीं ॥ तो तुझको यहा पर व रखती नहीं ॥ ७६३ ॥ अगर्चे फिर कल आवें वे सब इधर ॥ तोनजदीक उनकि न जावें पिअर ॥ अगर उनकी नजदीक मो जायगे ॥ तो तुझको वे काफर ले भख जायगी ॥ ७६४ ॥ शुनकर कहा तबपिअरने बुझा ॥ पदर उनका गुण कुछ न तुझको सुझा ॥ ऐशा नहीं आप फरमाइये ॥ ऐसे नहीं सिद्धको पाइये ॥ ७६५ ॥ अगर कालखोटा मुझको देवें मिला ॥ तो जाऊंगा उनकी मैं सङ्गमो चला ॥ पदरसे बिदा अब मैं हो कर रहा । मेरे दिलका अहवाल जो सो कहा ॥ ७६६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पुत्र वचनको श्रवण करि मुनिवर अतिकलपाय ॥ लेअङ्कजनिजगोदमो रजनी भर समुझाय ॥ रजनी भर समुझाय शृङ्गमुनि एक न मान्यो ॥ प्रगे होत मुनि राज चित्त अपने यह ठान्यो ॥ कौन कौनको पुत्र पिताकाको को होई ॥ नारायण भूसत्य और काको नहि कोई ॥ ७६७ ॥

॥ पादा कुलक छन्द ॥

सुत ममत्व करि भवन रहावैं ॥ धर्मनष्ट मेरो हो जावैं ॥ अस विचार द्विज गमन कराये ॥ तप करण नदिके तट आये ॥७६८॥ तरणीते ठगनीलखिपाई ॥ लेतकणी उतरी हरषाई ॥ बंशी ढोल मृदङ्ग बजावें ॥ टप्पा ठुमरी गजल अलावैं ॥ ७६९ ॥ नाचत गावत चरण चलाई ॥ पहुंची मुनि कुटिया मो आई ॥ ऋष्यशृङ्ग देखत हरषायो ॥ जस दरिद्र भूरी धनपायो ॥७७०॥ दौड़ चरणमो शीर्षलगाये ॥ करि क्रन्दनपद पकड़ अलाये ॥ सन्ध्याको आगे कहि जावैं ॥ क्या कारण दर्शन नहि पावैं ॥ ७७१ ॥ तव कारण अतिशय दुख पाये ॥ थकि तत्त्व तव विपिन कराये ॥ तव दर्शनकतहूं नहिं पावैं ॥ मनमो क्रन्दन करत रहावैं ॥७७२॥ तनक जाय रुझको लै आये ॥ सर्वनिशा

बहु भांत बुझाये ॥ तब महिमा कछु तात न जानै ॥ भक्ति मोर गणिका भणिहानै ॥ ७७३ ॥ अब तुझको जिन नाथतजावैं ॥ भृत्य होय तब साथ रहावैं ॥ सम्वारिका सुनत हरषाई ॥ लै मुनि सुत तरणी पर आई ॥ ७७४ ॥ बाह वाह भण शोर मचावैं ॥ तब केवट द्रुत पोत चलावैं ॥ ललनागण लखिखेलि मचाई ॥ अरुमेवा पकवान खिलाई ॥ ७७५ ॥ लपटि झपटि करि प्रीति बढ़ावैं ॥ ताते जनक भूलि मुनि जावैं ॥ पहुंचे अङ्ग देसमो आई ॥ तब नृपकोयोजिका बुलाई ॥ ७७६ ॥ लै थाली भूभुज चलि आये ॥ अर्घ्य विप्र चरण हरषाये ॥ तत्समये वर्षाको पावैं ॥ तब तनया नृपजो मगवावैं ॥७७७॥ सो मुनिको बहु दान कराई ॥ तब सुनताहिज होय जमाई ॥ लोम-पादसे लेहु मगाये ॥ सुनिके अवधिकान्त हरषाये ॥ ७७८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

वर्षाजो नहि देशमो सुनो शन्त चितलाय ॥
ऋष्यशृङ्गकी कथासे वर्षाको सो पाय ॥ वर्षाको सो पाय अन्न भूरो भूदेवैं ॥ और वियाको शमन तुल्य मनमो लखि लेवैं ॥ भणे ग्वातसासिंह सूर्व होवैं

ओ कोई ॥ तपन कथाकि अवण मात पागल सम होई ॥ ७७९ ॥

अथ श्रीविभाण्डक मुनिका पुत्रशोक निवारण।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पुन कुटनी भाषत भई सुनो बचन भूपाल ॥ विभाण्डक मुनि आयके भस्म करैं देगाल ॥ भस्म करैं देगाल नहीं तो करो उपाई ॥ भूप भयो भय पाय युक्ति द्रुत देहु बताई ॥ तब गठनी ठग बुद्धि-दयो नृपको शिखलाये ॥ मार्ग मध्य जो ग्राम रङ्ग छतदेहु मचाये ॥ ७८० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ।

चोर बलय तिसमो पठवावैं ॥ अश्वकरी गाभी बंधवावैं ॥ चोरतवायफ देहु पठाई ॥ जो कोकिल सम गाण कराई ॥ ७८१ ॥ सो जा करि सब नृत्य करावैं ॥ तत्त्व करत सुतको द्विज पावैं ॥ ग्राम प्रजा तिनको बतलावे ॥ तव सुत न्रराजा व्याह कराये

॥ ७८२ ॥ यौतुकमो भूमी यह पाई ॥ अश्व करी धन कीन गणाई ॥ असभण ग्राम लोग समुझावैं ॥ श्रवण मात्र द्विज भवन सिधावैं ॥ ७८३ ॥ सुनत युक्ति भुनता हरषायो ॥ मन्त्रीको ततकाल पठायो ॥ ग्राम तवन सुन्दर रचवाये ॥ अश्वकरी बल धेनु पठाये ॥ ७८४ ॥ चुनि चुनि वेश्या दीन पठाई ॥ नृत्यराग बहु रङ्ग मचाई ॥ वहां विभाण्डक तप करि आये ॥ कुटिया मो शौरस्य न पाये ॥ ७८५ ॥ गिरे अचेतन भूमि मझारा ॥ करि क्रन्दन दुख कीन अपारा ॥ जब चेतन मुनिवर वह पाये ॥ सुत अन्वेषण करण सिधाये ॥ ७८६ ॥ बन उपबन ढूंढ़त करिजावैं ॥ रङ्गग्राम भीतर चलिआवैं ॥ नृत्य राग देखन मुनि-पाये ॥ पूछें हर्ष प्रजाते आये ॥ ७८७ ॥ कहो सत्य मुझको समुझाई ॥ क्या कारण यह रङ्ग मचाई ॥ पाणि जोड़ सब लोग अलाये ॥ तव सुत नृपजा व्याह कराये ॥ ७८८ ॥ यौतुकमो अवनी यहसारी ॥ गज-घोटक गाभोधन भारी ॥ लेतवसुत आनन्द करावैं ॥ सुनत विप्र अतिशय हरषावैं ॥ ७८९ ॥ ध्यान योगते कीन बिचारा ॥ धरि हैं विष्णु कान्त अवतारा ॥ तिह कारण मख पुत्र करावैं ॥ अवधि कान्त तिनको ले जावैं ॥ ७९० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अस विचार मुनि ध्यानसे मनमो अति हर-षाय ॥ तप कारण पुन विपिनमो चले राम गुण गाय ॥ चले राम गुणगाय सुनत ठगनी हरषाई ॥ लोमपादसो निकट मजूरी लेन सिधाई ॥ भये खासमासिंह कुशल भूभुज सुन पाये ॥ दीनाताको राज यहुं अपनो हरषाये ॥ ७८१ ॥

अथ श्रीअयोध्याजीमो ऋष्यशृङ्गका आगमन और महाराज दशरथजीका पुत्र हेतु अश्वमेध ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन सुमन्तके बचन को स्यन्दन भूप मगाय ॥ चढ़तापर अति हर्षसे अङ्गदेशमो आय ॥ अङ्ग देशमो आय सखा सुनके हरषाये ॥ चढ़ि पक्रिमके मध्य निकट पहुंचे द्रुत आये ॥ भूप परस्परपश्य मिले वाक्मोलपटाई ॥ पूंछ पूंछ पुन कुशल भवन प्रस्थान कराई ॥ ७८२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पहुंच सम्भ्रमसो जब आये ॥ लोमपाद प्रासन करवाये ॥ मैफिलको पुन कीन तयारी ॥ गजबाजी अरु बाग अटारी ॥७८३॥ नाचरङ्ग बहु भांत करायो ॥ आतशबाजी कोट जलायो ॥ महमानी पूरी जब होई ॥ भये नरेन्द्र सखाको सोई ॥ ७८४॥ ऋष्यशृङ्ग लेने मे आये ॥ अन्धक मुनि सुत हेतु बताये ॥ शुनि अवधेश महा हरषावैं ॥ ऋष्यशृङ्गके निकट सिधावैं ॥ ७८५ ॥ सखा युगल पदमो शिरनाये ॥ द्विज बहु आशीर्व्वाद कराये ॥ पाणि जोड़ अवधेश बतावैं ॥ तब पतनी पितु भूप कहावैं ॥ ७८६ ॥ मुनि अन्धक हमको बतलाये ॥ मेध आप जो जाय कराये ॥ पुत्र होय नृपके मुनि राई ॥ शुभततपीतबध्यान लगाई ॥ ७८७ ॥ ध्यान योगते कीन बिचारा ॥ धरैं विश्वकर्त्ता अवतारा ॥ पश्च मुनीवर विहस अलाये ॥ करौं क्रतु अवधी मे जाये ॥ ७८८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

ऋष्यशृङ्गके वचन शुन अवधिकान्त हरषाय ॥ लेतनया तनयापतीस्यन्दन पर तिष्ठाय ॥ स्यन्दन पर तिष्ठाय दीन चक्रिन हंकवाई ॥ अवधि पुरीमो आय पश्च रानीगण आई ॥ लाय जमाता और

आतम ताको हरषाये ॥ अर्द्धमृत्यु द्रुम कमल पाय जस प्राण धराये ॥ ७९९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

गुरु वशिष्ठको भूप बुलाये ॥ ऋष्यशृङ्गके निकट सिधाये ॥ नमस्कार मुनि युग्म कराई ॥ कीना शिष्टाचार भलाई ॥ ८०० ॥ ऋष्यशृङ्ग मुनिको बतलावैं ॥ अश्वमेध नरनाथ करावैं ॥ पुत्रवन्त होवैं मुनि राई ॥ जो यह युक्ति चित्त तब भाई ॥ ८०१ ॥ सुन प्रिय बचन बिप्र हरषाये ॥ भणे महीश्वरको समुझाये ॥ करौअध्वर अर्चन भूपाला ॥ पुत्रवन्त होवोतत काला ॥ ८०२ ॥ श्रवणमात्र दशरथ हरषाये ॥ यज्ञ भवन उत्तम बनवाये ॥ सरयू तीर्थ नदी तट जाई ॥ पश्य अमर मङ्गल सब गाई ॥ ८०३ ॥ आमन्त्रण सब देश कराये ॥ पहुंचेभू सुर वापति आये ॥ कह लग तिनका नाम लिखावैं ॥ जिनका ब्राह्मी अन्त न पावैं ॥ ८०४ ॥ अगस्त्य और पौलस्त्य पुलोमं ॥ गौतम और पराशरसोमं ॥ कौण्डिल पुलह मरीच व गर्गं ॥ जैमिनि दक्ष कूर्म्म भृगु भर्गं ॥ ८०५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

दुर्व्वासा वा गाधि सुत भरद्वाज प्रारम्भ ॥ अष्टवक्र सावर्णं दधीची मतस कर्ण मुनि अङ्ग ॥ मतस

कहिं मुनि यज्ञ समन्त सौभरि मुनि पाये ॥ और सनन्दन जान सनातन कश्यपराये ॥ मारकण्ड मुनि कपिल विभाण्डक कश्यप पूतं ॥ यह प्रकार सब कोट नयन आवत अवधूतं ॥ ८०६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तिष्ठे.मेध शालमो जाई ॥ पहुंचे भूप सर्व तब आई ॥ कहं लग तिनका नाम गणावैं ॥ उदय अस्त तक जवन रहावैं ॥८०७॥ सबको शिष्टाचार कराई ॥ दीना अवधि कन्तटिकवाई ॥ भांत भांत प्राशन कर वावैं ॥ सुर दुर्लभ सुखको सब पावैं ॥ ८०८ ॥ क्रतू कार्य्य आरम्भ कराई ॥ पाणिजोड़ नर नाथ अलाई ॥ गुरू लघूताको नहिं जानै ॥ भूमि तुल्य सबको हम मानै ॥ ८०९ ॥ बरण अग्र होवेगा किनका ॥ देहु मुझे आज्ञा बिधि जिनका ॥ शुनत वचन मुनिगण हरषाये ॥ ऋष्यशृङ्ग बोलैं समझाये ॥ ८१० ॥ तव कुल पूज्य जवन नरदेवा ॥ तिनकी करो प्रथम भल सेवा ॥ जो पुनश्च ब्राह्मणगण आये ॥ सबको बरण करो हरषाये ॥ ८११ ॥ शुनि विधि भूप बहुत हरषावैं ॥ गुरू वशिष्ठको बरण करावैं ॥ पुनर्व्वार द्विजगण जो आये ॥ सबको भूभुज बरण कराये ॥ ८१२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

ले ले बरणी बिप्रगण गर्ज्जं बेदध्वनि कीन॥ मुखते शुचि उद्भवभयो तिनको मुनि कर लीन॥ तिनको मुनि कर लीन स्थापना कुण्ड कराये॥ बेद मन्त्र करि पाठ दहनमो चरू गिराये। अब्द अव्जतक कौन अध्वर ईश्वर नहि आवैं॥ तब निर्ज्जरगण वास पाय करिकै बतलावैं॥ ८१३॥

पादाकुलक छन्द।

क्यों करि रावण मारा जाये॥ नाथ जन्म लेने नहि आये॥ कैसे बिप्रव बचै यह भाई॥ शुन कमलासन युक्ति कराई॥ ८१४॥ वै त्रिशकोट त्रिदश ले धाये॥ पहुंचे क्षीरसिन्धु तट जाये॥ जोड़ पाणि सुर स्तोत्र अलावैं॥ श्रवण स्रात्र कमलापति आवैं॥८१५॥ फणि शय्यामो शयन कराये॥ जिन पद पद्मा पद्म दबाये॥ करि करि दर्शन सुर हरषायो॥ चरण कमलमो शीर्ष निवायो॥ ८१६॥ केशव आशीर्बाद कराई॥ पूछै अति प्रिय बचन अलाई॥ कारण कवनदिवौकस आये॥ शुन ब्रह्मा मनमोघबड़ाये ॥८१७॥ भणे जिष्णुको निकट बुलाई॥ मुझसे हाल न बर्णन जाई॥ बिनु समुझे दौनावर जाये॥ ताते कष्ट त्रिभूबन पाये॥८१८॥ सुराचार्य्यको देहु बताई॥

भयो हाल माधवको जाई ॥ तब शचिपति मनमो मुशझाये ॥ देवगुरूको दीन पठाये ॥ ८१६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

जोड़ वृहस्पति पाणि निज भयो प्रभोकी पाय ॥ लङ्कापति रावण कठिन ब्रह्माको बर पाय ॥ ब्रह्माको बर पाय कष्ट भूरो बहु देवैं ॥ रूपवती लखि नारि हरण सबका करि लेवैं ॥ भृत्य तुल्य सब लेख करैं सेवा प्रभु जाई ॥ त्रिभुवनको वह जीत लक्ष्मी राज कराई ॥ ८२० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन अच्युत अति कोप धराये ॥ बिनताँ पुत्र स्मरण कराये ॥ पहुंचे गरुड़ छीप्र हरषाई ॥ तिष्ठ गरुड़ ध्वजचक्र उठाई ॥ ८२१ ॥ गर्व्वं क्रतुभुजको बतलाये ॥ देहुं बध्य अरिगण तव धाये ॥ शुनत बचन धातृ घबरायो ॥ जोड़ भुजा दल बिनय करायो॥८२२॥ यह शरीरसे नाथ खपावैं ॥ सेवक वाक व्यर्थ हो जावैं ॥ मै ताको बर दान अलाये ॥ नरबानर कर प्राण नशाये ॥ ८२३ ॥ मनुज गात जो नाथ धरावैं ॥ तो मम बचन सत्य हो जावैं ॥ शुन वैकुण्ठ महा हरषाये ॥ चतुराननको भाष शुनाये ॥ ८२४ ॥ बर देनेको आप सिधावैं ॥ बिपद पड़ै तब मोहि

सतावें ॥ सुनत हिरण्यगर्भ घरमाये ॥ पाणि जोड़ पुन भाष सुनाये ॥ ८२५ ॥ गात धरणको नाथ डरावैं ॥ क्यों करि सुरगण प्राण बचावैं ॥ तब मुकुन्द पूछैं मुसकाई ॥ कवन कष्ट क्टभुगण अघपाई ॥८२६॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुनत बचन स्रष्टृ भणै बागवान सुरराज ॥ छत्र काला निधि धरत हैं सूपकार शुचिकाज ॥ सूपकार शुचिकाज चमर नित पवन फिरावैं ॥ वरुण जुगावैं कमल घास यम राज कटावैं ॥ शौरि रजकका कर्म्म दिवाकर द्वारतकाये ॥ नारद बीण बजाय गाण नित जाय कराये ॥ ८२७ ॥

॥ पादा कुलक छन्द ॥

मै भी लङ्कामो नित जावैं ॥ बालकको पठने शिखलावैं ॥ तेतिस कोट त्रिदश सब जाई ॥ भूमि चन्द्र करि टहल बजाई ॥ ८२८ ॥ तन धारणको नाथ डरावैं ॥ क्यों करि सुर सब प्राण बचावैं ॥ यह प्रकार जब द्रुहिण अलाये ॥ तब गोविन्द भणै मुसकाये ॥ ८२९ ॥ कवन सन्त गृह जन्म धरावैं ॥ ब्रह्मा दशरथ भवन बतावैं ॥ कैकयि कौशल्या पट-राणी ॥ और सुमित्रा तपको खाणी ॥ ८३० ॥ तिनके गर्भ मध्यमो आये ॥ धरैं गात युगरूप कराये ॥ सुन

दैत्यारी बिह्सबखाने ॥ तिन सबकी भल बिधि मै आने ॥ ८३१ ॥ तपकठोर इन लोगन कीना ॥ तातै तुष्ट होय बर दीना ॥ तब आत्मज होवैंगे आई ॥ पालन करूं वाक तव माई ॥ ८३२ ॥ पुत्ररूप सुरन न सब धारें ॥ ऋत्तम्भरणी योनि मझारें ॥ तौ मै धरौं मनुज तन जाई ॥ शुन ऋम्भुगण मञ्जुर कराई ॥ ८३३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुनत बचन कमला भयौ कान्त धरें अवतार ॥ क्यौं करि तव बिन मै रहूं तब पूछें करतार ॥ तब पूछें करतार बिधाता बेग बतावें ॥ सरित कान्तजा छोड़ कहा इनको मै जावें ॥ भयौ खालसासिंह दुखित करजोड़ अलाये ॥ बिनश्रीजी अवतार दुष्ट मारा नहिं जाये ॥ ८३४ ॥

अथ श्रीलक्ष्मीजीका जन्म ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

श्रीनिवास श्रीकोभयौ शुनौ प्रिया चितलाय ॥ जनक भूमिकी मध्यमो गात धरौ तुम जाय ॥ गात

धरो तुम जाय महा उत्तम सुखदाई ॥ नरतनको मे धार दुष्ट यमलोक पठाई ॥ पुन लक्ष्मी श्रीकान्त होय सम्मन निज भावें ॥ शुन स्वामीके वाक मात मञ्जूर करावें ॥ ८३५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

भूत मिथलेश्वर जनक कहावें ॥ सुत कारण मनमो कलपावें ॥ पात्र मित्र लखिके घबड़ाये ॥ जिज्ञासा करजोड़ कराये ॥ ८३६ ॥ कारण कवन क्लिष्ट नरदेवा ॥ मित्र शत्रु करते तव सेवा ॥ शुनत बचन भनता बतलावैं ॥ पुत्रहिनु मनमो दुखपावें ॥ ८३७ ॥ शुनत बन्धुगण युक्ति बताई ॥ तुच्छ काज कारण दुखपाई ॥ मुनिगणसे पूछो बुलवाये ॥ युक्ति तुम्हे देवें बतलाये ॥ ८३८ ॥ शुनपार्थिव अतिशय हरषाई ॥ तपस्विगणको लीन बुलाई ॥ पाणि जोड़ तिनसे बतलावें ॥ पुत्र होय अस युक्ति करावें ॥ ८३९ ॥ शुनत ऋषोगण ध्यान लगायो ॥ ताते हाल सर्व्व वह पायो ॥ लक्ष्मी जन्म धरैंगी आये ॥ जनक भूमिमो नाथ बताये ॥ ८४० ॥ असबिचार मुनिगण बतलावैं ॥ निज करते नृप चाष करावैं ॥ ताते सुत उत्तम तव होई ॥ ध्वंस करैं कोणपकुलसोई ॥ ८४१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन वाड़वकी वचनको भूस्वामी हरषाय ॥ हल जोतै निज पाणिसे शोभा कही न जाय ॥ शोभा कही न जाय कृषकको दीन लजाई ॥ तीन समय उर्व्वसी व्योम मारग देखाई ॥ पश्य भूपको वस्त्र तवन निज दीन खसाये ॥ ताको लखिकी शुक्र पतन नृपका हो जाये ॥ ८४२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

गिरगो बोज धरणीमो जाई ॥ अचला गर्भवती होजाई ॥ आत्मतत्त्व लच्मीको आये ॥ करगो प्रवेश भूमि हरषाये ॥ ८४३ ॥ जब परिपक्व मात हो जावैं ॥ उदर कारण युक्ति करावैं ॥ अनावृष्टि वह देश करायो ॥ ताते कष्ट प्रजागण पायो ॥ ८४४ ॥ भयो प्रजा नृपको सब आई ॥ तिह कारण सुनता दुखपाई ॥ पुन मुनिवर सबको बुलवाये ॥ अनावृष्टिका हाल जनाये ॥ ८४५ ॥ शुन तपस्वी सब ध्यान लगायो ॥ ताते हाल सर्व्व वह पायो ॥ मिथलेश्वरको विहस जनावैं ॥ कृषीकर्म्म निज पाणि करावैं ॥ ८४६ ॥ ताते अनावृष्टि दुख जाई ॥ शुन नरेन्द्र हलको मम-वाई ॥ पृथ्वीको जोतें हरषाये ॥ तामे भूपखड़ा नृप पाये ॥ ८४७ ॥ ताको लै तोड़ें नरराबे ॥ रूपवती

कन्या भूपाये ॥ नभवाणी होयो तनकाला ॥ यह तव हैं तनया भूपाला ॥ ८४८ ॥

॥ कुण्डलियां छन्द ॥

शुभ नरेन्द्र सुर बचनको पुत्री लीन उठाय ॥ है राणीकी गोदमो माणिक हेम लुटाय ॥ माणिक हेम लुटाय अन्न भूमी भू दीना ॥ प्रतिपालन नरनाथ हर्ष लक्ष्मीका कीना ॥ भये खालसासिंह मात पदमो शिरनाये ॥ सीता देवी नाम जानकी और रखाये ॥ ८४९ ॥

अथ श्रीनारायणजीका चक्रमो प्रवेश एवं पटराणीगणका चक्र भक्षण ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

श्रीलक्ष्मीजी गातको धर्यो सत्य भूपाय ॥ ब्रह्म-तत्त्व ब्रह्मण्यको शीघ्र चक्रमो धाय ॥ शीघ्र चक्रमो धाय चतुर्भुज वेश धराये ॥ केवल ब्राह्मण मध्य शुद्ध मुनि दर्शन पाये ॥ ब्रह्म अमरको पक्ष ब्रह्मज्ञानी

हरषाई ॥ धन्य धन्य निज भाग बोलि दूत शीर्ष निवाई ॥ ८५० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

अमर्त्य अभ्रवाणी करि गाये ॥ विश्वकन्त धरणी तन आये ॥ शमन भवन खल गमन करावैं ॥ सुर नर मुनि भूरी सुख पावैं ॥८५१॥ जब असनभवाणी शुन पाये ॥ तब ब्राह्मणगण शीर्ष निवाये ॥ अन्धकसे नृप जो फल पायो ॥ ताको ऋष्यशृङ्ग मगवायो ॥८५२॥ वेदमन्त्र सब बिप्र अलाये ॥ फलसो पूर्णाहुति कराये ॥ फलमो प्रभो प्रवेश करावैं ॥ हव्य चतुर्भुजरूप धरावैं ॥८५३॥ कनक थाल हव्यान्न उठाये ॥ दे दशरथ करमो बतलाये ॥ इसको त्वरित भूप लै जाओ ॥ राणीको प्राशन करवाओ ॥ ८५४ ॥ शुन नरेन्द्र भूरी हरषाये ॥ लै हव्यान्न भवनमो आये ॥ हव्य पाक पञ्च टूक कराई ॥ प्रथम भाग कौशल्या पाई ॥ ८५५ ॥ अंश दूशराकैकयि पायो ॥ मेधशान्त नरनाथ सिधायो ॥ पञ्च सुमित्रा मात अलावैं ॥ इतोभाग्य ममनाथ करावैं ॥ ८५६ ॥ ताते चरू अंश नहि पाई ॥ शुनत बचन कौशल्या माई ॥ सुमित सुताको निकट बुलाये ॥ युग्म भाग निज हव्य कराये ॥ ८५७ ॥ तिनको चन्द्र अंश है दीना ॥ और बिहस बिद्रूप असकीना ॥

याते पुत्र होय तब जोई ॥ मम आत्मजका सही सोई ॥ ८५८ ॥ हर्ष सुमित्रसुता बतलावैं ॥ याते जबन पुत्र जन्मावैं ॥ तव अङ्गजका सेवक होई ॥ अथवा मात्र कुबड़ी खलरोई ॥ ८५९ ॥ कैकय जाको दीन सिखाये ॥ भणै सुमित्राको बुलवाये ॥ तिनसे जो तुम सत्य कराई ॥ करो तौन मुझसे हरषाई ॥ ८६० ॥ अर्द्ध चरु मै दान करावैं ॥ लै सुमित्र जा हर्ष अलावैं ॥ याते सुत उद्भव जो होई ॥ तव सुतका सेवक हो सोई ।८६१॥ शुनत दुष्ट कुबड़ी हरषाई ॥ चरू चतु राणी मिलखाई ॥ ताते वेद अंश है त्यारी ॥ हो करिकै तन युग शुभ धारी ॥ ८६२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

चरु चर्ब णाको करत ही गर्भवती ही जाय ॥ कौशल्या सुमित्र सुता और कैकयी माय ॥ और कैकयी माय भवन मखमो न्रप आये ॥ दे दैसाणिक हेम विप्रगण विदा कराये ॥ भणै खालसासिंह विश्वपति चरण मनाई ॥ भवसागरते तरैं ग्रन्थको पाठ कराई ॥ ८६३ ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजीका जन्म ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

श्रीनिवासके जन्मको सुने कथा जो कोय ॥ निज कलूषको नाश करि पावैं सुरतनसोय ॥ पावैं सुरतन सोय स्वर्गमो बास करावैं ॥ खगडमासकी गर्भ चक्षु जब मात धरावैं ॥ तबै स्वप्नमो आय प्रभो भाषैं मुशकाई ॥ बहु सेवा ममकीन अय आदरसे माई ॥ ८६४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

ताते मै तव पुत्र कहाये ॥ प्रतिपालनकीजे हरषाये ॥ जगिध जगध्र बहु भांत कराओ ॥ बस्त्र आभरण और बनाओ ॥ ८६५ ॥ श्रवण मात कौशल्या राणी ॥ लीन उठाय गाद द्रुतपाणी ॥ स्वापभग्न होयो तत्काजा ॥ तिनेशान होवैं गोपाला ॥ ८६६ ॥ कौशल्या माता हरषाई ॥ माणिक मुक्ता हेम लुटाई ॥ यह प्रकार दशमास बितावैं ॥ प्रसव समय राणीको आवैं ॥ ८६७ ॥ तब अस्त्रप्रगण युक्ति कराये ॥ तिहे रहे शुभङ्कर आये ॥ गृह गृह अवधि पुरीमो नारी ॥ गावत सोहर मधुर प्रकारी ॥ ८६८ ॥ मास मधू तिथि ग्रहपखस्वेतं ॥ राणी प्रसव पुष्यमो हेतं ॥ भये भूमिष्ठ प्रभो जब आये ॥ तब अमर्त्य मङ्गल सब

गाये ॥ ८६९ ॥ पुष्प पाणि ले वृष्टि करावैं ॥ जय जय भण सुर शोच निवावैं ॥ प्रभो रूपको भाव सकाये ॥ कोट भानु सम भास लखाये ॥ ८७० ॥ मनु ईशसन्यकु कराई ॥ गमन कीन बनमो शरमाई ॥ ष्वज पद्म मुख लीन लुकाये ॥ वर्ण पद्म मणि नील लजाये ॥ ८७१ ॥ माणिक अधर पद्म रुचि छीनं ॥ भृकुटी कुटिल चाप लखि खीणं ॥ दशन कुन्द सम प्रभा प्रकाशं ॥ होवत तिमिर जाहि लखि नाशं ॥ ८७२ ॥ जकुलातकलम्बितपरवपाणी ॥ जाते दैत्याकरहो हानी ॥ उपमाकवन वरणकी देवैं ॥ जिनको लखनर सुरतन लेवैं ॥ ८७३ ॥ शुचावर्त्ता दासी हरषाई ॥ दीना खबर भूपको जाई ॥ राणी प्रथम प्रसव सुत कीना ॥ रविसम अन्धकार हरलीना ॥ ८७४ ॥

॥ कुण्डलियाछन्द ॥

शुनत चेटकी बचनको भूभर्त्ता हरषाय ॥ ताशि गलमो हारको मोतीको पहिराय ॥ मोतीको पहिराय भूप देखैं सुत आये । करिनान्दी मुख श्राद्ध नाहि छेदन करवाये ॥ भयो खालसासिंह कीन कुलको सबरीतं ॥ द्विब्राह्मणको दान दियां गावैं सब गीतं ॥ ८७५ ॥

अथ श्रीभरतजीका जन्म।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कौशल्याकी सुत भये सुनत मन्थरा दुष्ट ॥ छटपटाय चित मोजरोहोकरिकी अति रुष्ट॥ हो करिकी अति रुष्ट भयो विधिने क्या कीना॥ प्रथमभत: क्यों पुत्र नाहिं कैकयिकी दीना॥ ज्येष्ठ पुत्र जो होय राज पावत जग सोई॥ अस विचार शिरपटक भूमि अपनो वह रोई॥ ८७६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पर अनिष्ट हित कारण दासी॥ होवत नाहक दुखकी राशी॥ जिनकी कारण शिरपटकावैं॥ सो इनका तन चूर्ण करावैं॥ ८७७॥ सुनत कैकयी मात रिसाई॥ कुबड़ीको भाखैं धमकाई॥ क्यों दुष्टिनि अस वचन अलावैं॥ सुनैं लोग क्या मोहिं कहावैं ॥ ८७८॥ तव चरित्र जानै नहिं कोई॥ जगमो अयश मोर बहु होई॥ असभय भांत भांत समुझावैं॥ पीड़ा प्रसव मातको आवैं ॥ ८७९॥ कटि पकड़े कुबड़ी झट आई॥ पुत्र प्रसव तब मात कराई॥ कौशल्या आत्मज समरूपं॥ श्यामवर्ण नव भूवन भूपं ॥ ८८०॥ निरख मन्थरा अति हरषाई॥ भूमि

कान्तको हाल जनाई ॥ सुनत चनन्ता पति हरषाये ॥ रत्न कड़ाताको पहिरावे ॥ ८८१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कड़ा पाणिमो पहिरिको दुष्ट मद्धल मार ॥ चोपी पतिको साथ लै पहुंचो भवन मभार ॥ पहुंचो भवन मभार पुत्र तिनको दिखलाई ॥ चिनो कन्त सुत तुरत पेख बहु वित्त लुटाई ॥ भये खालसा सिंह नाड़ि छेदन करवाये ॥ भये भूप पति मग्न होन धनको जस पाये ॥ ८८२ ॥

अथ श्रीलक्ष्मणजी एवं श्रीशत्रुघ्नकी का जन्म ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुमित्र सुता सुन हालको मनमो पति हरषाय ॥ प्रसव युग्म आत्मज करै शोभा कही न जाय ॥ शोभा कही न जाय रूप गुण वैसहि पावैं ॥ चेतन गौर शरीर कनक लखि रङ्ग लजावैं ॥ पद्मरागो तुर्त भूपको हाल जनाई ॥ श्रवण मात्र नरनाथ हर्ष भोग्रन पहिराई ॥ ८८३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

वेग धराधर भवन सिधाये ॥ श्रुत्रिवलोक अतिसय हरषाये ॥ नाड़ीको छेदन करवाई ॥ माणिक मौक्तिक हिम लुटाई ॥ ८८४ ॥ जसधन बारबारकि पाये ॥ होत खुशी जो दीन रहाये ॥ तस दशरथ युग सुतको पाई ॥ उर प्रसन्न बहु रङ्ग मचाई ॥ ८८५ ॥ तोप धड़ाधड़ कोट दगाये ॥ तुपक कड़ाकड़ वीर चलाये ॥ चमचम झम झम खड्गनचाई ॥ दीना कटक सलामी पाई ॥ ॥ ८८६ ॥ अश्व टपाटप सन्मुख टपाये ॥ कवाइत खूब अपार दिखाये ॥ गणिका याम यामते आई ॥ झननननननननृत्य कराई ॥ ८८७ ॥ घननननन घुंघुरू पदबाजैं ॥ डिमिकि डिमिकि तबला गत गाजैं ॥ वीणादिक बहु यन्त्र बजावैं ॥ षष्ठ राग रागिणिगण गावैं ॥ ८८८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

आमन्त्रणको पायके देश देशके कान्त ॥ अवधि पुरीमो आयकै शोभा निरख अनन्त ॥ शोभा निरख अनन्त प्रदेशन हर्ष कराये ॥ यथा उचित सन्मान भूप करिकै तोष्ठाये ॥ भयो खालसासिंह त्रिभूवनमो को कोई ॥ सुर नरमुनि फणि यक्ष सर्व नाचैं खुश होई ॥ ८८९ ॥

अथ श्रीनिर्ज्जरगणका आनन्द ।

॥ चौपदी छन्द ॥

श्रीप्रभोका जन्म देख ॥ नाचैं सब मुनी लेख ॥ द्रगडओ कमगडलुलैपाणि ॥ स्वग मध्य क्ष्मूसर्व्व ॥ मृत्यु मध्य मर्त्य खर्व्व ॥ नृत्य करैं मग्न होय गाणि ॥ ८९० ॥ वेधसलै सङ्गमार ॥ नाचैं क्या चमतकार ॥ वह्निनलेशचो नृत्य कौन ॥ नाग भूत प्रेत यत्त ॥ उमा उग्रनोर रत्त ॥ प्रभो पादपद्म होय लीन ॥ ८९१ ॥ भूषणलै वस्त्र सर्व्व ॥ नारीगण कौन गर्व ॥ दर्पणओ तुगडको निहार ॥ मैत्रासे भरको थाल ॥ और वस्त्र रत्नमाल ॥ देवैं प्रभु हेतु भूपहार ॥ ८९२॥ जन्म लीन श्रीनिवास ॥ करणोको दैत्य नाश ॥ अन्तनको और अव्याहती ॥ लेख सर्व अभ्र आय ॥ भाषैं क्या खिन्न-खिन्नाय ॥ नमो नमो नमो रघूपती ॥८९३॥ सुमनमकी छोड़ साथ ॥ ख्याती धररघूनाथ ॥ धरणीका तोड़नेको भार ॥ धन्य राम नाम तोर ॥ तारैं जग पापी घोर ॥ नौका भवसिन्धुकी सम्भार ॥ ८९४ ॥ भये सिंह प्रेम लाय ॥ तेरो प्रभो गीत गाय ॥ रत्नाकर कालीमोहमार ॥ श्रावाहिगुरू मनाय ॥ छन्द चैपदी बनाय ॥ कीना नुतकीट मै तुम्हार ॥ ८९५ ॥

अथ श्रीनारायणजीके जन्मसे रावणको विपत्यानुभव ।

॥ मसनवी ॥

आकर प्रभो लीना अवतार जब ॥ जनाया कुन्तवामे रावणको तब ॥ सिंहासन अकस्मात झट हिल पड़ा ॥ शिरका मुकुट भूम पट गिरपड़ा ॥८६६॥ तब रावण वह रोगोंसे कहने लगा ॥ मुकुट गिर सिंहासन क्यों हिलने लगा ॥ मे जाना नहीं और का यह कसूर ॥ बासूजमीको हिलाया जरूर ॥ ८६७ ॥ मे मारूं अभीनाग बासूको बाण ॥ न रखुंगा मै उस भुजङ्गका जान ॥ खफा होके काफरयों बोलन लगा ॥ लेकर धनुषबाण जोड़न लगा ॥ ८६८ ॥ देखके झट बिभीषण बुझाया उसे ॥ बड़े मिन्नतोंसे बिठाया उसे ॥ कहा भाई साहब य क्या बात है ॥ करम आपका मुझपे दिन रात है ॥ ८६९ ॥ कहूं कुछ अरज जोपे फरमाइये ॥ नहीं तो कहो चुपकी हो जाइये ॥ कहा सुन सभाने कहो क्या खबर ॥ क्यों कर हिला यह सिंहासन अवर ॥ ९०० ॥ कहा क्या कहूं मै बुरा बात है ॥ मगर बिनकहे और का घात है ॥ नाहक य बासुको काटेगे आप ॥ इनकी

वे मारथको आये हैं आप ॥ ८०१ ॥ खुदा खुद अभी
पर वे पैदा हुये ॥ वे मारेंगे इनको गजब यह
हुये ॥ अुनकरके रावण खपा होगया ॥ आवाज तब
आअमासे भया ॥ ८०२ ॥ तुमारे लिये खुद गये हैं
खोदा ॥ दश गई न तुम्हारा करेंगे जुदा ॥ अब
हुशियार होकर रहो खोफसे ॥ तुम्मारे जायोगे
पिशर फौजसे ॥ ८०३ ॥ जब आकाशवाणी भई इस
कादर ॥ तब रो रोके कहने लगा ये पिशर ॥ शुक्
और सारथको लीजे बुला ॥ वे जाकरके देखें भया
क्या बला ॥८०४॥ अगर मै पता उसका पाजाऊंगा ॥
तो कच्चा पकड उसको खाजाऊंगा ॥ पिशर तब गया
भाट बुलाया उसे ॥ उसी वख्त ले साथ आया उसे
॥ ८०५॥ आकरके राजाको आदाब कर ॥ लगे कहने
वे दस्तको जोड़कर ॥ करू क्या हुकम आप फरमा-
इये॥ कहें आप जो सो बजालाइये ॥८०६॥ कहा जाके
देखो जमीपर मनम ॥ दुश्मन कहां पर लिया है
जनम ॥ अभी है वे बच्चा अहजमो मरे ॥ नहीं तो
जवानीमो मुशकिल करे ॥ ८०७॥ कहा खोजूं जाकर
अभी मे उसे ॥ लगाकर पता जल्द लाऊं उसे ॥
दो शख्श थे वे बड़े नेक बख्त ॥ इन्दरकी अरकी
थे दरबान फक्त ॥ ८०८ ॥ इस बारके दोनो वे बाकि

करते ॥ सारथाको शुक्र तब बुझा कर कहे ॥ जमीपर प्रभोने लिया है जनम् ॥ जाकरकी देखूंगा उनका कदम् ॥९०९॥ होवें जिन्दगी अब हमनका सुफल ॥ मिटै पापका सब हमनका कुफल ॥ इसीतौरसे गुफ्तगू वे करें ॥ जा जाके मुल्कोंमे खोजा करें ॥ ९१० ॥ सबे मुल्कको खोजके थकगये ॥ अयोध्यामें आखिरको आते भये ॥ वहां जाके देखा अजब है शभा ॥ इन्दरका दरबार जैशा जमा ॥ ९११ ॥ होकर अदृश्य महलमे घुसे ॥ किशुने न देखा है आते उसे ॥ अजब रूप देखा प्रभोका वहां ॥ जमो आशमा सब बदनमे जहां ॥ ९१२ ॥ पद्म शङ्ख चक्कर गदादस्तमे ॥ रहे खेल मादरके क्या हस्तमे ॥ खड़ कोट ब्रह्मागुणाबाद गावें ॥ सनक औ सनन्दन नजर कोट आवें ॥९१३॥ इशो तौरके रूपको देख वे ॥ इबादत्किया सदको छोड़ वे ॥ हमन राकशा हैं अधमसे खोदा ॥ तुमारे मे कश्रोसे रहते जुदा ॥ ९१४ ॥ मगर आपने खुश नजर जो किया ॥ तिश करके पापोको दरशन दिया॥ प्रभो अर्ज मेरी यह कीजे कुबूल ॥ कदम आपका मुझे जावे न भूल ॥९१५॥ इसी तौरसे अस्तुती करके वे ॥ कदमकोशिशपर के चले घरको वे ॥ वहांसे अन्दर के सलाह कर ॥ पहुंचे हैं रावनके आकरके घर

॥ ९१६ ॥ कहा तब वह काफर कहो क्या खबर ॥
वे कहने लगे कुछ न आया नजर ॥ जाकर उदय
अस्त ली देखके ॥ थक्के आये हमन् लौटके ॥ ९१७ ॥
सुनकरके रावण खुसी हो कहा ॥ कहो भाइ दुश्मन
कहां वह रहा । कहा तब बिभिषण रखो होशकर ॥
पीछेसे इसका मिलेगा खबर ॥ ॥ ९१८ ॥ अम्बाको
कभी झूठ होती नहीं ॥ मगर है नहीं तो खुशी है
सही ॥ आपके खौफसे देव दानो डरे ॥ ऐसा है
को दुश्मनोंजो करे ॥ ९१९ ॥ मुकुट आपका जो
जमीपर गिरा ॥ बेइज्जत करे बे सगुन य जिरा ॥
सब तीरथके जलको मगा लीजिये ॥ उस आबोंसे
भाई गुशल कीजिये ॥ ९२० ॥ फकीरोंको लीये कुछ
खैरात कर ॥ मिट जयेगा तेरा बेइज्जत काडर ॥
इसकदरसे बिभीषण बुझा जब दिया ॥ समुन्दरको
रावण हुकम तब किया ॥ ९२१ ॥ सब तीरथके
जलको मुझे दीजिये ॥ कहा आप हमसे अभी
लीजिये ॥ ऐसा व कह जलको झट लादिया ॥
उस आबोंसे राजा गुशल तब किया ॥ ९२२ ॥
तिस बाद खैरात कीना बहुत ॥ दरवेशोंको दौलत
लुटाया बहुत ॥ मनमे किया मै अमर होगया ॥
मरूंगा नहीं कह खुशी होगया ॥ ९२३ ॥ पातशाही

खुशी होके करने लगा ॥ वालि गुरूको मनावार मे गाने लगा ॥ के दुश्मन प्रभोतनका कोजे फना ॥ कैसे रावणका न रह गया एक जना ॥ ९२४ ॥ यौ यर्ज मेरी य करिये कुबूल ॥ अब जन्म पावैं कभी मे न भूल ॥ सिंहशायेर प्रभोक्तन्नतेरेपड़े ॥ शीर्ष बेचे हुये आपको दूर खड़े ॥ ९२५ ॥

अथ श्रीनिर्ज्जरगणका पुत्ररूपी ऋच्छ वानर कुलमे जन्म ।

॥ अमला छन्द ॥

अब कौशनकी अवतारकथा सब शंन्त शुनो मन प्रेम बढ़ाये ॥ नरगात धरैं जगदीश जबै तब देवन वानर देह धराये ॥ जितने सुरलोक विषैत्रिदिवेशन आकरके असकेलि मचाये ॥ जसफागहिमो शिशु बूढ़ युवा निज लाजतजैं मुख गालि बजाये ॥ ९२६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पुत्र युग्म बन्दरी भूजाई ॥ नाम बालि सुग्रीव रखाई ॥ सुरपतिके सुतबालि रहाये ॥ सूर्य्यपुत्र सुग्रीव कहाये ॥ ९२७ ॥ किष्किन्ध्यामो राज करावैं ॥ बालि

पुत्र चहुर बतलावें ॥ जाम्बुवान विधी सुत जानो ॥ पवनात्मज हनुमन्त बखानो ॥ ६२८ ॥ हेमकूट सुत कामल पतीके ॥ पुत्र केशरी भीमयतीके ॥ पावकचक्षुज नील कहावें ॥ प्रमाथी यक्ष पुत्र बतलावें ॥ ६२९ ॥ सुषेण धन्वन्तरिके सुत नामं ॥ तिनके पुत्र युगल जस कामं ॥ प्रथम महेन्द्र पुत्र कहिलाये ॥ द्वितीय नाम देवेन्द्र धराये ॥ ६३० ॥ शशि सुत दधी गान शुभ नामा ॥ लज्जित रूप निरख करि कामा ॥ तेत्रिश कोट लेख सब पाये ॥ निज निज उद्भव पुत्र कराये ॥ ६३१ ॥ कहं लग तिनका नाम लिखावें ॥ अन्तशारदा मातन पावें ॥ सुतरूपो सुर जन्म धराये ॥ मौज करें बन बन हरषाये ॥६३२॥ कहं लग तिनका सुयश चलावें ॥ ब्राह्मोशेषरटतथकि जावें ॥ शाखा मृग भालुक तनधारी ॥ धरणी भार उतारण भारी ॥ ६३३ ॥ कोट बारपदमो शिरनाये ॥ बन्दन करों जोड़ कर पाये ॥ भक्ति हीन पति शठ मम करणी ॥ ताते तव चरित्र नहि बरणी ॥ ६३४ ॥

॥ चमला छन्द ॥

जगमे तब लोगनके पदमो भगती करि जो निज माथ लगावें ॥ तिनकी सब पाप प्रभो हरकी भव सागरते द्रुत पार करावें ॥ यह सांचयटीसुचलीय दिकोसत

आवलवै पदमाहिं धरावैं ॥ तब मोच्छ भौ: सुखको प्रभुजी चवि सिंह पुन: अब गाल न फवैं ॥ ९३५ ॥

अथ श्रीनारायणजी चारो भाईका छट्ठो व अन्नप्राशन एवं नामकरण ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शिव सुत सुख वासर भये तब नरेन्द्र हरषाय ॥ करि छट्ठो युगपुत्रको नृत्य रङ्ग करवाय ॥ नृत्य रङ्ग करवाय वित्त बहु दीन लुटाये ॥ विप्रणको छक वाय और नृपको छक वाये ॥ मेवा आदिक और मुरब्बा लख मिठाई ॥ पापड़ व्यञ्जन बड़ो पकोड़ी और खटाई ॥ ९३६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

करि करि भोजन भवन सिधावैं ॥ विप्र भूप जितसे जो आवैं ॥ मास बाण जब गमन कराये ॥ तब नरेन्द्र मनमो हरषाये ॥ ९३७ ॥ आमन्त्रण सब देश कराई ॥ पहुंचे द्विज भुनतागण आई ॥ नाच रङ्ग बहुकीन तमाशा ॥ जिनको लख होवै दुखनाशा ॥९३८॥ जब शुभ लग्न समयको पाये ॥ इष्टदेव कुलदेव

कराये ॥ कुलाचार सब भूप कराई ॥ सुत युगको मज्जन करवाई ॥८३९॥ वस्त्र आभरण सुन्दर लाये ॥ नख शिखसे शिङ्गार कराये ॥ शीर्ष किरीट मुकुट पहिरावैं ॥ कर्ण मध्य कुण्डल लटकावैं ॥ ८४० ॥ मौक्तिक हार कण्ठमो पाये ॥ नासिशोभानिष्क कराये॥ भुजा मध्य जो शन अरु बाजू ॥ कोट मदन पावैं लख लाजू ॥ ८४१ ॥ करमो कड़ा जड़ाऊपावैं ॥ झूनुनुनु कटिमो बोर करावैं ॥ पदमोनेपुर झननननाई ॥ पीताम्बर कटिमो छबि छाई ॥ ८४२॥ यह प्रकार युग पुत्र सजाये ॥ दीन वशिष्ठ मुनीको लाये ॥ हर्ष विप्र द्रुत गोद उठाई॥ मुखचुम्बन लखबार कराई॥८४३॥ वेद मन्त्र बहुजगण गाये ॥ गुरु वर, प्राशन अन्न कराये ॥ भूप सर्व्वं शिर तिलक लगावैं ॥ उपदाभूषण वस्त्र करावैं ॥ ८४४॥ नामकरणकी भई तयारी ॥ भये वेद जिनको शुभ चारी ॥ सुर नर मुनि जाते गति पावैं ॥ तवन नाम मुनि राज रखावैं ॥ ८४५ ॥ प्रथम पुत्र कौशल जा जाई ॥ रामचन्द्र ख्याती सो पाई ॥ कैकय जा सुत प्रसब करावैं ॥ तिनको नाम भरत बतलावैं ॥ ८४६ । सुमित्र सुता सुत जमकराये ॥ तिनमे जेष्ठपुत्र जो आये ॥ सो शाख्या लक्ष्मण शुभ पाई ॥ अनुज नाम शत्रुघ्न रखाई

॥ ६४७ ॥ सुन संख्या सुनता हरखाये ॥ दान पुण्य बहु भांत कराये ॥ द्विजगणको भोजन करवाई ॥ दै दखिणा सन्तुष्ट कराई ॥ ६४८ ॥ और निमन्त्रण मो जो आये ॥ सबको भूप प्रसाद छकाये । कहँ लो प्राशित नाम लिखाऊं ॥ ग्रन्थ बढ़नते अधिक डराऊं ॥ ६४९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

ताते मुखको मौन करि कथा पूर्ण यह कीन ॥ मेवादिक पक्वान्न सब प्राशनको नृप दीन॥ प्राशनको नृप दीन हर्ष प्राप्तोगण खाये ॥ औरतमाशा हेतु कोट मेफिलमो आये ॥ भयो खालसासिंह आंद भारी करवावैं ॥ प्रात विदा हो भूप विप्रगण भवन सिधावैं ॥ ६५० ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजी चारो भाई का बाल क्रीड़ा ।

॥ कुण्डलियो छन्द ॥

मासवसुप्रभुजी भये चलि धरा घिसकात ॥ जनक गोदमा तिष्टवो लिहे गोदीमात ॥ लिहे गोदी मात लौटबोहर्षसिधावैं ॥ पितागोदमो आवै

गोद जननीके आवैं ॥ यह प्रकार युग भ्रात प्रभोको केलि मचाये ॥ मोह पाशके मध्य प्रसूजनयिता फसाये ॥ ६५१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जतूसर भ्रौराघ बडो आवैं ॥ भ्रात परस्पर प्रीति करावैं ॥ रामचन्द्रके अवरजजेते ॥ भृत्य तुल्य आज्ञा मो तेते ॥ ६५२ ॥ कहं लग तिनका सुजश चलावैं ॥ प्रभुपदविनकछुअवर न भावैं ॥ चलत उठत डग मग पग धारैं ॥ अंगुली पकड़ बहुर किल कारैं ॥ ६५३ ॥ हास्य बदन लखिके हरषाई । गृहकारज सब लोग तजाई ॥ बिकसित कमल तुल्य हितकारी ॥ नयन हरण मन त्रिभुवन तारी ॥६५४॥ कबहूं धरि दाशी कर जावैं ॥ कबहूं थककरि चरण दबावैं ॥ लखिसोंधी माटी प्रभुखाये ॥ ताको निरख मात धमकाये ॥६५५॥ तुरत चौरपोंकें जब आई ॥ त्रिभुवन बदन मध्य लखि पाई ॥ ज्ञानवान होवे तब जननी ॥ करतनुतीहो करि पति मगनी ॥ ६५६ ॥ मोहजाल तब नाथ चलाये ॥ टोना जननीको भुलवाये ॥ पुन पुन तब मात चलाई ॥ लीना अच्युत गोद उठाई ॥६५७॥ मचलपाबिते नाथ दिखाये ॥ देहु खिलोनातवन बताये ॥ कहं लग प्रभु क्रीड़ा मे गावे ॥ भचल भारती

मात पकावें ॥ ९५८ ॥ अस बाजीगर खेल दिखावे ॥ तस लीलानित नाथ कराये ॥ ममा बेद माधवको पाये ॥ चहू अंश कारण हरषाये ॥ ९५९ ॥ लक्ष्मण रामचन्द्र पदसेवें ॥ शत्रुघ्न भरत पदमो मन देवें ॥ जाकि जवन चहूकी भागा ॥ ताकी तवन सेवमो लागा ॥ ९६० ॥ दशरथ वृद्ध भूप हरषाये ॥ रामचन्द्रसे स्नेह बढ़ाये ॥ अष्ट प्रहर निज साथ रखावें ॥ बिन अच्युत कतहूं नहिं जावें ॥ ९६१ ॥ अग्नि शयन आदिक सब काजा ॥ नाथ साथ तजि करैनराजा ॥ बासर स्लौ न्रप कीन बिचारा ॥ दीना अन्धक शापकरारा ॥९६२॥ जादिन राम अद्दश्य करावैं ॥ तादिन अपनै प्राण हरावैं ॥ अस बिचार ज्या पति घबड़ाये ॥ कोशल जाके भवन सिधाये ॥ ९६३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तुण्ड निरस पतिको निरख राणी अति घबड़ाय ॥ पाणि जोड़ पूछन लगीं कन्त कष्ट क्यापाय ॥ कन्त कष्ट क्या पाय भूप भाषें समुझाई ॥ अन्धक मुनिका शाप चेत करि बुद्धि हराई ॥ भये खालसा सिंह युक्तिकीना असराणी ॥ हो प्रसन्न नरनाथ मोक्ष कीना निजहानी ॥९६४॥

अथ श्रीरामचन्द्रजी चारौ भाईका शस्त्र शास्त्रविद्या शिक्षण।

॥ अमला छन्द ॥

जब छाग्रन बाग्या भये रघुनाथ नरेश तबै शुभ-वासर आये ॥ पुन नाच करैं गणिकागणको गृहमो सबराजनको बुलवाये ॥ तब तोपधड़ा धड़कोटन-गैलखिर्के वय लोक महा हरषाये ॥ सब साथ मही-भुजके सुतबेद महीप महीश्वर गेह सिधाये ॥ ९९५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पहुंचे मुनि वशिष्ठ गृह जाये ॥ पाणिजोड़ पदमो शिरनाये ॥ गुरुवर आशीर्वाद करावैं ॥ रघुपतिते अर्च्चन करवावैं ॥९९६॥ ब्राह्मीगणपति लेख मनाई ॥ खड़िया युगप्रभु कर पकड़ाई ॥ श्रीगणेशाय नमः लिखाये ॥ गन्ध पुष्प नैवेद्य चढ़ाये ॥ ९९७ ॥ पुन नमस्था प्रभृते करवाई ॥ मागैं गुरुदक्षिणा मुशकाई ॥ हर्ष प्रभोपितुको बतलाये ॥ वित्त देहु सिक्षकको आये ॥९९८॥ शुन दशरथ अतिशय हरषाई ॥ दीनामाणिक मोतिन लाई ॥ गुरुवर आशीर्वाद करावैं ॥ पुन दुर्गाधिक अस्त्र पुजावैं ॥९९९॥ विधिपूर्व्वक अपचिति करवाये ॥ धनुर्व्वेद प्रारम्भ कराये ॥ करमो चापबाण

पकड़ाव ॥ नभसे सुरगण स्तोत्र चलावें ॥ ६७० ॥ जय जय जय कार्म्मुकशरधारी ॥ नमो नमो प्रभु जगहितकारी ॥ जय जय जय असुरपटल कालं ॥ नमो नमो सेवकगण पालं ॥ ६७१ ॥

॥ अमला छन्द ॥

अस कोट नुतौ करिके सब लेख खुशी अति ह्वै निज गेह सिधाये ॥ सुत भूपकड़ा कड़ साजबजा सब फौज सड़ासड़ टौन चलाये ॥ सुत बद्द मही भुज को सब ले निज साथ महीपनिकेतन आये ॥ तब भूपसवे कर केशर लै हरिके शिरमो द्रुतटीन लगाये ॥ ६७२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

करि करि तिलक प्रदेशनटीना ॥ ह्वै प्रसन्न रघुपति ले लीना ॥ जनक निकटमो टौन रखाये ॥ तब नरेन्द्र अतिशय हरषाये ॥ ६७३ ॥ मेवादिककोटन पकवाना ॥ जो तिनको टौना भगवाना ॥ जग्धिभूपगण को करवावें ॥ विदा होय नृप भवन सिधावें ॥६७४॥ नित्य वशिष्ठ भवनमो जाई ॥ सब विद्या शीखें युग भाई ॥ चतुर्व्वेद आदिक नृप नीति ॥ शीखें धनुर्वेद बरुशीती ॥ ६७५ ॥ वसूरागदिनमो युग भाई ॥ शिक्षण कीन्ह सर्व सुखदाई ॥ जनक निकट निजगुण

दिखलाये ॥ गुरुको दक्षिणा देन कहाये ॥ ९७६॥ हो प्रसन्न तत्काल नरेशा ॥ सुत युगकी सुन्दर करि वेशा ॥ वस्त्र आभरण बहुत प्रकारू ॥ अश्वकरी गाभी रथ चारू ॥ ९७७ ॥ पात्र मित्र सबको बुलवाई ॥ चले साथ लै करि युग भाई ॥ पहुंच गुरु सन्मनमो आये ॥ करि प्रणाम दीना हरषाये ॥ ९७८ ॥

॥ अमला छन्द ॥

धनको सब लै मुनि राज तबै हरिको बहु आशिर्वाद कराये ॥ करको पुन जोड़ भये युग भ्रात कहीं कथाको तब शोध सकाये ॥ हंसिके गुरुदेव कहैं प्रभु को भगती तब कोटन मैधन पाये ॥ शिरवाहि गुरूपद सारसमो कविसिंह लगा निज भाष शुनाये ॥ ९७९ ॥

अथ श्रीराम लक्ष्मणजीका बन क्रीड़ा।

॥ अमला छन्द ॥

गुरुकी पदमो शिरनाय महीपसमानिकहोय विदा द्रुत आये ॥ जननी गणकी पदमो युग भ्रात धरैं

अपनो शिरको हरषाये ॥ सबमात भये सुतको गणको तब भौम शिवा नित श्रेय कराये ॥ तब भूप समूह महीभुजको गृह भीतर प्राशन हेतु बुलाये ॥ ६८० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शिष्टाचार करें रघुराई ॥ आसन पर सबको तोष्ठाई ॥ मेवादिक सन्मुख रखिदीना ॥ प्राशी प्राशित प्राशन कीना ॥६८१॥ कान आचमन अति हरषाये ॥ विदाहोय निज सदन सिधाये ॥ लक्ष्मणसे रघुनाथ अलावें ॥ पद्य अस्त्रको रक्षाकावें ॥ ६८२ ॥ शुन अवरज मनमो मुशकाई ॥ चले चापशरपाणि उठाई ॥ पहुंचे काननमो जब आये ॥ केहरि एण भाग लखि आये ॥ ६८३ ॥ लखि मारीचयातु भय पायो ॥ छोड़ अवधि मिथिलापुर आयो ॥ सूर्य्य मरीचि खाय लघुभाई ॥ तुराड निरस करि तीष्ठ जाई ॥६८४॥ पश्य आस्य रघुपति घबड़ाये ॥ भाषें अवरजको समुझाये ॥ अल्प परिश्रमते दुख पावें ॥ क्यों करि अस्वपकोगण घावें ॥ ६८५ ॥ कष्ट अमरगणको कस जाये ॥ शुन लक्ष्मण करजोड़ अलाये ॥ मै सेवक क्या करण शकावें ॥ तव प्रसाद चुनि चुनि खलघावें ॥ ६८६ ॥

॥ अमला छन्द ॥

शुन वाक सुधारघुवीर मधू द्रुत ला करिके

तब दीन खिलाये ॥ सब दूर भये तिनकी दुख देख सुरेश भयो बिधिको बुलवाये ॥ इम लोगनकी हित कारण नाथ रहैं बनमो घरबार तजाये ॥ काछु पीयुष देहु ; तिन्हे छकशा जलधूपसहैं दुखको नहिं पाये ॥ ९८७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन ब्रह्मा बोले हरषाये ॥ दीजे अमृत तुर्थ खिलाय ॥ तब अश्विन पीयुष लैआवें ॥ सरकि तट फल मध्य रखावें ॥ ९८८ ॥ पश्य प्रभो मनमो हरषाये ॥ लै अवरज सरकि तट आये ॥ सुधा सहित फलको पख भाई ॥ करि भक्षण बोष्ठे हरषाई ॥९८९॥ कलरव पक्षी सबै कराये ॥ शोभा सारसमे सरपाये ॥ भ्रमर गुञ्ज युग ओर सिधावें ॥ तिनको लखि राघव हरषावें ॥ ९९० ॥ सरतट शयन करें पख भाई ॥ दिनकर पश्चिम ओर सिधाई ॥ मात पिता गृहको घबड़ाये ॥ कौन हरण सुत आय कराये ॥ ९९१ ॥ लौप्त तुल्य गृह गृहमो जाई ॥ तत्व करैं रो रो करि माई ॥ नगर मध्य भूमीश्वर आये ॥ करि क्रन्दन पूछें घबड़ाये ॥ ९९२ ॥ कहीं पुत्र देखे मम जाते ॥ शुन शुन अति पुरजन घबड़ाते ॥ हा हा कार करैं पुरवासी ॥ सो मुझसे बर्णन नहिं जासी ॥ ९९३ ॥

॥ कमला छन्द ॥

रघुनाथ पयान करें बनसे पुर भीतरमो पहुंचे अब आये ॥ पुरलोग खुशी तब होत भये जस प्राण धरें मछली जल पाये ॥ अरु मात पितांकस होत खुशी तिनकी उपमा अति खोज थकाये ॥ तब मौन कह्यो मुखको कवि सिंह महा मनमो अपने घरमाथे ॥ ९९४ ॥

अथ श्रीराजा जनकजीका धनुस भञ्जन पन ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

आनन्द सिन्धु रघुपति भये अरु मात हरषाय ॥ व्याह योग श्रीजानकी मिथिलामो होजाय ॥ मिथिलामो होजाय देखसब लेख डराये ॥ अमरावतिमें सभ्य अमरगण मन्त्र कराये ॥ श्रीविवाहकी चौस जनक यदि दान करावें ॥ सृष्टिनाश हो जाय ब्रह्म कमला नहिं पावें ॥ ९९५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुन ब्रह्मा बोलें मुसकाई ॥ अब तिनका क्या करें उपाई ॥ पानिजोड़ सुरपति बतलावें ॥ सुत-

पाणिको हाल जनावें ॥ ९९६ ॥ तिनसे सुन्दर युक्ति करायें ॥ सीतादेवी देहु रुआये ॥ शुनसह अतिशय हरषाई ॥ लैसुरगण प्रस्थान कराई ॥ ९९७ ॥ पहुंचे कहुसदनमो जाये ॥ मिलि परस्पर अति हरषाये ॥ दै आसन हरने तीष्ठाये ॥ यथा शक्ति सम्मान कराये ॥ ९९८ ॥ तब पद्मासन हाल जनाई ॥ जनक सुता लक्ष्मी कहिलाई ॥ अन्द सम्म्रोओ हो जावें ॥ यद्यपि भूभृतदान करावें ॥ ९९९ ॥ तब क्या हो सङ्कट अति भारी ॥ शुनत युक्ति कीना त्रिपुरारी ॥ निज सेवक द्विज राम बुलाये ॥ तिनको दै कार्म्मुक समुझाये ॥ १००० ॥ मिथिलेश्वरको कहो बुझाई ॥ तोड़े जवन चाप यह आई ॥ तिनको तनया दान करावें ॥ और कोय सीता नहि पावें ॥ १००१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

ऐसा सत्य करायके युक्ति साथ सुख आय ॥ निर्ज्जरगणके चित्तका दीजै भ्रान्ति नशाय ॥ दीजै भ्रान्ति नशाय शुनत छबो कुलमारी ॥ करि प्रणाम प्रस्थान कीन कार्म्मुक लै भारी ॥ जनक सभामो जाय भूपको दर्शन दीना ॥ करिके दण्ड प्रणाम जनक आदर बहु कीना ॥ १००२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

टेकरि आशीर्व्वाद चलाये ॥ सीतादान लेनमे आये ॥ दुहिता दान करो ततकाला ॥ सुनत वचन भाखें भूपाला ॥ १००३ ॥ पाणीग्रहण योग जब होई ॥ दान करौं तुमको तब सोई ॥ तनया अपोगण्ड मुनि राये ॥ क्यो करि अबही दान कराये ॥ १०४ ॥ सुनत वचन भृगु पति बतलावें ॥ तबते मे तप करि पुन आवें ॥ देहु वचन मुझको नरनाथा ॥ करौ न व्याह औरकी साथा ॥१००५॥ सुन नरेन्द्र करजोड़ चलावें यद्यपि तव दर्शन नहि पावें ॥ तव क्या करौं सुता मुनि राये ॥ कछु निदेशयाका दै आये ॥ १००६ ॥ सुनत मृदुल वाणी भृगु राई ॥ दै शिव चाप भये समुझाई ॥ जो पिनाक तोड़ै यह आये ॥ तिनको सिया देहु हरषाये ॥१००७॥ अस प्रण करौ त्वरित नर नाथं ॥ भाषै भूप जोड़ निज हाथं ॥ जो मुझको प्रभु भाष सुनाये ॥ सो मे सत्य कीन हरषाये ॥ १००८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन मिथिलेश्वरकी वचन परशुराम हरषाय ॥ जनक निलयकी मध्यमो कार्म्मुक दीन रखाय ॥ कार्म्मुक दीन रखाय हर्ष प्रस्थान कराये ॥ शङ्करको करजोड़ हाल सब भाष सुनाये ॥ भये खाकमा सिंह

सुनत सुरगण हरषावैं ॥ करि प्रणाम सब शिष्य भोमको भवन सिधावैं ॥ १००९ ॥

अथ राजागणका धनुस भञ्जनको अपारक ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

चाप भयङ्कर पश्यकी मिथलेश्वर भय पात ॥ दशयोजन चौड़ा भयो लम्बा सत्तर गात ॥ लम्बा सत्तरगात कौन तोड़ै गा आये ॥ पण कठोर मैं कीन बोल कश्मल हो जाये ॥ चेत पाय नर नाथ भये क्रन्दन करि भारी ॥ क्यों करि कन्या दान करौं पणको निज टारी ॥ १०१० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

खबर भूप सब देश पठाये ॥ जो पिनाक तोड़ै यह आये ॥ ताको सीता दान करावैं ॥ सुन सुन भूप सर्व्व चलि आवै ॥ १०११ ॥ जो कवि तिनका नाम लिखावैं ॥ भणत भणत गणपति थकि जावैं ॥ उदय अस्त लौ जबन रहाये ॥ चन्द्र भूमि

सब ही करि आये ॥ १०१२ ॥ देखें भीम चापको आई ॥ वासपाय प्रस्थान कराई ॥ और भूप मारगमो आवें ॥ तिनसे पूछ हाल घबड़ावें ॥ १०१३ ॥ कितने अबल माव भग आये ॥ कितने चाप देखने आये ॥ पहुंचे लङ्केश्वर तब आई ॥ भयो सर्व्व को दर्प कराई ॥ १०१४ ॥ कार्म्मुक तुच्छ पश्य भय पावैं ॥ मे मन्दर कैलाश उठावें ॥ भयो सर्व्वभूभृत भय पाई ॥ चाप सकों त्रयलोक उठाई ॥ १०१५ ॥ रावन छार गिरि पाखि बताये ॥ शुन रावण मनमो हरषाये ॥ देख्यो चाप निकट जब आई ॥ बल बुद्धि तब सर्व्व हराई ॥ १०१६ ॥ जस घणणणणण शब्द करारो ॥ गर्ज्जें बारिद गिरे नबारो ॥ तस दश गर्द्दन गर्ज्ज थमायं ॥ धनुसरोमनहिं टारसकायं ॥ १०१७ ॥ उचक उचक बहु जोर कराई ॥ गिराउलट मुखकि बल आई ॥ ताकी छवि कविने लखि पायें ॥ जस तरणो पख चरण धराये ॥ १०१८ ॥ गिरे उलट निज गुच्छ फटाई ॥ तस रावण मुख शीर्ष खपाई ॥ चला रुधिर लज्जा बहु पाये ॥ चढस्यन्दन प्रस्थान कराये ॥१०१९॥ जब अदृश्य उतसे हो जावैं ॥ तब विद्रुप सब भूप करावैं ॥ इन्द्रादिक सुरगण हरषाये ॥ नृत्य करैं ईश्वर गुण गाये ॥ १०२० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

दशमस्तकको भागते मिथिलेश्वर घबड़ाय॥ अबको ऐसा और है जो तोड़े यह चाय॥ जो तोड़े यह चाय अभ्रते अमर चलावें॥ क्यों भुगता अबनाथ धर्म तबनाथ बचावें॥ भये खान्नतासिंह व्रज्ज गुरुदेव मनाये॥ अवध नाथ मिथिलेश मग्न हो राज कराये ॥ १०२१ ॥

अथ सपुत्र महाराज दशरथजीका श्रीगङ्गास्नान एवं श्रीरामचन्द्रजीसे गूहक चण्डालका मिलन।

॥ अमला छन्द ॥

अज गातज वेद लिये निज गातज राज करैं मन मोहरआये॥ दिनकी पतिको यह सोच लगे तिह कारण भूप बिचार कराये॥ अवगाहन तीरथ राज विषे करिके कछु दान करैं हम जाये॥ जिसमों सुत मोर रहैं सुखसे कछु रोग लगे तिनको नहि आये ॥ १०२२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

अस विचार मङ्गलै चारी ॥ अस्त्र करी गाभी धन भारी ॥ चलि भूप मनमो हरषाये ॥ सङ्ग बलक तिनकी सब धाये ॥ १०२३ ॥ कछुक दूर पहुचे जब जाई ॥ दर्शन मुनि नारद कोपाई ॥ पुत्र सहित दशरथ हरषाये ॥ मुनिवरकी पदमो शिरनाये ॥ १०२४ ॥ भूसुर आशीर्वाद कराई ॥ पूछें भूभुजसे सुखकाई ॥ कहाँ चल्य सुतको ले आवैं ॥ तब दशरथ करजोड़ बतावैं ॥ १०२५ ॥ सुत मङ्गल कारण मुनि राई ॥ मज्जन करें भीष्मसुजाई ॥ शुनत वचन नारद बतलावैं ॥ राम चरण दर्शन जो पावैं ॥ १०२६ ॥ सो कथा करै नदी सुर जाई ॥ तुमको वोध कछुक नहि पाई ॥ जिनकी गङ्गा भूप कहावैं ॥ सो प्रभुके पद जन्म धरावैं ॥ १०२७ ॥ गङ्गा राम रामहैं स्नाना ॥ पुत्र स्नान कीना भगवाना ॥ अस दै मुनि उपदेश सिधाये ॥ तब दशरथ मनमो भय पाये ॥ १०२८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पाणिजोड़ रघुनाथको करैं नुती नरनाथ ॥ मै निर्बोधन जानते ताते ले निज साथ ॥ ताते ले निज साथ जान करबेको धाये ॥ करो भवन प्रस्थान क्षमा ममदोष कराये ॥ शुनत वचन रघुवीर भखे पितु

को थिरनाई ॥ मैं गातन तब तात सुनी उपदास कराई ॥ १०२९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुर दुर्लभ यह गङ्गा माई ॥ जवन करें अवगाहन जाई ॥ अघ सब जन्म जन्मको घाये ॥ चतुर्वर्ग फलको सो पाये ॥ १०३० ॥ असभय प्रभु माया विस्तारी ॥ ताते बुद्धि भूपको टारो ॥ मायावश दशरथ हो आवें ॥ पुत्र पुत्र भयागोद उठावें ॥ १०३१ ॥ गङ्गास्नान हेतु पुन धाये ॥ खबर पाय गुहक तब आये ॥ निज बलको युग ओर पठाई ॥ घेरा अवधि कनाको आई ॥१०३२॥ भये भूपको गुहक आये ॥ और कोय मारग नहि पाये ॥ मम सज्जन निज वाट बनाई ॥ करो स्नान भुनता नित जाई ॥ १०३३ ॥ खेत सैन्य तव देत नशाये ॥ ताते कष्ट प्रजा मम पाये ॥ और मार्ग है आप सिधावें ॥ यह मारग जाने नहि पावें ॥१०३४॥ सुन दशरथ बोलें समुझाई ॥ और राह भूगो दुख पाई ॥ ताते तव मन्दिर है जावें ॥ तब गुहक पुन भाष सुनावें ॥ १०३५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

जो भूभुज मम राज है आप करें प्रस्थान ॥ तो निज सुत श्रीरामको मम सम्मुख द्रुत आन ॥ मम

सन्मुख दूत पाम सुनत नरदेव डराये ॥ युग चङ्ग को त्वरित यानकी मध्य लुकाये ॥ मनमो कोना भूप राहु शशिपे अस आडू ॥ ग्रहण हेतु तस पुत्र दुष्ट माना सम चाडू ॥ १०३६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

लै कार्मुक शर दशरथ धाये ॥ गूहक तेरथ घोर कराये ॥ कोयमकाको मारशकावैं ॥ प्रभु प्रेरित सुनता घवड़ावैं ॥ १०३७ ॥ मनमो नृप अस सोच्य कराये ॥ जो सुभको यह मारहटाये ॥ तौ मम अयश त्रिभुवन गावै ॥ ताको बध पौरुश क्या पावैं ॥१०३८॥ अस बिचार पुन कौन उपाई ॥ बाण पाशु-पत दीन चलाई ॥ ताते ताको बांध गिराये ॥ भागी कतय सर्व भय पाये ॥ १०३९ ॥ भूप धर्यो गूहकको जाई ॥ बांध भुजा रथ पर बैठाई ॥ तब गूहक मनमो कलपाये ॥ नारायणको याद कराये ॥ १०४० ॥ तब दर्शन दो नाथ करावैं । तिनका भवबन्धन कटि जावैं ॥ मै फल प्रभो बिलोम धराई ॥ तब कारण बन्धन यह पाई ॥ १०४१ ॥ शुन रघुनन्दन अति कलपाये ॥ मिले कूदरथसे दूत धाये ॥ गूहक पश्य नाथअसमावें ॥ तस बन्धन तिनको काट आवैं ॥ १०४२ ॥